# श्री सर्वेश्वर

धार्मिक मासिक-पत्र

# नि वे द न

'लोकवत्तु लीला कैवल्यम्' के न्याय से निगमागम-अगोचर निगूढ़ रस-ब्रह्म का ब्रजधाम में अवतरण तो हुआ, परन्तु उसे भली प्रकार देखा-परखा केवल ब्रज की भोली ग्रामीण अबलाओं ने; स्वयं देवराज इन्द्र एवं जगत्-पिता ब्रह्माजी तक के लिए तो वह अज्ञेय ही बना रहा। ऐसे बाँके ठाकुर की बाँकी लीलाएँ कहने सुनने में हम चक्षुहीनों के लिए यदि टेढ़ी-खीर बन जायें तो आश्चर्य ही क्या है ?

फिर भी संतवाणी का श्रद्धा-युक्त अनुशीलन एक ऐसा अमोघ उपाय है जिसके सहारे अकथ-कथा भी न केवल कहने-सुनने की, अपितु निरखने-परखने की वस्तु बन जाती है। आचार्य श्री गोविन्दशरणजी की वाणी भी उन्हीं आर्षवाणियों में है जिन्हें सुधीजनों ने वेद की संज्ञा दी है—'हमारे ब्रजबानी ही वेद।'

रसिक प्रवर श्री नागरीदासजी ने तो—

**नागरिया अच्छर भई, चली प्रेम तरवार।**
**नकटे नकटे ना कटे, कटे कटे रिझवार॥**
**अच्छर धुरकी पालकी, आई रसिकन लैन।**
**वाह वाह करि रहि गये, चढ़े सु पहुँचे ऐन॥**

कह कर इन संतवाणियों का मर्म उद्घाटित किया है।

प्रस्तुत वाणी लघुकाय होती हुई भी ब्रज के रस-रहस्यों की अक्षय निधि है ऐसा हमारा विश्वास है। इसके अनुशीलन के उपरान्त आप भी इस बात से असहमत न होंगे। तथापि कुछ ग्राहक बन्धुओं को इसके विलम्बित प्रकाशन पर खेद और आश्चर्य होना भी स्वाभाविक है। वस्तुतः हमारा प्रयास फरवरी के अन्त में ही आपके कर-कमलों तक इसे पहुँचाने का था परन्तु 'अपने मन कछु और है कर्ता के कछु और'। आपको विदित ही है कि श्री श्रीजी महाराज ( जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य ) की सपरिकर ब्रजयात्रा भी ठीक इसी अवसर पर हो रही है। इतने मधुर लोभनीय सुअवसर का लाभ कौन नहीं लेना चाहता; फिर भला श्रीसर्वेश्वर के सम्पादन-प्रकाशन विभाग को इससे कैसे वंचित रक्खा जाता। परिणाम यह हुआ कि इस चिर प्रतीक्षित ग्रन्थ-रत्न को एक मास विलम्ब से हम आपकी सेवा में रख पा रहे हैं। इसे कितने परिश्रम से संचित और संपादित किया गया है यह सुनाने-समझाने में हम आपका अधिक समय न लेकर इतना ही निवेदित करना पर्याप्त समझते हैं कि वस्तु की उपादेयता तथा महत्ता आकार से नहीं गुणों से आँकी जाती है। अतः फरवरी तथा मार्च के अङ्कों को भी इसमें सम्मिलित समझ कर ( न मिलने की स्थिति में ) अब अङ्क ४ के लिए ही लिखा-पढ़ी करनी चाहिए। अङ्क १,२,३ विशेषांक में ही संनिविष्ट हैं।

—व्यवस्थापक

शोधपूर्ण ऐतिहासिक-धार्मिक मासिक पत्र

# श्रीसर्वेश्वर

का

*विशेषांक*

**श्रीगोविन्दशरण देवाचार्यजी**

की

# वाणी

**श्रीधाम वृन्दावन**

वर्ष १८ अङ्क १,२,३

प्रकाशक
अधिकारी – वियोगी विश्वेश्वर
श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
सलेमाबाद

★

प्रधान सम्पादक
व्रजवल्लभ शरण वेदान्ताचार्य, पंचतीर्थ

★

सम्पादक
विहारीदास 'वृन्दावनी'
गोविन्दशरण शास्त्री

★

कार्य-संवाहक
अधिकारी – नरहरिदासजी
श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
सलेमाबाद

★

प्रकाशन तिथि
होलिकोत्सव
सं० २०२६, मार्च १९७०

★

मुद्रक
बनवारीलाल शर्मा
श्रीसर्वेश्वर प्रेस, वृन्दावन (मथुरा)

# पद-सूची


| स्फुट-पदावली | पृष्ठ सं० | स्फुट-पदावली | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|---|
| वन्दौं श्रीगुरु चरण० | १ | भजिये भगवंता हो० | ९ |
| नमो नमो जै-जै० | | श्रीराधासर्वेस्वरजीकी० | |
| नमो कृष्ण जै० | | मदनगढ़ लैन हित० | १० |
| नमो नमो जै (श्री) श्याम० | २ | सुरतरु सेऊँ श्रीवृन्दाबन० | |
| नमो जयति श्रीभट० | | चिद्घन वृन्दावन० | |
| नमो परसधर जै० | | निरखत नैंन न कबहूँ० | ११ |
| नमो नमो व्रजराज कुमार० | | आरति नवल किसोर० | |
| सोभित सरस स्याम सुन्दर० | ३ | लाड़िली लाड़ गहेली० | |
| सुमिरि कृष्णचन्द्र चारु चरन० | | हरि सो हितु न० | |
| करहु नाथ सर्वेश्वर दीन० | | जग में तेई जन० | १२ |
| अरे भाई गोबिंदै० | ४ | पन करि बस हो० | |
| आवरे मनमोहन० | | कमल नैंन सुनि बिनती० | |
| अरसीले अरुन नैंन० | | भरोसो माधौ को मोहि० | १३ |
| मंगल आरती० | | जन अनन्य जग इहि० | |
| प्रात समैं उठि श्रीभट० | ५ | महा कठिन रसिकन० | |
| कहा सोयो उठि जागि० | | धन्य हरि भगति तिहूँ० | |
| दुहूँन की हिलगनि० | | भजिये गोबिंद पद० | १४ |
| ललन के लोयन० | | सांवरे हौं वारी० | |
| माधौ निस जागे रागे० | | नटवर वपु धन ते० | |
| माधौजी तुम साहिब० | ६ | कन्हैया बट पार ठाढ़ो० | १५ |
| माधौजी सदा दीन० | | रूप उजारो प्यारो बन० | |
| सुमिरन कीजै हरि० | | श्रीमुखकमल बचन यौं० | |
| सुमिरन कीजै मन० | ७ | हरि की लीला सब० | १६ |
| हरि मोहि किहि गुन० | | अरे मनवा हरि भजिये० | |
| सांवरे के नैंन० | | आवत कंवलनैंन गिरधर० | |
| बाजी है बन बंसी० | | मंगल बिधायिनी सुख० | १७ |
| बंसी बहुरि बजाय रे० | ८ | कहा कहूँ प्रभु तोरी० | |
| कुल रूप उजारी० | | रूप उजारो प्यारो बन० | |
| नवरंगी प्यारे० | | मनुवाँ मेरे करि माधौ० | |
| (दोऊ) प्रीतम परम० | | हरि हरि लागी रहत० | १८ |
| मोहन रूप लुभानी ये० | | क्यौं हरि प्रीतम बिसरायौ० | |
| रामा रे मेघस्यामा० | ९ | राम न बिसारो रे० | |

| स्फुट-पदावली | पृष्ठ सं० | स्फुट-पदावली | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|---|
| बृजराज मो पै कृपा० | | देखो हरि विमुखन की० | २८ |
| नाम हरि अमृत० | १९ | हरि बिन कौन सहाइ० | २९ |
| मिथिला आय जनकपुर० | | हरि बिन कौन सु० | |
| हरि के साँची प्रेम० | | जग में हरि के जन० | |
| राधे जू मेरी जनम० | २० | मेरे प्रान प्यारे राधामाधव० | ३० |
| मेरे हरि नाम परम० | | नीके बिहारी-बिहारिनि० | |
| जाकें हरिधन सो० | २१ | हेली हे मोहन परम० | |
| हरि हरि भजिये प्यारे० | | मेरे पर मीत मोहन० | ३१ |
| गाफिल क्यों रे भाई० | | झूठे जगत के झगरे० | |
| एरी हौं तो या छबि० | | अहो वृषभानुजे किसोरी० | ३२ |
| बनी है नीकी राधा० | | कभी तो मिलना करौ रे० | |
| आज मेरे आये री० | २२ | रघुकुल तिलक प्रगट भये० | |
| मतवारो क्यौं भयो० | | जहां स्यामसुन्दर निकुंज० | |
| सतसंग बिमल जल० | | प्यारो जी नन्दलाल वारी० | ३३ |
| माधौ जी यह प्रसाद० | | नर तन रतन पाय० | |
| रसना हरि हरि भजि० | २३ | हरि भजि जनम सुफल० | |
| तुला तुल्यौ नाम साधन० | | हम तो सरन हैं राधावर० | |
| भूल परी मैं आज री० | | ज्यों सींचे तरु-मूल स्कंध० | ३४ |
| मन हरि की सरन० | | प्यारी तेरे रूप की सुनि० | |
| श्रीराधेकृष्णा गोविन्द० | | पिय संग सोहै अलबेली हे० | |
| बंदौ श्रीगुरु चरन० | २४ | लखो री मनमोहन छैल० | ३५ |
| यह कलि है दोसन कौ० | | राज आंखड़ल्या घर घालै० | |
| मन विहंग भजि कृष्ण० | | मोही री हौं तो सांवरे० | |
| श्रीकृष्ण चरन भज मंगल० | २५ | हरि तुम मेरे नाथ० | |
| श्रीवृषभान सुता पद बंदौं० | | माधौ जी तुम जन | ३६ |
| हो जो हरि मोने काहे० | | **उत्सव-पदावली बसंत-उत्सव :-** | |
| पौढ़े राधामाधव रंगमहल० | | वृन्दावन बसंत आयो० | ३७ |
| पौढ़ें री राधाधव सुख० | २६ | खेलत बसंत हरिव्यासदेव० | |
| नींदभरे लोयन अति० | | बसंतखेलत राधामाधव० | ३८ |
| बनी हैं रुचिर बिहारि-बिहारिनि० | २७ | बसंत रंगोली गलिन में० | |
| भजि मन राधिकावर० | | जै श्रीनिवादिति आनन्द मूल० | ३९ |
| हमारे साहिबनी वन० | | जै जै कृष्णचन्द करुनानिधान० | ४० |
| गोबिन्द के गुन गाय रे० | | मंगल निधान भजि कृष्ण० | |
| हरि अमृत फल चाखि री० | २८ | आजु बनराज किये नवल० | ४१ |
| मानुष तन विनु पुन्य० | | **होरी-उत्सव०** | |
| मनुवां हरि हरि हरि० | | होरी खेलें गोकुलचन्द० | ४२ |

| होरी-उत्सव | पृष्ठ सं० |
|---|---|
| बनवारी छबि पर० | ४३ |
| सांवरी नवरंगी री० | |
| खेल राधा मोहन संग० | ४४ |
| खेलैं आज होरी मोहना० | |
| होरी हो खेलन जाणों० | |
| वृजराज कुंवर रंगभीनें० | |
| नवल केलें रंगमहल० | ४५ |
| सखी नीके बने ये० | ४६ |
| रंगीली जोरी खेलं० | ४७ |
| जिनि डारौ आंखनि० | |
| रंग होरी खेलैं सांवरो० | ४८ |
| सुघर खिलार आज सखि० | |
| अरी यह काको ढोटा० | |
| आज सुहाई री रजनी० | ४९ |
| खेलें फागु लाल बाल० | |
| आजु होरी खेलं० | |
| आज खेलें होरी नव० | |
| आये जू होरी खेलि० | |
| बने रँगभीने बागे० | ५० |
| रंग महल रँग होरी० | |
| रहो जी होरी खेल न० | |
| रस मीठी तान गावै री० | |
| रंग महल मध्य रंग भरे० | ५१ |
| प्यारे आज आवें री० | |
| रितु वसंत सुख खेलिये० | |
| सूधे क्यों न खेलौ होरी० | ५२ |
| आजु होरी तो आई है० | ५३ |
| खेलत बल मनमोहना० | |
| **होरी दोल-उत्सव :-** | |
| रंगीले हिंडारें रंगभरी० | ५४ |
| **फूल दोल-उत्सव :-** | |
| लील कोयली के फूल० | ५४ |
| फूल्यौ सखी वृन्दावन० | ५५ |
| फूली फुलवारी मांझ० | |
| **श्रीराम जन्म बधाई-उत्सव :-** | |
| बधाई आज नृप दसरथ० | ५५ |

| श्रीराम जन्म बधाई-उत्सव | पृष्ठ सं० |
|---|---|
| आज बधाई बाजै माई० | ५६ |
| राम जनम सुनि अपनें पति सौं० | ५७ |
| **चंदन सिंगारोत्सव :-** | |
| दम्पति कुंजमहल में बैठे० | |
| सीतल सदन मदन मोहन० | |
| **श्रीवामन जन्मोत्सव :-** | |
| जै जै वावन तन० | |
| आज बधाई री हेली० | ५८ |
| आज सखी सुरपुर-मोद० | ५९ |
| **नरसिंह जन्मोत्सव बधाई :-** | |
| नरहरि सब्द अंड भयो० | ६० |
| प्रगटे नरहरि जन सुखदायक० | |
| **रथयात्रा-उत्सव :-** | |
| रथ सोभा मुख कहत न० | ६० |
| रथ चढ़ि चले भले दोऊ० | ६१ |
| रथ चढ़ि आवत० | |
| देखो माई रथ बैठे० | ६२ |
| देखो माई हरि जू के० | |
| **पावस ऋतु वर्णन :-** | |
| ललित लतानि तर ठाढ़े हैं० | |
| उज्जल महल पर बनि० | ६३ |
| दरस बिन कैसें भरें दिन० | |
| नान्हीं नान्हीं हो बूंदनि बरसैं० | |
| स्यामैं देखि नाचें मुदित० | ६४ |
| चहुं दिस तें घनघोर आई० | |
| **हिंडोरा-उत्सव :-** | |
| हिंडोरें आली झूलत० | |
| रंगीली बाल झूलत रंग० | ६५ |
| रतन हिंडोरना हो सखीजन० | |
| अहो रितु पावस लगत० | |
| रँगीले हिंडोरें झूलें रंगभरी | ६६ |
| हौं बलि बलि गई री या० | |
| श्रीवृषभान दुलारी झूलत० | |
| हिंडोरें पिय प्यारी झूलें० | |
| अरी देखि जोरी कैसी नीकी० | ६७ |
| झूलत दोऊ रंग हिंडोरें० | |

| | पृष्ठ सं० |
|---|---|
| **हिंडोरा–उत्सव०** | |
| नवरंग नागरी-नागर झूलत० | |
| सब गुन आगर हो नटनागर० | ६८ |
| सखी बन्यौ नीकौ रंग० | |
| रसिकानन्द रसिकनी झूलैं० | |
| झूलत जनकलली रघुनन्दन० | ६९ |
| देखहु जनकलली के० | |
| झूलैं गिरधारी छबि० | |
| **पवित्रा–उत्सव :–** | |
| आज पवित्रा दिन मन० | |
| पवित्रा रेसम बने कनक० | ७० |
| **रक्षाबंधन–उत्सव :–** | |
| आज सखि उत्सव जीवनि० | |
| आज सुख बरसत पूर्यौ० | |
| **श्रीकृष्ण–जन्मोत्सव :–** | |
| आज बाजत बधाई ब्रजराज० | ७१ |
| आज नन्दसदन गोपन० | |
| घर नन्द महर कें मंगलचार० | ७२ |
| रावल माधव के गुन० | |
| अहो ब्रज घर-घर मंगलचार० | ७३ |
| भवन बधाई नन्दराय कें० | |
| अहो आज बृज की सोभा० | ७४ |
| बधाई आज नन्दसदन में० | |
| आयो एक जोगिया री० | ७५ |
| बजत बधाई ब्रजपति जू कें० | |
| आज बृजपति-सदन मदन० | |
| आज बधाई बजत सुहाई० | ७६ |
| सजनी श्रीब्रजपति आंगन में० | |
| बजत बधाई ब्रजपति जू कें० | |
| रजनी सुहाई माई आज की० | |
| सोहिलो आज नन्दसदन में० | ७७ |
| मंगलसर ब्रजपति जू के० | |
| बजत बधाई नन्द सदन में० | ७८ |
| उदै भयो परमानँद नंद० | ७९ |
| नँदरानी सुत जायो महरि० | |
| बिटिया ल्यावो मोर-चकोरा० | |
| श्रीब्रजराज घरनि लै बधायौ० | ८० |

| | पृष्ठ सं० |
|---|---|
| **श्रीराधाजन्मोत्सव–बधाई :–** | |
| अरुन उदै भानभवन प्रगट० | ८१ |
| प्रगटी हैं कुँवरि लड़ैती० | |
| रंगीली बनि आई आज० | ८२ |
| सहेली आज सोहिलो सुहायौ० | |
| भान भवन बाजै रंग बधाई० | ८३ |
| बृषभान-भवन आज सोहिलो० | |
| आजु बधाई नँद समध्यानैं० | ८४ |
| प्रगटी साहिबनी श्रीराधा साडी० | |
| रावल बजत बधाई गावैं० | |
| भानभवन द्वार रंग बाजै री० | ८५ |
| रावल रंगीली भानुघर बधाई० | |
| हेली आज सुभ दिन सुभ घरी० | |
| आज बधावो री सजनी० | ८६ |
| **शरद–उत्सव–:** | |
| नृत्तत रासमण्डल बाँहाँ जोरी० | ८८ |
| आज दोऊ राजत रंग भरे० | |
| नवल मण्डल किये दोऊ० | |
| रासमण्डल रच्यो रसिक हरि० | ८९ |
| सखी ऐसो रूप न देख्यो सुन्यो० | |
| कैसे नीके रास रसिक दोउ० | ९० |
| नित्तत नवल नँदनन्दन कुँवरि० | |
| सरद निकाई हो राका रच्यो० | ९१ |
| श्रीराधिका छबि सखी आज० | |
| रास में रसिक आली रंगभीनें० | ९२ |
| **साँझी–उत्सव :–** | |
| बन आयो नहि सखी सांवरो० | |
| कुंवरि बृषभान की सोहै० | |
| साँझी पूजें सब सुकुँवारी० | ९३ |
| **दिवारी–उत्सव :–** | |
| आज सखि मंगल दिवस० | |
| **गोवर्धन–उत्सव :–** | |
| हरि सौं टेरि कहत ब्रजबारी० | ९३ |
| **दान लीला :–** | |
| ललन तुम दानी नये भये० | ९४ |
| हमारी दधि दान दै री० | |
| सखो री मनमोहन छैल० | |

पृष्ठ सं०

चड़कुल नवल वधूटी हो०
मुनि दीठ गुमानी तू कव० ९५
व्रजराज दुलारे हो मनमोहन०

**विविध**

सर्प पवित्र नित पवन ९६
गंगा औरऊ नदी नीर०
कोऊ कहै अमृत सिन्धु०
नहीं बड़े कुल जन्म०
अथवा सुर हरि भज्यौ० ९७
गंगा पाप जु हरै०
धन को भ्रम मन जानि०
गुरुदेव कृपाबल पसु हुतौ०
पूरव जन्म किधौं० ९८
घर की धनी तौ०
राजै पिकबैनी मृग नैनी०
आनन की ओप अति० ९९
ककरेजी सारी तन सोहै०

पृष्ठ सं०

सरस पलास फूल कुसुम०
नृत्यत सुघंग दोऊ राधिका० १००
जमुन मुकर कूल०
कनक लता सी गोरी०
लछमी लुनाई चन्द० १०१
बोलै मधुमंगल सो हानी०
ऐसी चाल चली जो०
जगे बिबि प्रात चलि० १०२
प्रात काल नन्दलाल०
जुगल टहल सखी०
मंगला को भोग सखी० १०३
चलै स्नान कुञ्ज अब०
रतनजटित–चौकी दुति०
प्रथम फुलेल लै लगायो० १०४
श्रीगुर गोविन्द कृत०
देहीबिन ज्यों०
श्रीगुरु निम्बादित्य धाम छेत्र०
( सरनप्रताप प्रशस्ति )

## प्राक्कथन :—

**नमस्ते श्रियैराधिकायै परायै, नमस्ते नमस्ते मुकुन्द प्रियायै।**
**सदाऽनन्दरूपे प्रसीद स्वमन्तः, प्रकाशैः स्फुरन्ती मुकुन्देन सार्धम् ॥**

निखिल भुवन वंद्या व्रजभूमि श्रीश्यामा श्याम की शाश्वत विहारभूमि है। इसका सर्वजन सुलभ व्यक्त रूप भी, जो अव्यक्त स्वरूप से सर्वथा अभिन्न है कुछ कम चित्ताकर्षक या कम मोहक नहीं है। और यही कारण है कि प्रायः समस्त श्रीकृष्णोपासक आचार्यों एवं रसिक भक्तों ने इसे सर्वविध-समाश्रय के रूप में स्वीकार किया। सुदर्शनावतार भगवान् श्रीनिम्बार्क महामुनीन्द्र श्रीकृष्णोपासना—विशेष कर युगल उपासना के प्रवर्त्तक आचार्यों में सर्व प्रथम हैं। "नान्यागतिः कृष्णपदारविन्दात्" का डिण्डिम घोष आसेतु-हिमाचल मुखरित करने वाले आचार्यश्री की श्रीराधाविषयक मान्यता—

**मुकुन्द स्वयाप्रेम डोरेण बद्धः**

में कितनी स्पष्ट, मार्मिक तथा रस-रहस्य को उद्घाटित करने वाला है।

श्रीनिम्बार्काचार्य से श्रीकेशव काश्मीरी भट्टाचार्य पर्यन्त प्रायः समस्त आचार्यों के ग्रन्थ संस्कृत में होने के कारण जन सामान्य में उनका अपेक्षित प्रचार-प्रसार संभव न हो सका, वे केवल विद्वज्जनों तक ही सीमित रहे आये। सर्व प्रथम श्री श्रीभट्टदेवाचार्य जी ने व्रजवाणी का अनुपम रत्न श्रीयुगलशतक का प्रणयन किया अतः सम्प्रदाय में आपश्री आदि वाणीकार के रूप में प्रख्यात हैं। श्रीयुगल शतक, श्रीहरिव्यास देवाचार्य कृत श्रीमहावाणी, श्रीपरशुरामदेवाचार्य जी, श्रीरूपरसिकदेव जी, श्रीनारायणदेवाचार्य, श्रीलच्छ दासजी आदि की वाणी तथा श्रीवृन्दावन देवाचार्य कृत गीतामृत गंगा आदि अनेकशः व्रजभाषा के वाणीग्रन्थ प्रेमी सदस्यों के कंठ हार बन चुके हैं। उन्हीं की भाँति श्रीगोविन्ददेवाचार्य और श्रीगोविन्दशरण देवाचार्य जी वाणियां उपादेय हैं।

इसी प्रकार यद्यपि श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय के आचार्य सन्त-महन्त और विद्वान भक्तों की हिन्दी, संस्कृत तथा उर्दू, अंग्रेजी और भारतीय बंगला, नेपाली, गुजराती, पंजाबी, राजस्थानी, सिंधी, उड़िया, मलयालम आदि प्रादेशिक भाषाओं में बहुत सी रचनायें हैं यद्यपि उनमें बहुत सी अनुपलब्ध हैं। जो उपलब्ध हैं, उनमें भी बहुत सी अप्रकाशित हैं। जहाँ-तहाँ उनकी पाण्डु-लिपियाँ मिलती हैं। ५० वर्ष पूर्व नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा, जो हिन्दी व्रजभाषा की रचनाओं के नोट लिये गये थे, जिनमें आदि, अन्त, मध्य का कुछ विवरण देकर ग्रन्थ तथा ग्रन्थकार का परिचय सूक्ष्म रूप से दिया गया था, और जिस नगर में जिस व्यक्ति के पास वह पाण्डुलिपि थी, उसका भी परिचय दिया गया था। वे रिपोर्टें प्रकाशित भी हुईं। इधर व्रजसाहित्य-मण्डल मथुरा द्वारा भी इस प्रकार का अनुसंधान कार्य लगभग २० वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था। मथुरा, वृन्दावन, गोवर्धन, दाऊजी, बरसाना, नन्दग्राम आदि व्रज के कई नगरों में उपलब्ध

पाण्डुलिपियों के नोट लिये गये थे। किन्तु उनका कोई विवरण पुस्तक रूप में प्रकाशित नहीं हो सका।

उन विवरणों के माध्यम से आज उन पाण्डुलिपियों को कोई देखना चाहे, तो बहुत सी पाण्डु-लिपियों का उन स्थलों पर दर्शन होना कठिन है। बरसाना-आदि कई नगरों में स्वयं हमने कई बार उन स्थलों पर पहुँचकर, नागरी प्रचारिणी सभा काशी की प्रकाशित रिपोर्टों के आधार पर उन पाण्डु-लिपियों का अन्वेषण किया। गोस्वामी श्रीराधावल्लभजी बरसाना के यहाँ लगभग ६० ग्रन्थियों को खोल-खोलकर उनका एक-एक पन्ना देखा गया, किन्तु "श्रीरूपरसिक जी की रचना" तथा "कृपा कल्पतरु" ग्रन्थ के दर्शन नहीं हो सके। पता चला कि विगत तीस वर्षों में कई व्यक्तियों ने उन पुस्तकों को देखा था। देखने वाले व्यक्ति ५–५ ६–६ घंटे देखते रहते थे। कुछ व्यक्ति उन पुस्तकों में से किसी पुस्तक को ले भी गये हों, ऐसी बातें उन व्यक्तियों ने हम से कहीं।

वास्तव में सर्वत्र ही ऐसा होता रहा है। बड़े-बड़े ग्रन्थागारों से न जाने कितने ही दुर्लभग्रन्थ कहीं के कहीं चले गये। उन पाण्डुलिपियों को उड़ाकर ले जाने वालों के मरने पर, उनके पुत्र-पौत्रों से अन्यान्य व्यक्ति ले गये और वे पाण्डु-लिपियाँ ऐसे स्थलों पर जा पहुँचीं कि बहुत कुछ खोज करने पर भी आज उनके दर्शन होना कठिन हो रहा है। बहुत सी दुर्लभ पाण्डु-लिपियाँ इन्हीं परिस्थितियों में जीर्णशीर्ण होकर नष्ट हो गईं, और बहुत सी पाण्डु-लिपियाँ रद्दी में बिककर नष्ट हो गईं। कितनी ही पाण्डुलिपियों के 'ठोंगे' बन गये, और बहुत सी पाण्डुलिपियों को गला-गलाकर, डूमले आदि—बना लिये गये।

अखिल भारतवर्षीय श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ सलेमाबाद ( किशनगढ़,राजस्थान ) में संस्कृत और हिन्दी भाषा के हस्तलिखित ग्रन्थों का प्रचुर संग्रह था,अब भी है। किन्तु जो आज से सौ वर्ष पूर्व वहाँ थे, उनमें से बहुत से ग्रन्थ आज नहीं मिलते, केवल फटे-टूटे सूचीपत्रों में ही उनके नाम पढ़ने को मिलते हैं।

श्रीवृन्दावनदेवाचार्य जी की गीतामृत-गंगा आचार्यपीठ सलेमाबाद से बाबा श्रीगोकुलदासजी वृन्दावन ले आये थे। श्रीविहारीशरणजी को सलेमाबाद के संग्रहालय में वह पुस्तक न मिलने पर उन्होंने उसे आकाश के तारे के समान दुष्प्राप्य लिख दिया था, वास्तव में वह ठीक ही था। किन्तु बाबा श्रीकेशवदासजी ने वह पुस्तक हमें प्रदान कर दी थी। उसके पश्चात् एक प्रति हमें आदिबद्रीमन्दिर, क्षीरसागर उज्जैन में भी मिल गई, और उसका प्रकाशन भी कराया गया। इसी प्रकार श्रीगोविन्ददेवाचार्य जी की वाणी अन्तर्धान हो गई थी, वह भरतपुर राज्य के किसी जाट के घर में मुनि श्रीकान्तिसागर जी को प्राप्त हुई। उन्होंने यह घोषित कर दिया था, कि श्रीगोविन्द-देवाचार्यजी कृत श्रीहरिगुरु-सुयश भास्कर नामक पुस्तक की भारतवर्ष में एक प्रति है जो मुझे प्राप्त हुई है। किन्तु प्रयत्न करने पर भी मुनि श्रीकान्तिसागर जी वाली उस प्रति के हमें अभी तक दर्शनों का भी सौभाग्य नहीं हुआ। यही स्थिति श्रीगोविन्दशरण-

देवाचार्यजी वाली वाणी की है। सलेमाबाद संग्रहालय की कई दुर्लभ पुस्तकें इधर-उधर होगईं हैं। श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी की वाणी सलेमाबाद निवासी श्रीकैलाशचन्द्र गौड़ के सुपुत्र ने महाराज श्री के समक्ष रखकर उसके प्रकाशन का प्रस्ताव रखा था। उसी के अनुरोध पर श्रीसर्वेश्वर के विशेषांक के रूप में उसे प्रकाशित करवाने का निश्चय किया गया था, किन्तु देवयोग से वह प्रति विशेषांक प्रकाशन के समय प्राप्त नहीं हो सकी। ऐसी स्थिति में पद संग्रहों की प्रतियां एकत्रित की गईं, उनमें श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्य जी की जो जो रचनायें मिलीं, उनका संकलन किया गया। उत्सव-पदावली हमें श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ, सलेमाबाद के पुस्तकालय से प्राप्त हो गई। और वृन्दावन में भी एक प्रति सेठ श्रीगिरधारीलालजी सीतापुर वालों के पुस्तकालय में श्रीनागाजी की कुञ्ज विहारघाट से प्राप्त हो गई। श्रीनिकुञ्ज वृन्दावन के पुस्तकालय में कई प्रतियों में श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी की स्फुट-पदावली मिल गई। विगत २४ दिसम्बर १९६७ ई० को प्रातः साढ़े सात बजे श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी के सम्बन्ध में आल इण्डिया रेडियो, नई दिल्ली से डा० श्रीरूपनारायणजी की वार्ता प्रसारित हुई थी। उससे कुछ कवित्त-सवैया आदि तथा अन्य छन्दों का भी संकेत मिला। श्रीनिम्बार्क-माधुरी में भी कुछ छप्पय, कवित्त आदि प्राप्त हुए। इस प्रकार जहाँतहाँ से जितना संकलन हो सका, उसे एकत्रित कर प्रथमखण्ड के रूप में इस अलभ्य वाणी का प्रकाशन करवाया गया है।

सम्भव है श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्य जी की वाणी का यह बहुत थोड़ा-सा ही अंश हमें मिला हो, डा० श्रीरामप्रसाद शर्मा वाली प्रति में और भी बहुत से पद अवशिष्ट रह गये हों, पर यह उससे मिलान करने पर ही निश्चित हो सकता है। आश्चय नहीं कि श्रीवृन्दावन के ही किसी पुस्तकाल में शोध करने पर इस वाणी की कोई ऐसी अतिरिक्त आचार्य श्री की अन्य रचनायें भी उपलब्ध हो सकें।

श्रीसर्वेश्वर के पाठकों को सूचित कर देने के कारण जितना अंश प्राप्त हो सका, उतना ही अंश प्रकाशित करके प्रेमी पाठकों के करकमलों में अर्पित किया जा रहा है। आशा है, इन मधुर रचनाओं के अनुशीलन से प्रेमीपाठक अवश्य ही सन्तुष्ट होंगे।

अनेक कार्यों में व्यस्त रहने से सम्पादन कार्य जैसा चाहिये था, वैसा नहीं हो सका है। प्रमादवश गुरु-वन्दना आदि के कई पद दुबारा भी आ गये है। प्रूफ-संशोधन भी ठीक नहीं हो सका। जिन संग्रह-पुस्तकों में से इस वाणी का संकलन किया गया है उनकी लिपि बड़ी विचित्र थी, जो प्रतिलिपि करने वालों से पढ़ी नहीं जा सकती थी। उत्सवों के क्रम का भी एक स्थल पर व्यत्तिक्रम हो गया है। भाद्र पद मास के वामन-जयन्ती महोत्सव के पदों का प्रमादवश वैशाख मास के उत्सव के पदों के साथ कम्पोज हो गया है। इस प्रकार छोटी-मोटी बहुत सी त्रुटियां रह गई हैं, पाठक जन उन्हें समझ कर पढ़ें।

—:*:—

# वाणीकार–परिचय

श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी महाराज अखिल भारतीय जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य पीठ ( सलेमाबाद, किशनगढ़ ) के एक सुप्रतिष्ठित आचार्य थे। आप की विद्वत्ता और भक्ति भावना आप की प्रस्तुत वाणी के अनुशीलन से स्पष्ट हो सकती है। यद्यपि जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर आदि राज्यों की तवारीखों एवं आचार्य पीठस्थ पत्र और दैनन्दिनी ( रोकड़ बहियों ) पुस्तकों में आपका जीवन-वृत्त मिल सकता है, तथापि वह प्रायः आचार्य पीठ के सिंहासन को अलंकृत करने के पश्चात् धर्मप्रचारार्थ भ्रमण आदि का ही वृत्तान्त है। बाल्य काल का जीवन-वृत्त,जन्मस्थान,माता पिता आदि का परिचय उन सब में मिलना कठिन है। वास्तव में आचार्य हो या महन्त अथवा सामान्य विरक्त, सभी सन्तों का आरम्भिक जीवन-वृत्त प्रायः अज्ञात ही रहता है। कारण स्वयं वे अपना परिचय नहीं देते। उनके लिये ऐसा विधान भी है :—

**"नाम गोत्रञ्च चरणं वेशं वासं, श्रुतं कुलम्।**
**वयो विद्याञ्च वृत्तिञ्च ख्यापयेन्नैव सद्यतिः"॥**

सन्तों को अपना नाम, गोत्र, जाति, वेश, आवासस्थान, अध्ययन, कुल, अवस्था, विद्या, वृत्ति ( जीवन ) आदि किसी को नहीं बतलाना चाहिये। इसी कारण उनके आरम्भिक जीवन का पता नहीं चलता। हां ! इतना सुनिश्चित है कि इनके परमगुरु श्रीवृन्दावनदेवाचार्य जी और शिष्य श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी तथा उनके प्रशिष्य श्रीव्रजराजशरणदेवाचार्य जी जयपुर मण्डलान्तर्गत सराय शूरपुरा नामक ग्राम के रहने वाले, गौड़द्विज श्रीभवानीरामजी के कुल में प्रकट हुये थे। उनके वंशजों में आज भी यहां श्रीभूरामल जी जोशी आदि उस कुल के कई व्यक्ति विद्यमान हैं। उनके पास कुछ चिट्ठी पत्रियां भी हैं। श्रीगोपेश्वरशरणदेवाचार्य जी एवं श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी का जन्म स्थान हस्तेड़ा ग्राम है। वहां पर उस कुल के व्यक्ति आज भी विद्यमान हैं। सम्प्रदाय का एक बड़ा और छोटा दो मन्दिर भी हैं, जो सुप्रतिष्ठित माने जाते हैं। उन में बड़ा मन्दिर किशनगढ़ रेनवाले के श्रीमहन्त जी के आधीन है, और छोटे मन्दिर के महन्त श्रीबद्रीदास जी हस्तेड़ा के ही हैं।

श्रीनारायणदेवाचार्य जी श्रीवृन्दावनदेवाचार्य जी के मन्त्रोपदेशक गुरु थे, किन्तु पूर्व सम्बन्ध से भागिनेय लगते थे। श्रीपरशुरामदेवाचार्य जी का भी इसी जयपुर-मंडल के अन्तर्गत गौड द्विज कुल में आविर्भाव हुआ था। डा० रामप्रसाद शर्मा ने ठीकरिया-ग्राम ( दौसा के पास ) उनका जन्म स्थान माना है, और गूजर गौड द्विज कुल में उन की उत्पत्ति मानी है। श्री श्रीभट्टदेवाचार्य जी और श्रीहरि व्यास देवाचार्य जी का अविर्भाव मथुरा के गौड द्विज परिवार में हुआ था। श्रीभट्टदेवाचार्य जी और उनके

पश्चात् होने वाले सभी आचार्य गौड द्विज कुल में ही अवतीर्ण हुए थे। श्रीगोविन्ददेवाचार्य और श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्य जी ने भी उसी गौड द्विज कुल को अलंकृत किया है। उनके जन्मस्थान और माता पिता आदि परिवार के सम्बन्ध में विशेष छानबीन करके पृथक् निबन्ध प्रस्तुत किया जायगा। अभी केवल किशनगढ़ राज्य की तवारीख से उनका जितना जैसा जीवन-वृत्त मिला है, वही यहां संक्षेप में उद्धृत किया जाता है :—

विक्रम सम्वत १८९७ भाद्रपद कृष्णा १२ को उदयपुर के बाड़े में श्रीवृन्दावन-देवाचार्य जी का परमधाम वास हुआ था। वे वयोवृद्ध और बड़े विद्वान् एवं उच्चकोटि के कवि थे। उनके गृहस्थ शिष्य तो असंख्य थे ही, विरक्त शिष्य भी बहुत थे। उनके एक शिष्य श्रीजयराम जी शेष जो महाराष्ट्र गृहस्थ ब्राह्मण थे, बहुत अच्छे विद्वान् थे। उदयपुर, जयपुर गढ़ आदि के कई नरेश उनसे प्रभावित थे। इधर जयपुर नरेश सवाई-जयसिंहजी ( द्वितीय ) सभी आचार्यों को गृहस्थ बनाने के पक्ष में थे, अतः उदयपुर नरेश ने जयपुर आदि नरेशों के नाम एक पत्र लिख कर व्रजनाथ भट्ट जी के साथ श्रीजयराम जी शेष को आचार्य पीठ सलेमाबाद भेज दिया। इधर आचार्य पीठ का विरक्त परिकर और निकटवर्ति सभी जागीरदार गौड़ द्विज कुलीन नैष्ठिक ब्रह्मचारी को ही श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ के आचार्य पद पर अभिषिक्त करना चाहते थे। तदनुसार श्रीगोविन्ददेवाचार्य जी ( जिनका प्रथम नाम देवादासजी था ) को सिंहासन पर विराजमान कर दिया, अतः शेषजी निराश होकर वहां से लौट आये। किसी विशेष कारण वश जयपुर आदि के नरेश, जोधपुर से लौट कर उस समय सब मेडता में ठहरे हुए थे। शेषजी भी वहां जा पहुँचे। व्रजनाथ भट्टजी ने राणाजी का पत्र दिया तब सभी नरेशों ने शेषजी का आचार्याभिषेक किया।

सर्वप्रथम किशनगढ़ के महाराज कुमार सांवंत सिंह ( नागरी दास ) जी ने दुशाला और नगदी भेंट करके दण्डवत प्रणाम किया। तदनन्तर क्रमशः जयपुर, कोटा, बीकानेर, जालोर, नागोर, शिवपुर ( बहेदा ), उदयपुर, जोधपुर, करौली आदि के नरेशों ने सत्कार किया, और कुछ सिपाही साथ करके आचार्य पीठ सलेमाबाद भेज दिया। फिर भी आचार्य पीठ पर जब उनका आधिपत्य नहीं होने दिया, तब भाद्रपद शुक्ला ११ को खवासीन कुँवर शिव सिंहजी सलेमाबाद जाकर शेषजी को किशनगढ़ ले आये, और वहां के श्रीगोपाल द्वारा में ठहरा दिया। वहां ही महाराजा राज सिंहजी ने उनका दस्तूर किया ११९) रु० भेंट की। फिर वहां से शेषजी जयपुर पधारे, ३–४ महीनों के पश्चात् फिर पौष शुक्ला ११ को जयपुर से किशनगढ़ पहुँचे। कई दिनों तक इधर-उधर फिरते रहे, तब जयपुर नरेश सवाई जय सिंहजी ने उन्हें जयपुरस्थ श्रीजी के मन्दिर का अध्यक्ष बना दिया।

इस वृत्तान्त से यह निश्चित होता है कि उस समय श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ सलेमाबाद सब प्रकार से स्वतन्त्र था। सभी राजा वहां के शिष्य सेवक थे। किन्तु किसी भी राज्य का वहां आधिपत्य नहीं था। अन्यथा इतने नरेशों द्वारा अभिषिक्त आचार्य

का प्रवेश नहीं रुक सकता था। साथ ही यह भी प्रमाणित होता है, कि—श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के आचार्य नैष्ठिक ब्रह्मचारी ही होते आये हैं।

विक्रम संम्वत० १८०० आश्विन शुक्ला १४ को जयपुर नरेश श्रीजय सिंहजी का परमधाम वास होगया, जिससे शेषजी का पक्ष और भी निर्बल होचुका। अन्ततोगत्वा सभी नरेशों ने श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी को ही आचार्य माना। [1]आप बड़े सौम्य प्रकृति और एकान्त वृत्ति वाले थे। श्रीवृन्दावन में ही अधिक निवास करते थे। एकबार विक्रम सं० १८११ माघशुक्ला ६ मी को जब आप रूपनगर पधारे, तो महाराज कुमार श्रीसरदार सिंहजी और सभी राजपरिवार एवं नागरिकों ने बहुत स्वागत सम्मान अर्चन किया।

बहादुरसिंहजी और नागरीदासजी का मनोमालिन्य कई वर्षों से चल रहा था। वि० सं० १८१४ में आचार्य श्री की अस्वस्थता का समाचार ज्ञात होने पर वृन्दावन से रूपनगर होते हुए सांवत सिंह ( नागरी दास ) जी आश्विन शुक्ला ६ मी को आचार्य-पीठ सलेमाबाद दर्शनार्थ पधारे, उधर किशनगढ़ से श्रीबहादुर सिंहजी भी जा पहुँचे। दण्डवत् प्रणाम, भेंट पूजा, कुशल प्रश्नादि के अनन्तर, आचार्य श्रीगोविन्ददेवाचार्य जी महाराज तथा उनके उत्तराधिकारी प्रस्तुत वाणी के रचयिता श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्य जी ने दोनों भाइयों को बहुत समझाया, तब दोनों का मनोमालिन्य मिटा। दोनों ने मिलकर वहाँ ही सर्वेश्वर प्रभुका प्रसाद पाया, फिर एक ही रथ में बैठकर दोनों किशनगढ़ गये। किशनगढ़ की राज्यगद्दी बिरद सिंहजी को और रूपनगर की राज्यगद्दी सरदारसिंहजी को देदी गई।

थोड़े ही दिनों के पश्चात् ( कार्तिक कृष्णपक्ष के आरम्भ में ही ) आचार्य श्रीगोविन्ददेवाचार्य जी परमधाम पधार गये तब श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्य जी सिंहासनासीन हुए। आप बड़े प्रतिभावान, त्यागी और विद्वान् कवि थे। दर्शन करके ही दर्शकजन विमुग्ध हो जाते थे। बड़े-बड़े राजा, महाराजा और रानियों को आपके दर्शनों की लालसा लगी रहती थी। उनके द्वारा भेजे हुए पत्रों से यह पता लगता है। विक्रम सम्वत १८१५ के आषाढ में जोधपुर नरेश महाराजा सिंहजी की रानी कछवाहजी रूपनगर होती हुई आपके दर्शनार्थ रथयात्रा के अवसर पर आचार्यपीठ ( सलेमाबाद ) पहुँचीं। दर्शन करके बड़ी प्रसन्न हुई। इसी प्रकार अन्याऽन्य नरेशों की आप में हार्दिक

---

[1]शेषजी के पुत्र मथुरा दासजी काशी में अध्ययन करते थे। आचार्य पीठ के अधिकारी दौलतराम, मुरली दासजी, पुरसरामजी आदि को उन्होंने अपने पक्ष में कर लिया था। उनके सहयोग से मथुरादासजी एक बार ऐसे समय सलेमाबाद पहुँचे, जब कि श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी वृन्दावन में विराज रहे थे। आचार्य पीठ का प्रबन्ध उस समय प्रेमदासजी और रतनदासजी करते थे, उनके विरुद्ध दौलतरामजी को मसालों के प्रकाश के साथ आचार्य पीठ में प्रविष्ट कर लिया। यह छल जब मालुम पड़ा तब सरदार सिंहजी ने पुलिस भेज कर उन्हें बन्दी बना लिया था।

श्रद्धा थी। यही कारण है कि आप के आचार्यकाल में आचार्य पीठ की विशेष उन्नति हुई। चिट्ठी पत्रियों से ज्ञात होता है—गुरुदेव की विद्यमानता में ही आपने पीठ का समस्त प्रबन्धभार अपने कंधों पर उठा लिया था, अतएव राजा और प्रजा सभी आप को श्रीजी महाराज के नाम से सम्बोधित करने लग गये थे। विक्रम संवत १८१० ज्येष्ठ शुक्ला १० को मेडता से भेजे हुए, निम्नांकित पत्र से यह धारणा सुदृढ़ होती है—वह पत्र यहां अक्षरशः उद्धृत किया जाता है :—

सिद्धि श्री सलेमाबाद शुभ स्थान सर्वोपमाविराजमान् अनेक उपमा लायक, स्वामीजी श्रीगोविन्दशरणजी चरण कमलाय नु मदेश रादेश थी सदा सेवग किशनसिंह कुंवर देइदान लिखाय सु दंडवत् श्रागोपाल अवधार ज्यौ। अठा रा समाचार श्रीगोपाल जी री कृपा करनै भला छै। आप रा घड़ी-घड़ी पलपलरा सदा आरोग चाहि जै, आप बड़ा छौ गुरुदेव छौ, म्हा सु सदा कृपा फुरमावो उणी भांति फुरमाव सौ जी। अपरंच आप से कागद आयो समाचार वांचि मा. आप सनद वेली लिखी थो सो सारो काम कराय मेलियो छै। सनद कराय मेली छै सो पहुँच सी, और गांव गोतरडी राजुता नै.....कराय देखी और आय म्हानै दरसणां वास्तै लिखिया सो श्रीगोविन्दजी री नै आप री कृपा होसी जरै दरसण होवसी, और आप अठारीतरफ सं खुशाली रखवसी नै अठासारू काम होय सो लिखाव सी जुदायगी किणी बात री नहीं जाणसी, अठै हुकम गोपालजी री छै। वलता कागद दिरावसी संवत १८०६ रा. ज्येठ सुदी १०२५.।

इसी प्रकार के कई पत्र वि० सं० १८१० के जेठ शुक्ला १० को मेडता से व्यास भगोतीदासजी को भेजे हुए, तथा उदयपुर मेवाड. से, लक्ष्मण भट्टजी आदि द्वारा भेजे हुए ( संस्कृत भाषा के ) मिलते हैं।

आचार्य पीठ की गोचर भूमि एक सालरमाला पहाड़ है, वहां पर विक्रम संवत १८२२ में एक ताम्बे की खान निकल आई, तब निकटवर्ती किशनगढ़ राज्य का वहां पहरा बिठाया गया। विक्रम सं० १८२३ में आप से सम्बंधित एक विशेष उल्लेखनीय घटना घटी थी। उस का संक्षिप्त रूप इस प्रकार है :—श्रीजयदेव कवि के सेव्य ठाकुर श्रीमाधवजी राधा कुण्ड पर विराजते थे। यद्यपि. वह स्थान ( श्रीनिम्बार्काचार्यजी की भजनस्थली ) आचार्य पीठ का ही था तथापि राधाकुण्ड के पुरोहितों का श्रीमाधव जी में विशेष ममत्व होना स्वाभाविक था, कारण दर्शनार्थ यात्री वहां पहुँचते तो तीर्थ पुरोहितों को विशेष लाभ होता था। किन्तु श्रीमाधवजी की लीला समझ में नहीं आ सकती, उन्होंने श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्य जी को स्वप्न में आदेश दिया, अब हमें आप आचार्य पीठ सलेमाबाद ले चलिये, तब उन्होंने प्रार्थना की—प्रभो ! वह मरुस्थल है, वहां कँटीले वृक्ष हैं, बाजरा मोठ जौ चने का खान है। "भगवान् ने आज्ञा दी वही हमें स्वीकृत है।" आचार्य श्री ने फिर पूछा—आप कैसे पधारेंगे तब श्रीमाधवजी ने कहा—तुम्हारे रथ में बिठाकर हमें ले चलो।

इस प्रकार भगवान् की आज्ञा प्राप्त करके जब श्रीमाधव जी को अपने रथ में विराजमान करके प्रस्थान किया तो, राधाकुण्ड के निवासियों ने आन्दोलन मचाया, रोका और पीछा किया, किन्तु श्रीमाधव भगवान् का रथ भरतपुर जा पहुँचा। वहां सेवा हुई, भरतपुर नरेश.....ने समग्र परिस्थिति का अध्ययन करके यह घोषित किया—"श्रीमाधवजी अपनी इच्छा से ही ब्रज में पधारे थे, अपनी इच्छानुसार ही श्रीराधाकुण्ड पर विराजकर भक्तों के मनोरथ पूर्ण किये, अब राजस्थान के भक्तों को कृतार्थ करने की इच्छा है, यदि विश्वास न हो तो सभी आन्दोलनकर्ता रथ को खींच कर वापिस लौटा लें जायें।"

इस निर्णय को सुनते ही सभी ब्रजवासी प्रसन्न होकर रथ में लग गये, जितना बल था, सभी ने लगा लिया, किन्तु रथ एक तिल भी अपने स्थान से नहीं हटा तब आचार्य श्री ने प्रभु से प्रार्थना करके रथ को खींचा तो वह चल पड़ा, दर्शक चकित हो गये, जय ध्वनि और पुष्पों की वर्षा होने लगी। वह रथ, समारोह पूर्वक सानन्द आचार्य-पीठ सलेमाबाद पहुँचा और ज्येष्ठ शु० १० को बड़े उत्साह के साथ आप की सलेमाबाद में प्रतिष्ठा हुई। दूसरे दिन रूपनगर से महाराजा सरदार सिंहजी दर्शनों के लिये पहुँचे। श्रीमाधवजी की ललित त्रिभंगी के दर्शन करके बड़े प्रसन्न हुए। २२४ बीघा जमीन भोग-राग के लिये दी, तदनन्तर आचार्य श्री के ४) मुहरें, दुशाला और नगद रुपये आदि भेंट प्रदान किये। आचार्य श्री ने प्रसाद, प्रसादी वस्त्र (कीनखाप) फेंटा आदि दिये।

आपने धर्मप्रचारार्थ भारत के सभी प्रान्तों में भ्रमण किया था। वि० सं० १८३० में जब पर्य्यटन करके पुष्कर पधारे, तब कार्तिक मास में श्रीपरशुराम द्वारा में श्रीनिम्बार्क भगवान् का जयन्ती-महोत्सव बड़े समारोह पूर्वक हुआ, उस अवसर पर किशनगढ़ से महाराजा विरद सिंहजी दर्शनों के लिये पधारे, दुशाला आदि भेंट की।

किशनगढ़ के राजकुल में जब कोई जटिल समस्या उपस्थित होती, तो उसे सुलझाने एवं शान्त करने में आचार्य पीठ सलेमाबाद का विशेष योग दान रहता था, विक्रम संवत० १८३१ में भी ऐसी घटनायें घटीं थी—महाराजा बहादुर सिंहजी के छोटे भ्राता श्रीवीरसिंह जी[1] (ब्रजकुमारीजी से उत्पन्न) के अमर सिंहजी और सूरतसिंहजी दो पुत्र थे। बड़े भ्राता को करकेड़ी और छोटे को रलावता जागीर में दिया हुआ था, किसी कारण वश महाराज कुमर विरद सिंहजी से उनकी कुछ अनबन होगई थी, विक्रम सम्वत १८३१ की वैशाखी पूर्णिमा को ये सभी आचार्य पीठ सलेमाबाद पहुँचे, (यह किशनगढ़ के निकटवर्ती एक विशिष्ट तीर्थ माना जाता है) श्रीसर्वेश्वर कुण्ड में स्नान, श्रीराधामाधवजी और आचार्य श्री के दर्शन किये। सभी ने पंगत में बैठकर श्रीसर्वेश्वर-प्रभु का प्रसाद लिया। तत्पश्चात् आचार्य श्री के समक्ष बैठक हुई। आपने सब को समझा-बुझाकर सुलझन करा के परस्पर प्रेमभाव करा दिया।

महाराजा कुमार विरद सिंहजी की राजकुमारी अखैकुमारी का वि० सं० १८२८ ज्येष्ठ शुक्ला १० को जयपुर नरेश पृथ्वी सिंहजी से पाणिग्रहण सम्बन्ध हुआ, वि० सं० १८३५

[1] पानीपत की तीसरी लड़ाई (वि० सं० १८८१) में वीर सिंहजी का देहावसान हुआ था।

में जब पृथ्वी सिंहजी का देहावसान हुआ, तब अखैकुमारी ६-७ मास की गर्भवती थी, अतः छोटे भ्राता प्रताप सिंहजी जयपुर राज्य की राजगद्दी पर बिठाये गये। ३-४ मास के बाद जब अखैकुमारी की कुक्षि से राजकुमार का जन्म हुआ तो उनका नाम मानसिंह रक्खा गया। अढाईतीन वर्ष की अवस्था हुई तब वह राजकुमार कृष्णगढ़ में ही था। पर्व०सं०१८३८ आश्विन शुक्ला ४ को आचार्य श्रीगोविन्दशरण देवाचार्यजी महाराज किशनगढ़ में ही विराज रहे थे। आप से ही भागिनेय मान सिंहजी को वैष्णवी दीक्षा दिलाई। इसी वर्ष श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्य जी महाराज वृन्दावन पधारे। कृष्णगढ़ के महाराज कुमार विरद सिंहजी साथ में थे। गंगा और कमोदराय ने विहारघाट पर एक दालान का निर्माण करवाकर उसी अवसर पर आचार्य श्री को भेंट किया।

विक्रम सं० १८३७ फाल्गुन शुक्ला ३ को किशनगढ़ नरेश बहादुर सिंहजी का देहावसान होने पर उनके सुपुत्र विरद सिंहजी राज्यासन पर आरूढ हुए, तब एक सौ साल रियासती ठिकानों का दस्तूर ( दुशाला पाग आदि सत्कार ) हुआ था, उनमें १८ धर्मस्थानों का सत्कार था। उन सब में सर्वप्रथम सत्कार आचार्य पीठ सलेमाबाद की ओर से हुआ था। तत्पश्चात् कार्बारिया महन्तजी आदि के दुपट्टे आदि उढ़ाये गये थे। इससे प्रमाणित होता है कि—किशनगढ़ राज्य में आचार्यपीठ सलेमाबाद का सर्वोच्च समादर रहा है।

महाराजा विरद सिंहजी की रानी रतनकुमारी जी आप ( श्रीगोविन्दशरण-देवाचार्यजी ) की ही शिष्या थीं, वे प्रायः पुष्कर रहा करती थीं। उनकी ओर से आचार्य श्री की आज्ञानुसार श्रीपरशुराम द्वारा में सदावर्त लगता था। वि० सं० १८३८ कार्तिक कृष्ण १० को उन ( रानीजी ) का वहां ही परमधाम वास हुआ था। जब वे किशनगढ़ किले में रहती थीं, तब ठाकुर श्रीराधामोहन जी [१] की आराधना में संलग्न रहती थीं।

श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्य जी वास्तव में एक महान् प्रतापी आचार्य थे। उन्होंने सनातन धर्म की उल्लेखनीय सेवा की है। सलेमाबाद के आचार्यों का "श्रीजी" उपाधि का विशेष प्रचार-प्रसार भी आप के समय से ही हुआ है। आप के पूर्ववर्ती आचार्यों के नाम जो राजाओं द्वारा भेजे हुए पत्र एवं पट्टे आदि मिलते हैं, उनमें श्रीस्वामीजी, श्रीमहाप्रभुजी आदि विशेषण ही मिलते हैं, इस सम्बन्ध की परम्परागत एक विशिष्ट जनश्रुति भी प्रचलित है—

"जब महारानियां श्रीसर्वेश्वर प्रभु के दर्शनार्थ आती थीं, तब एक अर्चक पुजारी के अतिरिक्त दूसरा कोई भी पुरुष वहां नहीं रहता था। इसी प्रकार आचार्य श्री के दर्शन करने आतीं तब भी वहां केवल आचार्य श्री ही विराजे रहते थे। जब कभी आचार्य श्री

---

[१] यह प्रतिमा सलेमाबाद से ही कृष्णगढ़ नरेशों को प्राप्त हुई थी। परम्परा से रनवास में विराजती है, बड़े सुन्दर दर्शन हैं। वल्लभ कुल के कट्टर पक्षपाती जयलालजी ने वि० सं० १८२२ और १८३८ में रतनकुमारी एवं प्रताप सिंहजी की रानी कछवाई द्वारा इनकी पुष्टि करवाने का अनुमान किया है वह सर्वथा निराधार, पूर्वापर विरुद्ध अतः अप्रामाणिक है।

रनवासों में पधारते थे, तब भी ऐसी ही प्रथा थी। परिचारकगण ड्योढ़ी ( रणवास के द्वार ) पर बाहर ही रह जाते थे। रानियां और उनकी परिचारिकायें आचार्य श्री का अर्चन करती थीं, आचार्य श्री उनको दीक्षा, मन्त्रोपदेश देते थे। उस में समय भी लगता था। एक बार जब यही श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्य जी महाराज जयपुर नरेश के महलों में विराजकर रानियों को उपदेश दे रहे थे, तब किसी विद्वेषी ने जयपुर नरेश को बहकाया, तब परीक्षा लेने के लिये जयपुर नरेश अचानक बिना ही सूचना किये अंतः पुर में जा पहुँचे, वहां सिंहासन पर विराजमान आचार्य श्री का दर्शन किया। साक्षात् वृषभानु-नन्दिनी श्रीराधाजी का भाव हुआ। राजा चरणों में पड़ गये, क्षमा याचना की, तब से "श्रीजी" पद का सर्वव्यापी प्रचार-प्रसार हुआ। यद्यपि श्रीनिम्बार्क भगवान् और उनके पूर्व से भी सम्प्रदायाचार्यों को श्रीप्रियाजी की अन्तरंगा सखियों का रूप माना है, महावाणी आदि में इस सम्बन्ध का स्पष्ट उल्लेख है ही, तथापि उसका प्रत्यक्ष श्रीगोविन्द-शरणदेवाचार्यजी ने करवाया, यह आप की एक विशिष्टता थी। आचार्यों के प्रकट नामों में जो शरणान्त पद जुड़ा है, वह भी आपके समय से ही प्रचलित हुआ है। उस से पूर्व देव शब्द ही प्रयुक्त होता था।

आप का इतिवृत्त विशाल है, यहां केवल किशनगढ़ राज्य की तवारीखों के नोटों के अनुसार ही दिया गया है, अन्य राज्यों की तवारीख आचार्य पीठ के पत्र, पट्टे, दैनिन्दिनी आदि में उपलब्ध इतिवृत्त का स्वतन्त्र रूप से अन्य प्रबन्ध लिखा जायगा।

इस प्रकार २७ वर्ष पीठासीन रहकर वि० सं० १८४१ के चैत्रमास में आप ने नित्य निकुंज लीला में प्रवेश किया। आप के उत्तराधिकारी श्रीसर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी ने आचार्य पद को अलंकृत किया। [1]आपका विशेष महोत्सव ८ वर्ष पश्चात् वि० सम्वत्, १८४९ ज्येष्ठ मास में हुआ था, उस अवसर पर जयपुर से गलता और बालानन्दजी के महन्त तथा रेवासा के महन्त वेणीदासजी आदि महान्त महानुभाव और किशनगढ़ नृप महाराजा प्रताप सिंहजी आदि नरेश सम्मिलित हुए थे। [2]जोधपुर नरेश महाराजा विजय सिंहजी ने अपने प्रतिनिधि रूप से म्होणोत जोगीदासजी को भेंट सत्कार देकर भिज-वाया था।

---

[1]राज्यों के सम्वत भिन्न-भिन्न मासों में बदलते थे। किसी राज्य में भाद्रपद से किसी में चैत्र से, अतः कभी-कभी एक वर्ष का भ्रम होजाता है। श्रीसर्वेश्वरशरण देवाचार्य जब गद्दी पर विराजे, उसका किशनगढ़ राज्य से सत्कार भेंट वि० सं० १८४१ चैत्र सुदी ७-८ को उल्लिखित है, दुसाला, १ म्होर ४) दरबार की और २) म्होर महाराज कुंवर ने भेंट की थी।

[2]विशेष उत्सव ( मेला ) पर किशनगढ़ राज्य की ओर से २ घोड़े और ५०००) पांच हजार रुपये का रुक्का ज्येष्ठ वदी ७ सम्वत १८४९ को होना अंकित है। यह मेला वैशाख शुक्ला ३ को हुआ था। राज्यों के भेंट-सत्कार बाद में भी आते रहते है। किसी राज्य से एक वर्ष के अनन्तर भी भेंट आई है। अतः वहां १८५० सम्वत में भेंट सत्कार भेजना अंकित है।

शिष्य प्रशिष्य :—श्रीगोविन्दशरण देवाचार्यजी के शिष्य वैसे तो असंख्य थे, विरक्त शिष्यों में प्रमुख श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी थे, उनके अतिरिक्त और भी बहुत से थे। प्रतापी और साहित्यिक कवियों में—श्रीकिशोरीदासजी भी थे। वि० सं० १७६६ के पद संग्रह में उनका निम्नांकित-पद-उल्लिखित है :—

**नमो नमो जै श्री निम्बादित।**
**श्रीरंगदेवीरूप सहचरी लागि रही चरननि राधा नित।**
**यह कलिकाल महा अति दुस्तर, प्रगट भये प्रभु भक्त जनन हित।**
**किशोरीदास पर करुणा करि कैं, श्रीगोविन्दशरण दये मन वंछित।**

चरन रेनु की रचना सरल प्रताप प्रस्तुत वाणी के अन्त में प्रकाशित की गई है। आप के एक कवि शिष्य चरन दासजी थे, उन्होंने वि० सं० १८२० के माघ मास में गुरु-पद्धति की रचना की थी। उसमें श्रीगोविन्दशरण देवाचार्य पर्यन्त आचार्य परम्परा देकर अन्त में यह छप्पय लिखा है :—

**तिहिं गादी हरि व्यास देव सुख राशि विराजैं,**
**परशुराम हरिबंस तहां आनन्दित राजैं।**
**श्रीनारायणदेव विराजत गादी शोभा,**
**श्रीवृन्दावन देव तहां भ्राजैं गुन ग्रामां।**
**श्रीगोविन्द बसैं तहां स्तुति कौन पै जाय रट,**
**गोविन्दशरण करणा उदधि तिहिं गादी राजैं प्रकट।**

अपर शिष्य श्रीराधिकादास जी थे, जो संस्कृत और हिन्दी के अच्छे लेखक विद्वान थे। उन्होंने स्तव-स्मरणी आदि संस्कृत के कितने ही ग्रन्थों की प्रतिलिपि वि० १८५५ में की थी, उससे पूर्व लीलाविंशति आदि हिन्दी के कई ग्रन्थों की प्रतिलिपि कर चुके थे। उसमें आप की रचना भी उपलब्ध होती है।

आप के एक शिष्य बाबा अलखराम थे, जिहोंने शैव गुसाईयों को पराजित करने में वैष्णवों को महान् सहयोग दिया था। उनका अखाड़ा हरिद्वार में विष्णु तीर्थ पर आज भी विद्यमान है। हरिद्वार के तीर्थ पुरोहित श्रीसुखदयाल के निम्नांकित पत्र से यह प्रमाणित होता है, अतः वह पत्र यहां अक्षरशः उद्धत किया जाता है :—

सिद्धि श्रीसर्वोपमा जोग श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्रीजी महाराज की सरकार में अधिकारी साधुरामजी कृष्णचरणजी जोग लिखी श्रीहरिद्वार जी को प्रोहित सुख-दीयाल बेटा रामकरणजी पोता मोजी रामजी का आसीर वचन वंचणा आगे हारद्वारजी में विसन तीरथ के पास **अखाड़ा श्रीगोविन्दशरणदेव जी का चेला अलखरामजी का है,** सो राम दास ने गहणैं मेला मारफत हमारी और जमीन अखाड़ा का कागज पक्का और साबा हमारे पास हैं, सो मालिक श्रीजीमहाराज हैं, सिरकार मैं मागें जदां देना ओर कोई मांगै तो देणा नहीं, आगे राम दास ने अखाडा के ऊपर रुपैये चार सौ ४००) लीया ता-मध्य रुपैया १८६) पाया गिरवीदार के जमा कीना बाकी २१४) रहे सिरकार से लेणा मिति श्रावण वदी ३ सम्वत १८०३ दसखत प्रोहित सुख दीयाल।

---

रसिक सर्वस्व श्री युगलकिशोर

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीनिम्बार्कमहामुनीन्द्राय नमः ॥

# श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी की

# वाणी

## (प्रथम-भाग)

( १ )

वन्दौं श्रीगुरु चरण सरोजम् ।
अमलासय जग प्रगट ज्ञान घन हरि लीला गुन मुख अम्भोजम् ॥
ज्ञानाञ्जन दीयो अन्धन हित तिमिर दूरि करि आनंद रूपम् ।
मुनि मनसा कौ ध्यान जोग्य वपु सरनागत रच्छिक बड़भूपम् ॥
भक्ति ज्ञान वैराग रूप प्रभु भव जु रोग को वैद उदारम् ।
दीनबन्धु करुनामय स्वामी गोविन्दसरन जन अनन्य अधारम् ॥

( २ )

नमो नमो जै जै श्रीराधा ।
कुञ्ज केलि लालन संग विहरत अन्तर परत नहीं पल आधा ॥
आगम निगम पुरान बखानैं नित्य विहार अबाधा ।
नूपुर रव प्रगटचौ ता रव तैं शब्द ब्रह्म ॐकार अगाधा ॥
नमो जयति वृन्दावन रानी भान कुंवरि वल्लभ श्रीमाधा ।
रंगादिक सहचरि की जीवनि श्रीहरिप्रिया यही सुख लाधा ॥
भ्रमैं फिरत मूरख जे जग में अन्य सरन गहि कैं श्रुतिवादा ।
काम लोभ स्वर्गादिक कैं हित तजे महा अमृत रस स्वादा ॥
श्रीगोविन्द सरन सुखदाई निति सुभाव है करुणांदा ।
धरि धीरज सहचरि सुख दीनौं विरद निभाया शरणांदा ॥

( ३ )

नमो कृष्ण जै नित्य विहारी ।
जयति जयति निति कुञ्ज केलि नव विलसत संग राधिका प्यारी ॥

सखी समाज साज सुख निति नव--उच्छव मगन महारी।
श्रीगोविन्दसरन हिय राजत दल फल फूल लता द्रुम डारी॥

( ४ )

नमो नमो जै (श्री) श्यामा श्याम।
श्रीवृन्दावन कुंजनि कुंजनि सखियन जुत विहरत निशि जाम॥
रसिक जननि कैं जीवनि हित रस प्रगट कियो निज जस गुनग्राम।
कथा वारता सन्त संग सुख गान सु रस चर्चा धुनि नाम॥
श्रीगोविन्दसरन करुनाकरि निजमुख दिय बताय नित धाम।
धीरज धारि कृपा वल्लभ मनि लाग्यो सुत नातिनि जुत वाम॥

( ५ )

नमो जयति श्रीभट रिषि राज।
भक्तराज अरु रसिक राज सुभ वृन्दावन रस को पाज॥
श्यामा श्याम निकुञ्ज केलिगुन मत्त रहत मिलि रसिक समाज।
रंगादिक संग हितू सहेली कलि प्रगटे परिकर जुत साज॥
श्रीगोविन्द सरन हठ हिय धरि ये हो सब के सारन काज।
धीरज धारि चरन रज सिर परि भव सागर कौ तिरन जहाज॥

( ६ )

नमो परसधर जै प्रसराम।
छत्री कुल के पाप ताप त्रय छेदन किये शुद्ध भये ताम॥
देस जंगली, लोग जंगली बहुधर्मी मत नहिं सुधि श्याम।
तिन को भक्त करे करुनाकरि राधा कृष्ण विराजे धाम॥
सुता सुत माती परिकर जुत मित्र वंश अरु वाम।
हरि उच्छव आनन्द लखत सब विप्र श्वपच लौं जे रहे ग्राम।
श्रीगोविन्द सरन प्रगटे जे हिय की पुरई हाम।
धीरज धारि समीप छांह निज अनत दुखन की मेटी घाम॥

( ७ )

नमो नमो व्रजराज कुमार, जसुमति के धन प्रान अधार।
आनंदमय व्रज सरस सरोवर, प्रफुलित कमल अमल उदगार।
भान किरन पोषित तोषित निति,अज शिव वन्दित चरित उदार॥

आदि मध्य अवसान एक रस गुनातीत पुनि गुन आगार।
माया अंजन रहित गुसाईं बेद निरञ्जन कहत अपार॥
जगत बिटप पुनि बीज अखंडित सुन्दर कोटि (कोटि) बलि मार।
गोविन्दसरन जल चन्द-बिंब ज्यौं व्यापक पै न्यारो निरधार॥

( ८ )

सोभित सरस स्याम सुंदर पिय संग वृषभान किसोरी।
विहरत विपुन मान सरवर कलहंस-हंसनी जोरी॥टेक॥
सिथिल बसन अरु रसन सिथिल भइ नीवी बंधन डोरी॥
मनहुँ मधुप सौरभ लोभी निसि कनकलता झकझोरी॥
गौर घटा अरु स्याम बरसि रस पुनि लै बागैं मोरी।
सखी भईं चातग रसना मधु परचौ रस कौ चसकौ री॥
डगमगात पग धरत धरनि जुग छबि आलस बस गोरी।
गोविंदसरन सोभा संपति पर वारौं रति मदन करोरी॥

( ९ )

सुमिरि कृष्णचंद्र चारु चरन चित सभागी।
गोधन कै संग विपिन नित प्रति अनुरागी॥
कुमुद बंधु नख उजास हिय प्रकास कारी।
रंचक मन आवत ही अखिल दुरित हारी॥
तजत न मन मधुप संग सौरभ मति पागी।
मगन रहत रैन दिवस इकरस लौ लागी॥
वृंदावन बर बिहार रास नृत्य कारी।
गोविंदसरन सोभा लखि तन मन बलिहारी॥

( १० )

करहु नाथ सर्वेस्वर दीन जानि करुना।
कीजिये सनाथ मोहि आय परचौ सरना।
मैं अनादि सिद्ध दास तुम अनादि स्वामी।
बिसरत क्यौं कृपासिंधु जानि कुटिल कामी॥
आपनी दृढ़ भक्ति साधु संग मोहि दीजै।
लीला गुन रूप नाँव रसना रस पीजै॥

ऊंच नीच जोनिन मैं दुख अपार पायो।
गोविंदसरन दीनबंधु जानि सरन आयो॥

( ११ )

अरे भाई गोविंदै गाय।
ध्रुव हरि गायो सब सुख पायो तनके दुरित नसाय॥
प्रतिग्या राजसुता की राखी हरषी हरि बर पाय।
गोविंदसरन भज ताप नसावन हियरा अति सरसाय॥

( १२ )

आवरे मनमोहन जानी।
दरसन बिन अँखियाँ बिलखानी॥
निपट दुखारे प्रान बिचारे जैसें मीन दुखी बिन पानी।
दरसन दीजै बिलम न कीजै बृज जन दृग धन हरि अभिमानी॥
ज्यौं चकोर चंदा हित चातक स्वाति बूँद रति मानी।
आस लगाय उदास न कीजै गोविंदसरन करि दरद दिवानी॥

( १३ )

अरसीले अरुन नैन तुतरात कहत बैन,
झुकि झुकि झुकि झूमि उठत जामिनी जगौंहैं।
लाल पाग लटपटी सिर चटपटी जिय आन भांति,
बसन किये उलट पलट खात क्योंऽब सौंहैं॥
बिन गुन सोह माल अंग ढकत क्यों न नये ढंग।
पलन पीक अधरन मसि फिरत अपनी गौंहैं॥
गोविंदसरन बलि बलि या छबि पर जल वारि पिवत,
मूरि भाग गिरधर पिय हमहुँ सौं लगोहैं॥

( १४ )

मंगल आरती आरति बंती।
बारत जुगल कुंवर मुख ऊपर कनक कँवल सखी हिय हरसंती॥
घृत मन चाव भाव बाती धरि प्रेम प्रकास मोद बरसंती।
गौरस्याम छबि धाम काम रति बलि कीनें बिबिमुख दरसंती॥

जै जै जुगल अनादि एकरस जै जमुना बहैं रसवति भंती।
गोविंदसरन रसना सखि उचरत वारति आभरन मनि गन पंती।

( १५ )

प्रात समैं उठि श्रीभट प्रभु के चरन कमल कौ कीजै ध्यान।
आनदंकारी मंगलकारी असुभ हरन जु करन कल्यान॥
अवनि कलपतरु निज दासन कौं मारतंड टारन अज्ञान।
चिंताहरन प्रगट चितामनि कामधेनु जानत सब जान॥
मन मधुकरहि बसावहु निसदिन जो चाहत वृन्दावन ऐंन।
गोविंदसरन प्रभु पद-पराग-रस तन मन कौ अति आनँद दैंन॥

( १६ )

कहा सोयौ उठि जागि रे नर।
आलस तजि भजि नंद कैं नरवर चरन कँवल अनुरागि, रे नर॥
धन जोबन सुपनें की संपति नाहिन रहै कहुँ लागि।
अबहूँ चेति कहत समझाये पद पंकज गहि भागि॥
काल कराल ब्याल के खाये जरायौ जगत विष आगि।
गोविंदसरन बिन भव नहिं तरिबौ असत संत कूं त्यागि॥

( १७ )

दुहुँन की हिलगनि निपट अटपटी।
दुग सौं दृग तन मन अरुझानें तौहू चाह चटपटी॥टेक॥
जगे भोर अंसन भुज दीनें बतियां करत लटपटी।
गोविंदसरन पल होत न न्यारे पैं बिछुरनि हि सटपटी॥

( १८ )

ललन के लोयन परम सलोनें॥
कँवल मीन खंजर मृग गंजन कानन परसत कौनें॥टेक॥
रूप सुधा कर तृपित न होत सखि पीवत हैं दृग दोनें।
गोविंदसरन बिधि की रचना में ऐसे हुये अनहोनें॥

( १९ )

माधो निस जागे रागे अति अरुन नैंन।
पगिया लटपटी अटपटे धरत पांय चटपटी आनि २ लखि भयो चैंन॥

मन ही मन सुख निसि के भयो जागर मनो मदन ऐंन।
घूमत झुकत प्रेम मदमाते विहरत सब रति करी गैन॥
भूरि भाग मानत हमहू अब पधारे प्यारे प्रात नैनन फल दैंन।
गोविंदसरन या सोभा पट तर कछु दैबे कौं हैं न॥

( २० )

माधौजी तुम साहिब मैं चेरा।
यह भवसिंधु गहर खेवट तुम पार लँघावौ सबेरा॥
तृष्ना तरल तरंग तहाँ बड़ ममता पवन डुलावै।
राग द्वेष राघव मछ माहीं मन धीरत नहिं आवै॥
त्रिया ग्राहिनी बदन पसारें डर उपजत जिय भारी॥
काम क्रोध दोउ ग्राह अपरबल जाय न बिथा सँभारी।
कृपा रावरी पवन चलै सुभ तुम पद तटहि गहावै॥
वृन्दावन संतोक भूमि पर गोविंदसरन सुख पावै।

( २१ )

माधौ जी सदा दीन हितकारी।
जहाँ जहाँ भीर परी भक्तनि कौं तहाँ तहाँ बिपति निवारी॥
दूसासन कच गहे सभा मधि दुरपद सुता पुकारी।
'हा करुनामय नाथ!' सुनत आये जन मन बिपति बिदारी॥
गज कौं जल में चल्यौ खैंचि कें ग्राह महा हंकारी।
दुख टारन हरि नाम सुनत आये जन की सुरत सँभारी॥
इन्द्र कोप कीनौं ब्रज ऊपर मेघ माल लै डारी।
राखि लियौ अपनें परिकर तब नाम भयो गिरधारी॥
ठौर ठौर संकट संतन के टारे सब अघहारी।
विरद जानि अब गोविंदसरन कौं लीजै भुजा पसारी॥

( २२ )

सुमिरन कीजै हरि ही कौ।
सोवत जागत बैठत ऊठत जीवन (धन) हरि जी कौ॥
इन्द्री मन चैतन्य जासु बल प्रेरक सब ही कौ।
सुखदायक सुर असुर भूमिसुर ता बिन जग फीकौ॥

सुमिरन करि प्रह्लाद अभै हरि दियौ हरिजन टीकौ ।
गोविंदसरन गनत नहिं कोऊ मेटन भव भी की ।।

( २३ )

सुमिरन कीजै मन माधौ ।
निसि दिन भटकत विषय बासना काम दवा दाधौ ।।
छिन में करत रंग सत हरि पद थिर नहिं पल आधौ ।
कबहुँ स्वरग कहुँ नरक परन हित करम करत बाधौ ।।
मानुष तन खोवत क्यों बादि हि पुन्य रतन लाधौ ।

( २४ )

हरि मोहि किंहि गुन दरसन देहौं ।
साधन हीन दीन दुख मोचक निज पद छाँह छुवै हौ ।।
महा असोच पोच जदुनदंन घटि मैं तुमहिं लजैहौं ।
राखहु, लाज जानि अपनो जन अवगुन सबै अंचैहौं ।।
करनी डर करि सकत न बिनती कित अब लोग हँसै हौ ।
गोविंदसरन अब पर्यौ रावरी कबहूं तौ सुधि लै हौ ।।
रंगमहल में रंग भरे सोहैं राधामाधव सरस सलोनैं ।
मंद हँसनि दमकनि दसनावलि चपल नैन छुवैं कानन कोनैं ।।
रतिपति बलि कीन्हें या छवि पर आगें भये न ऐसे होनैं ।
गोविंदसरन सखि इकटक निरखत रूप सुधा पीवत दृग दोनैं ।।

( २५ )

सांवरे के नैन सलोनें ।
खंजन मीन कुरंग किये बलि कानन छुवत कोनैं ।।
पीवत तृषा मिटत नहिं आली सरस सुधा के दोनैं ।
गोविंदसरन कल अरुन बरन डोरें ब्रज जन मनके भौनैं ।

( २६ )

बाजी है बन बंसी हरि की ।
मत्तमधुर धुनि परी है स्रवन पुट गोपीजन मन फंसी, हरि की ।।
चौंकि परी चित्त अधिक चटपटी लगी मदन सर गंसी ।

जूंठ हमारी खाय सखी अब भई है बदन अवतंसी ॥
गोविंदसरन घर किहि विधि रहिये हरि गुन रूप प्रसंसी ।

( २७ )

बंसी बहुरि बजाय रे, तू नेंक ॥टेक॥
तीन ग्राम अरु सप्त सुरन मिलि पुनि वही तान सुनाय रे ।
थिर चर गति विपरीति भई अब यातें कछु न बसाय रे ॥
मुख-अंबुज की सुधा सींचि बलि तन मन मोहि सरसाय रे ।
गोविंदसरन यह है दुनिहाई घर बन कछु न सुहाय रे ॥

( २८ )

कुल रूप उजारी मेरी स्वामिनी ।
कंचन तन नीलांबर सोभित गुन निधि राधा नामिनी ॥
कुंजमहल राजत मोहन सँग जैसें घन सँग दामिनी ।
गोविंदसरन कौं सरन राखि अब हरि प्रीतम अभिरामिनी ॥

( २९ )

नवरंगी प्यारो मोहना ।
सीस मुकट कर लकुट पीतपट वृज जन दृग लगे गोहना ॥
कोटि काम अभिराम स्याम छवि अंग अंग अति सोहना ।
गोविंदसरन वृषभान दुलारी रूप अनूपम जोहना ॥

( ३० )

(दोऊ) प्रीतम परम सनेही ।
कनक पीठ राजत वृन्दावन एक प्रान द्वै देही ॥
जो कोउ जग में बस्तु अपूरब सो प्रगटी व्रज गेही ।
बेद भेद जाकौ नहीं जानत गोविंदसरन कहै एही॥

( ३१ )

मोहन रूप लुभानी ये अखियाँ ।
रोकी रहत न क्यौं हू सजनी पानिप सरस सुधा रस चखियाँ ॥
सखि गुरजन की भीर भेदि कै उड़ि जु मिलत बिन पखियाँ ।
गोविंदसरन सँकोच सँक्यौ परयौ भई सोभा सर झखियाँ ॥

( ३२ )

रामा रे मेघ स्यामा रामा ।
सिव अज सुरेस बंद्य पद संत सुधारन कामा ॥
नैन प्रान मन आनँद दायक सोभित सद गुन धामा ।
भक्त हेत अवतार लेत जग गोबिंदसरन पूरन कामा॥

( ३३ )

भजिये भगवंता हो, हरि कृष्ण अनन्ता हो ।
भ्रम भूल्यौ काहे हो, जग सुपन उमाहे हो ॥
भ्रम भूलत क्यौं कोउ नहिं अपना ।
जग मात पिता तिय कौ सुपना ॥
जवानी थिर नहिं संगा हो, अंजुरी जल रंगा हो ।
तोहि काल मजारी हो, खैहैं सांझ सबारी हो ॥
तेरी हरि बिनु कौन सहाय करैं ।
गये चरन-सरन सब काज सरैं ॥
दुल्लभ नर देही हो, करि स्याम सनेही हो ।
गोबिंदसरन बदीता हो, सुख सोय न चीता हो ॥
अब सहजहि तेरा बनाव बना ।
काहे चूकत काज भला अपना ॥

( ३४ )

श्रीराधासरवेस्वर जी की जोरी, गौरस्यांम सोभा नहिं थोरी ॥टेक॥
अद्भुत नव बृन्दावन ऐंना, सेवत जहाँ मैनन की सैना ।
अति पुनीत कालिन्दी तीरा, बहैं सीतल मंद सुगंध समीरा ॥
कनक भूमि मनि जटित सुहाई, तापर धूरि कपूरी छाई ।
हृदनी मध्य कमल कुल फूलैं, बास बिबस डोलत अलि भूलैं ॥
ललित लता फल फूलन फूली, सेवाहित षट रितु अनुकूली ।
फूले कलपतरोवर छहियाँ, रतन पीठि राजत गरबहियाँ ॥
नील पीत तन बसन बिराजैं, घन-दामनि की दुति लखि लाजैं ।
प्यारी सीस चंद्रिका सोहै, प्रीतम भाल मुकुट मन मोहै ॥
कनक फूल लुति लगत सुहाये, सखिजन नैन निरखि सचु पाये ।

मनिमय कुण्डल रुचिर अमोला, गंड रूप सर मीन अलोला ॥
मंद हँसन दसनावलि जोती, जुग नासा मोती कबि गोती ।
करत बिनोद हास परिहासा, मगन रैनि दिन रास-बिलासा ॥
रंगावति दंपति अनुकूली, सेवा हित तन मन रहै फूली ।
जुगलचंद लखि सखी चकोरी, गोबिंदसरन कहा कहुँ मति थोरी ॥

( ३५ )

मदनगढ़ लैन हित राधिका सजि चली ।
तप्त कंचन बरन गौर तन नील पट,
कुहू राका मनौ संगि राजत भली ॥
स्रवन ताटंक अरु बंक अलकैं छुटी,
सोहनी भौंह बेंदी सकल छबि छली ।
कंचुकी कवच सजि उरज सोभित भले,
सुभग कटि केहरी छुद्र घंटावली ॥
लाल लहँगा चारु चरन नूपुर रुनित,
बिपिन रस खेत की मुदित कीनी गली ।
रुनक झुनक सबद कल करत गज गति गमन,
मिलत गिरधरन हित संग लै निज अली ॥
सुरत संग्राम में सुभट मिलि दुहूँ जनैं,
दाय चायन करी सकल निसि रँगरली ।
हाव करि भाव लावन्य गोबिंदसरन,
बिरह थानैत की सैन सब दलमली ॥

( ३६ )

सुरतरु सेऊँ श्रीवृन्दावन घर ॥टेक॥
मन बांछित परिपूरन करिहै सरनि अभै पद गोपीबर गोपीबर ॥
जहाँ दुख लेस न पैये कबहूँ इक रस रहत जु सुखझर सुखझर ।
गोबिंदसरन मन हरन भूमि लखि को दीजै तिहि पटतर पटतर ॥

( ३७ )

चिदघन बृन्दाबन बृन्दाबन बृन्दाबन ॥टेक॥
निज बिलास को धाम स्याम छबि देखत दीस जु जड़ तन जड़ तन ।

पसु पंछी तरु धारि रहे तनु दरसन देखन मुनिजन मुनिजन मुनिजन ॥
सेवासुख कारन ब्रज प्रगटी सुरती सब गोपीजन गोपीजन गोपीजन ।
गोबिंदसरन बड़भागी सोइ धनि जिन राख्यौ निज तन निज निज तन ॥

( ३८ )

निरखत नैंन न कबहूँ अघात ।
देखत बिहारि-बिहारिनि सोभा लखि रति-मदन लजात ॥
बसन आभूषन अँग अँग सोभित गौर साँवरे गात ।
सोभा सिंधु तरंग बढ़ी अति पानिप रूप चुचात ॥
नैंन कँवल कर कँवल फिरावत बलि कीनैं जलजात ।
बोलनि हँसनि लसनि की सजनी कहि न परत कछु बात ॥
बृन्दाबन बंसीबट बिहरत मो हिय सदा सुहात ।
गोबिंदसरन बड़भागी जोई या सुख दिन रैंन बिहात ॥

( ३९ )

आरति नवल किसोर-किसोरी ।
संझा सखी बारत बिबिमुख पर गौर स्याम बनी जोरी ॥
रतन पीठि राजत मनि मंदिर उपमा रतिपति मोरी ।
देखत बनै कहत नहिं आवै अँग अँग बसै ठगौरी ॥
रति रगमगे जगमगे तन-मन लखि मोहत नहिं को री ।
गोबिंदसरन सहचरि त्रिन तोरति लगी दरस की ढौरी ॥

( ४० )

लाड़िली लाड़ गहेली, बसी है बिहारी हिय ऐंन ।
कहा चंद दुति मंद होत लखि रीझि कहत निज बैंन ॥
दामिनि सत वारौं अंग प्रभा पर दृग मृग खंजन सैंन ।
कटि केहरि वारौं हंस गवन पर देखत हू नहिं चैंन ॥
अद्भुत छवि पीवत न अघावत सखि समझावति सैंन ।
गोबिंदसरन अब तृपिति होत क्यौं निपट निपेटैं नैंन ॥

( ४१ )

हरि सो हितू न कोऊ तेरौ ।
बेद पुरान सुमृति यों भाखैं साँच बचन सुक केरौ ॥

स्वारथ परमारथ सब सुधरै जस विस्तार घनेरो।
तरि भवसिंधु विलंब नहिं कीजै पद-पंकज करि बेरो॥
तेरो कोउ न तू काहू को सोयो क्यों जागि सबेरो।
गोबिंदसरन जग स्वारथ लाग्यो सुत बांधव को मेरो॥

( ४२ )

जग में तेई जन बड़ भागी।
सुद्ध भाव मैं मगन रैंन दिन कृष्णचरन अनुरागी॥
कृष्नभजन सौं अंतर पारै सो अधरम करि जानै।
सोई धरम जासौं भक्ति होय दृष्टि स्याम रूप मन सानै॥
ब्रह्म रुद्र हरिदेव पुरानन तीनौ सम करि गाये।
बिष्णु भक्ति सौं मुक्त होत नर यों सुक जन समुझाये॥
हरि सेवा सौं होत बिमल मन त्यौं साधन नहिं होई।
गोबिंदसरन साधक चिंतन मन भक्ति करो सब कोई॥

( ४३ )

पन करि बस हो मेरे मना।
यह बंसीबट यह श्रीयमुना यह नवबृन्दावना॥
ये नव कुंज पुंज छबि छाई ये नव मृदु रज कना।
ये नव मोर घोर मुरली को ये नव गरजत घना॥
यह नव रसिक समाज काज हित बसैं जुग बन्नो बना।
सकल सुखन कौ सार जुगल जस गाय लै तू रसना॥
यह नस्वर ब्यौहार भार तजि कोऊ नहिं अपना।
गोबिंदसरन रहि बन बिहार सुख, छाँड़ि झूठि कलपना॥

( ४४ )

कमल नैंन सुनि विनती मेरी।
जारत हैं सहि चक्र सुदरसन अहो करुनामय रंचक हेरी॥
सरन अभय प्रद आरति नासन जो बेदन बिरदाये।
यह जिय समुझि सुनहु कमलापति चरन रावरे ध्याये॥

भाजत फिर्‌यौ लोक लोकन मैं सुख रंचक नहिं पायो ।
गोबिंदसरन अब राखि प्रानपति महा भीत अकुलायो ॥

( ४५ )

भरोसो माधौ को मोहि भारी ।
आन देव कबहूँ नहिं जाचौं हरि को किये बड़ारी ॥
रावन ईस सीस किये अरपन दई लंक तिपुरारी ।
राम बिमुख आयो सरन बिभीषन कियो लंकेस खरारी॥
ध्रू गही सरन दियो ध्रुवपद प्रभु तन मन आस तिहारी।
गोबिंदसरन औगुन तजि गुन गहि बकी दई गति महतारी ॥

( ४६ )

जन अनन्य जग इहि बिधि जीवत ।
निस दिन जुगल भावना भीनें श्रवन सुधा लीला रस पीवत ॥
करत उपाय चाह मिलिबे की आन उपाय न कबहूँ छीवत ।
आन सुनें नहिं भावे रसना हरि के गुन मन ही मन सीवत ॥
थिरचर भाव स्याम-स्यामा को हरि रस जाहि अमी वत ।
गोबिंद मति रति जुग पद पंकज ग्राहक सार बड़े जु अली वत ॥

( ४७ )

महा कठिन 'रसिकन' की रहनी ।
चातग ज्यूं रटि लगो स्यामघन दुखहु आन सुभाय न कहनी ॥
पतिबरता की पति ही गति मति क्यौं सर माँगन दाम उगहनी ।
बग अरु हंस एक रँग दोऊ छीर नीर निरवारन चहनी ॥
बिमुख उलूक चातुग हरिजन की सरवर कर ये बात न सहनी ।
नवन नीच वारि ह्वै रहनी गोबिंद कठिन यह बात निबहनी ॥

( ४८ )

धन्य हरि भगति तिहुँ लोक पावन करन ।
बिमल जस गाय सतसंग बंसी-धरन ॥टेक॥
गंग दुरितहि हरै ताप बिधु तें टरं, कलपतरु मनरली ज्यौंव पूरे ।
पाप अरु ताप सब जात तिहिं काल अरु,सफल मन काम सतसंग रूरे ॥

निगम तें अगम अरु अगम ते भागवत, भागवत ते भक्ति प्रगट दरसी ।
भक्ति ते भाव अरु भाव ते लछन भई, बिना जन संग नहीं परै दरसी ॥
गोबिंद सेवग जिते तुव चित धरति ते, बचन मन करम हरि चरन राचौ ।
सत्य संकल्प हरि करहिं सब बिधि कृपा, भक्ति बच्छल धरै बिरद साँचौ ॥

( ४६ )

भजिये गोबिंद पद पंकज ।
इहि भवसिंधु तरन नौका दृढ़ निसदिन ध्यान धरत जाको सिव अज ॥
तीरथ सदन मदन लखि मूछित अरुन बरन नख चंद्रन की सज ।
अंकुस कुलिस स्वस्तिक जंबूफल अभै दैन राखी चरनन ध्वज ॥
इनकौं तजि जे भजत आन सठ अमृत तजि सो खात अखज खज ।
निज जन आरति हरन चतुरबर गोबिंदसरन बलि जावत तीनि रज ॥

( ५० )

सांवरे हौं वारी रे ।
मुरलि बजाय गाय कल गौरी लगै सुनि श्रवन सु प्यारी रे ॥
बदन कमल मकरंद भर्‌यौ सोहै बड़ी अंखियन अनियारी रे ।
दृग मधुकर तहाँ रहत लुभानें जीवनि-मूरि हमारी रे ॥
मूरति मोहन सोहन अँग लखि बासर बिरह बिसारी रे ।
गोबिंदसरन बिधि की रचना में अबलौं भई न निहारी रे॥

( ५१ )

नटवर बपु बन ते बनि आवैं ।
गिरधर की छबि नैनन भावैं ॥
सुधग नृत्तत सुलफ दिखावैं ।
ता तन नन नन भेदन गावैं ॥
सा री ग म प ध नी नि ध प न ग री सा ।
सरि सरि गम गम सुर उपजावैं ॥
तकिटि तकिटि धुं धुं बरसावैं ।
अंग मटकि तन मन ललचावैं ॥
बंसी धुनि जु सुधा बरसावैं ।

ब्रज जुवतिन मन ताप नसावैं ॥
गोप मण्डली मध्य सुहावैं ।
गोबिंदसरन के नैंन सिरावैं ॥

( ५२ )

कन्हैया बटपार ठाढ़ो दई ।
जिहि डर डरपत हो मेरी सजनी सोइ अचानक भई ॥
खोरसाँकरी गहबर महियां हौं इकली रहि गई ।
गोबिंदसरन चंचल दधिदानी कीरति सब जग छई ॥

( ५३ )

रूप उजारो प्यारो बन ते बनि आवै ॥
रूप उजारे मोहना प्यारे सुन्दर नैंन बिसाल हो ।
तलफत प्रान प्रानधन जीवनि लीज्यो बेगि संभालि हो ॥
नीर पीर जानै नहिं क्यौं ही जीवै मीन के जाल हो ।
चन्दा दीन चकोर कै लिख्यो निठुर बिधाता भाल हो ॥
वह सूरति देखे बिना अब पर्‌यो रहै चित्त चाल हो ।
गोबिंदसरन चित चाह बढ़ी दृग लखौं लटकती चाल हौं ॥

( ५४ )

श्रीमुखकमल बचन यों भाख्यो ।
सुनि दुरबासा भक्तन मो सौं अंतर रंच न राख्यौ ॥
मात पिता सुत बांधव दारा मो हित सब बिसराये ।
प्रेम मगन अवनी मैं डोलत वे मेरे मनभाये ॥
मो कौं जन सुवावै जब सोऊँ उनकौ जगायो जागौं ।
जेऊँ जिवाये पिऊँ पिवाये भूख लगे तें मांगौं ॥
वे मेरे हितु हितु हौं उनकौ वे मेरे सुख सुखिया ।
उनके सुखमें सुखी रहत नित संत दुखी मैं दुखिया ॥
मेरी हु कानि राखि जिनि भाई यही तुहि बात जताऊँ ।
गोबिंदसरन दीनबंधु जानि सरन आयो ऊंच नीच·····॥

( ५५ )

हरि की लीला सब मन हरनी।
श्री भागौत महारस नृप सौं मति अगाध सुख बरनी॥
जीवन मुक्त ब्रह्म परि पागे तिनहूँ कौं बसि करनी।
रसिक नृपति गुन कथा तहाँ जहाँ रोम पुलक तन धरनी॥
राखी हरि जग निज गुन नौका कृपा जु करि भवतरनी।
तरे तरत पुनि तरिहैं यातें सकल दुरित-दुख दरनी॥
जनम मरन जग रोग बड़ो अति ताको औषधि जरनी।
गोबिंदसरन कहैं बिषयिन के मन श्रवनन सुख बिस्तरनी॥

( ५६ )

अरे मनवा हरि भजिये तो भली।
श्री बृजराज कुँवर पद अंबुज पी मकरंद अली॥
भूत पितर अरू देव सबन के घर घर रंगरली।
भूरि भाग हरि-हरिजन जन की बिगसत चित्त कली॥
यह औसर दुल्लभ पुनि पैहौ नर तन मुक्ति गली।
गोबिंदसरन सलिता के जल ज्यौं बय निति जात चली॥

( ५७ )

आवत कंवलनैन गिरधर पिय गायन कैं पाछैं।
स्याम सुन्दर मन मोहन सोहन नटवर बपु काछैं॥
बदन सुधाधर मधुर पान हित ब्रज तिय अनुकूलो।
पूरन राकापति देखें मनु कुमुदनि गनि फूली॥
मंद हसनि चितवनि बोलनि पुनि मधुर सुरनि गावैं।
ठुमकि चलनि अति सोहनी कहा गज यह छबि पावैं॥
कारी मन मंजीठी धौरी घूमरि सुनि मृदु बैन।
हुंकृत सबद सुनावहीं छबि पीवत भरि भरि नैन॥
नंद जसोमति दृगधन मोहन निरखत प्रेम भरे।
गोबिंदसरन करि आरती नौछावरि प्रान करे॥

( ५८ )

राग पूरी

मंगल विधायिनी सुख दायिनी है।
फल च्यारि तीन लोक पावनी सु कविन बखानी है॥
मवन मंथन कथा मन सुधरे जथा, और साधन,
बृथा, बात नहीं छानी है॥
तुव मुख पंकज तें श्रवत हरि कथा सुधा,
श्रवन पीवति मति गति तृपतानी है॥
बाधत न छुधा तन जद्यपि दुसह अति,
गोबिंदसरन मोहि बाधत न पानी है॥

( ५९ )

कहा कहूँ प्रभु तोरी बड़ाई।
सिव सनकादिक ब्रह्मा नारद सेसहु पै बरनी नहिं जाई॥
देखो इचरज जल की बून्द तें ऐसी सुन्दर देह बनाई।
तरसत हैं बैकुंठ के बासी सो तें बड़ भागन पाई॥
घोर अंधार सोर में पड़ी यो ज्यु पंछी पींजर मांही।
देखो ऐसी करमन की गति याकी मूरखताई॥
अब इनकी सुधि क्यु न लेत हौ मेटौ मन कुटिलाई।
गोबिंदसरन बिना बहि जातौ रज होय नौका गहाई॥

( ६० )

रूप उजारौ प्यारौ बन तें बनि आवै।
गिरि की धातु अँग अँग चित्रित कियें अलक डुलनि मेरौ मन डुलावै॥
श्रीमुख कमल कमल अद्भुत छबि गोपी दृग मधुकर लखि लुभावै।
गोप विमल कीरति कल उचरत बंसी ध्वनि तीखी तान गावै॥
प्रेम मगन गोपी सुधि बिसरी कँवल नैन छवि देखें सुहावै।
गोबिंदसरन गोबिंद गोकुल आये जसुमति लखि हिय मोद न मावै॥

( ६१ )

मनुवां मेरे करि माधो सों प्रीति।
बिषै बिषम बिष ज्यौं तजि भाई छांड़ि सकल विपरीति॥

जगत मोह कैं जाल परै जिन करि हरि चरन प्रतीति।
गोबिंदसरन तजि के कुकरम गति गहि हंसन की रीति॥

( ६२ )

हरि हरि लागी रहत रटी।
बिमल बिमल गावत माधव गुन रसना नगन जटी॥
जिन यह हरि रस चाख्यौ नाहिंन तिनकी बुद्धि लटी।
गोबिंदसरन हरिभक्ति बिमुख नर तिनकी अकल घटी॥

( ६३ )

क्यौं हरि प्रीतम बिसरायौ रे डोलत भूल्यौ रे।
सतसंगति कबहूँ नहिं कीनी बिषयन सौं अनुकूल्यौ रे॥
मानुष तन धरि कछु न कमायो मूलहू तेरौ डूल्यौ रे।
गोबिंदसरन झूठे सुख सौं पगि मन में रहत अति फूल्यौ रे॥

( ६४ )

राम न बिसारो रे गैलाडो सारे।
घर धंधा में जनम गमायो जम देसी तेरे ठोसा रे॥
छाँड़त सार असार सनेटत कौन जगत मैं तोसा रे।
गोबिंदसरन चित चेत सबेरौ हरि बिन कर न भरोसा रे।

( ६५ )

वृजराज मौ पै कृपा करो।
कृपा करौ भव पीर हरौ॥
तुम अगनित पतित उधारे।
भवसागर पार उतारे॥
मैं अधम करम को हीना।
मन पद पंकज नहिं दीना॥
वेद तंत्र बिधि देवा।
तेरी हौं नहिं जानत सेवा॥
मेरे मात पिता तुम भाई।
तेरी साँची एक सगाई॥

नहिं जप तप जोग न पूजा।
मेरे तुम बिन देव न दूजा॥
मन चरन कँवल अनुरागै।
कर जोरी यहै जन माँगै॥
गोबिंदसरन निज दासा।
मन चरन कँवल की आसा॥

( ६६ )

नाम हरि अमृत संजीवनी।
व्यास बालमिक सुक पारासर जैदेव करत धुनी॥
चितामनि चितत फलदायक निस दिन रटत मुनी।
सेस सहस मुख नाम उचारत औरहु गुनत गुनी॥
अमल कमल साधन को राजा गोबिंदसरन भनी।

( ६७ )

मिथिला आय जनकपुर हंसा। गुन रूप सील अवतंसा॥
ठाढ़ी जनक लली जु अटा हैं। मानों रूप की घटा हैं॥
सजनी सौं बोली बैना। ये काके कुंवर छबि ऐना॥
तन साँवल सरस सलोनें। सुन्दर ऐसे भये न होनें॥
यासौं मन लगन लगी है। मेरी नींद भूख भगी है॥
पितु कठिन धनुष पन लीनौं। कोउ कहै जाय कहा कीनौं॥
ये मृदुल मनोहर गाता। यह धनुष कठिन अति ताता॥
सब घातैं भई अकामी। मैं इनकी पतनी ये स्वामी॥
जनकसुता की करुना बानी। रघुपति अपने मन मानी॥
सिव कठिन धनुष लै तोर्‌यौ। भट बीरन कौ मद मोर्‌यौ॥
भयो ब्याह बधाई भलियाँ। सब गली गली रँगरलियाँ॥
दुलही लै निजपुर आये। भये गोबिंदसरन मन भाये॥

( ६८ )

हरि के साँची प्रेम सगाई। सो तो बिदित बेद बिधि गाई॥
नहिं अबरन बरन बिचारे। एक साँची प्रीत निहारे॥

गज व्याध कहा तप कीन्हौं। हरि तिन्हैं अपनपौ दीन्हौं॥
हरि जग्य भोग नहीं आयो। ब्रज घर घर दही चुरायो॥
गोपिन के रिनी कहाये। बस प्रेम नेम बिसराये॥
जाहि निगम ब्रह्म करि टेरैं। तिहिं गोपी घर तन घेरैं॥
वा प्रगट कूबरी दासी। तप कियो न गइ वह कासी॥
कपिपति के रूखन बानी। ताहि किये रघुपति अगवानी॥
सबरी कुल करम न लख्यौ। जन जस बढ़ाय सुख पेख्यौ॥
कछु गोध न जोग कमायो। पितु सम रघुपति हिय भायो॥
बिन भाव न घट उजियारो। बिन तेल दीप किन बारो॥
जल ऊँच नीच नहिं देख्यौ। गंगा मिलि गंग सु पेख्यौ॥
भक्ति बिन जप तप लगत न नीकौ। (बिजन) जिमि बिना लौन सब फीकौ॥
हरि गोबिंदसरन सुख दानी। जन भाव भक्ति रुचि मानी॥

( ६६ )

• राधे तू मेरौ जनम सुधारौ।
अब मोहि बृन्दावन में डारौ॥
महा अपावन खान औगुन की,
ऐसी जान न बिसारौ॥
निरबल दीन जान अपनावौ,
येही बिरद संभारौ॥
जनम-जनम घर जाई चेरी,
अब कहा देत हौ टारौ॥
गोबिंदसरन मोस्यूं कृपा कीज्यौ,
गहौ क्यौं न हाथ हमारौ॥

( ७० )

मेरे हरि नाम परम धन नीकौ।
खरचत खात घटत नहीं कबहूँ,
जीवनि है सब जीकौ॥
जाकौ मनि मन निसुदिन सुमिरत,

सिव बिरचि सिर टीकौ ।
गोबिंदसरन या रंग रंगि रह्यौ और लगत रंग फीकौ ॥

( ७१ )

जाकैं हरिधन सो धनवंता ।
और दलद्री अधन जानिये भगति बिमुख भगवंता ॥
निति मतिवारे हरि गुन गावत बारामास बसंता ।
गोबिंदसरन कहैं रंक इंद्र कौं बल जु राधिकाकंता ॥

( ७२ )

हरि हरि भजिये प्यारे जग में जीवन थोरा ।
माल मुलक ये दौलत दुनियाँ संग न चाले हाथी घोरा ॥
घरि घरि पल पल गिनत रैन दिन सिर पर काल करोरा ।
गोबिंदसरन कहैं सतसंगत बिन अचुत गये धनजोरा ॥

( ७३ )

गाफिल क्यों रे भाई अब चित्त चेत दिवाने ।
छुट्यौ नहीं कोई कालबली ते कितेग राऊ राने ॥
दान पुण्य तोपैं सुकृत न ह्वै है जब बैठे जम थाने ।
गोबिंदसरन रहो सतसंगत में ये हरि स्याम के बाने ॥

( ७४ )

एरी हौं तो या छबि पर बलिहारी ।
रतन सिंहासन बनिठनि बैठे रूप रासि पिय प्यारी ॥
धाम काम तजि बिबस भई हौं जोरी जब तें निहारी ।
गौर स्याम तन नील पीत पट घन-दामिनि अनुहारी ॥
जैसोहि प्रफुलित नव बृंदाबन तैसिय 'सरद उजियारी' ।
गोबिंदसरन सोभा संपति लखि अंखियाँ टरत न टारी ॥

( ७५ )

बनी है नीकी राधा माधव जोरी ।
गौर स्याम तन नील पीत पट वारौं रति मदन करोरी ॥
निरखि निरखि छबि जीजै री सजनी इनकी पटतर कोरी ।
गोबिंदसरन सोभा संपति लखि कहा बरनौं मति थोरी ॥

( ७६ )

आज मेरे आये री मन भावन।
बदन चंद लखि दृग चकोर भये तन मन ताप नसावन॥
आवौ कीजै भवन बधाई गावौ पिय जस पावन।
गोबिंदसरन सब बिरह बिथा गई हरित बेलि ज्यौं सावन॥

( ७७ )

मतवारौ क्यौं भयो बावरे।
भूल्यौ फिरै कुपंथ गुरगम बिन लियो मुख न हरि नाँव रे॥
अहंता ममता छार सिर डारत वृथा बिहावत आव रे।
ऐसौ सभौ बहुरि नहिं पैहै चूकत काहे दाव रे॥
जोबनमद धनमद, कुलमद, बसि कहूँ नहीं ठिक ठाँव रे।
गोबिंदसरन कंचन कामिनि लगि लोभी भूल्यौ निज गाँव रे॥

( ७८ )

सतसंग बिमल जल न्हाइये।
जनम जनम की मिटें हारि चलि साधु सरोवरि जाइये॥
सरधा लाय फुलेल सरस तन सुमिरन करि सरसाइये।
करहु उबटनौ कथा श्रवन हरि मल अभिमान छुटाइये॥
दया अंगोछे अंग पोंछ धरि नवनि बसन छबि छाइये।
गोबिंदसरन जस रसना गाये भक्ति मुक्ति फल पाइये॥

( ७९ )

माधौ जी यह प्रसाद हौं पाऊँ।
तुव पद जुगल अमल पंकज मधि मन मधुकरहि बसाऊँ॥
मथुरा बसि बृन्दाबन बसिकै पुलिन धूरि सिर नाऊँ।
कुंज कुटी छबि जुटी निरखि कै नैननि हियौ सिराऊँ॥
श्रीभागौत सुनौं नित श्रवनन गुन गन रसना गाऊँ।
रसिक अनन्यन सौं नित हिलमिल तुव पद प्रीति बढ़ाऊँ॥
गोबिंदसरन यह बिनती मेरी वृथा न आव बिहाऊँ।
करम बिबस है नरक स्वरग गति पै तुव दास कहाऊँ॥

( ८० )

रसना हरि हरि भजि मति बौरी ।
चाखि अंगूर भूर रस जामैं साधन फल जु निबौरी ॥
स्वरग कथा ललचावत बीनन तेरी मति क्युं बौरी ।
मुक्ति आस हरिजन नहिं राखत दुरबल भूत ठगौरी ॥
जोग परम उदवेग करत अंग परम बिरस पुनि भौ री ।
निरभय सदा एकरस गोबिंद रट तेरो भाग बड़ौ री ॥

( ८१ )

तुला तुल्यौ नाम साधन ते गरबौ ।
जोगि जग्य जप तप तीरथ ब्रत ज्ञानहु याते हरबौ ॥
नाम प्रताप आनि उर अंतर आन उपाय न करबौ ।
और न जतन नाम नौका हरि भव दुस्तरि कौ तरिबौ ॥
संकर सौ ततबेत्ता जग कौ राम सार चित धरिबौ ।
गोबिंद साधन मृग नर हरि पति नाम ही सरन उधरबौ ॥

( ८२ )

भूल परी मैं आज री माई, प्रेम नगर की बांकी ये गलीन में ।
इन गलियन में कृष्ण मवासी कैसें रहेगी लाज री ॥
प्रात समै उठि मग वो रोकै वो ठाढ़े सब साज री ।
श्रीगोबिंदसरन प्रान हर लै गये जैसें लवा संग बाज री ॥

( ८३ )

मन हरि की सरन सुख पाइये ।
सब बिधि आन आस तजि भाई हरि ही के गुन गाइये ॥
हरि पद पंकज बसत अमित गुन सौरभ सरस लुभाइये ।
सेवत लोभी रसिक भक्त जिहिं पलहू नहिं बिसराइये ॥
प्रभु सौ दाता कौन जगत में सो क्यौं न मोहि बताइये ।
गोबिंदसरन सिंह सरनौ तजि स्याल सरन कित जाइये ॥

( ८४ )

श्रीराधेकृष्णा गोविन्द गोपाल ।
लाल पाग सिर मोर चन्द्रिका लटकन बेंना भाल ॥

नील पीत पट अंग सलोनैं बिंदुली तिलक सु रसाल।
कुटिल भौंह अलकावलि सुथरो चन्द लगे अहि बाल॥
अनियारे कजरारे लोयन बेसर मुक्ता हाल।
कंठ सरी दुलरी हीरन की उर गज मोती माल॥
कटक चुरी मुदरी कर कंकन कटि तट किंकिनि जाल।
मुरली बजै मंद सुखकारी नूपुर सब्द रसाल॥
हाव भाव लावन्य सिन्धु दोउ गज गति चाल मराल।
गौरस्याम अद्भुत सोभा लखि गोबिंदसरन निहाल॥

( ८५ )

बंदौं श्रीगुरु चरन सरोजं।
अमलासय जग प्रगट ग्यानघन हरि लीला गुन मुख अम्भोजं॥
ग्यानांजन दयो जन अंधन हित तिमिर दूर करि आनँद रूपं।
मुनि मनसा कौ ध्यान जोग्य बपु सरनागत रच्छिक बड़ भूपं॥
भक्ति ग्यान बैराग रूप प्रभु भव जु रोग कौ बैद उदारं।
दीनबन्धु करुनामय स्वामी गोबिंदसरन जग अनन्य अधारं॥

( ८६ )

यह कलि है दोसन की राई।
कीनैं साधन हीन दीन जन सब की मति बौराई॥
पै यामैं इक बड़ौ महा गुन कोऊ करौ मन लाई।
कृस्न कीरतन मुक्ति होत नर नृप सौं सुक मुनि गाई॥
और उपाय न हरि प्रापति कौं छांड़ि कपट चतुराई।
गोबिंदसरन रसना रटि हरि हरि औसर चूकि न भाई॥

( ८७ )

मन विहंग भजि कृष्ण कलपतर।
च्यार पदारथ फल फलि झूम्यौ देत सबन जो जात सरन नर॥
छाया आय गही जिन सीतल तिनकौं मिटि गयौ काल ब्याल डर।
बिधि सिव सनकादिक नारद पुनि सारद हू को है यह निज घर॥

( ८८ )

श्रीकृष्ण चरन भज मंगल कारक ।
प्रथम ही जान भजे उर अंतर सकल कला बिधि बुधि बिस्तारक ॥
तुम पाँयन प्रतिपल हुं बिसारत तिहिं बल काज सकल को सारक ।
नागराज नगधर पाये रति पद परताप सीस धर धारक ॥
सनकादिक अरु नारद मुनिगन तिहि बल भये बिस्व उद्धारक ।
अजामील पापी भयो पावन सुत मिस तिहिं सुमिरन कियौ बारक ॥
श्रीप्रह्लाद प्रतिग्या राखी भई बकी पवित्र (जदपि) सिसु मारक ।
गोबिंदसरन मैं गही हैं जान कें ऐसौ नहीं कोई पतित उधारक ॥

( ८९ )

श्रीवृषभान सुता पद बंदौं ।
बृजराज सुवन कर जावक रंजित निरखि निरखि मन अति आनन्दौं ॥
गौर बरन कल अरुन चरन तल इन्दु बरन राजत नख स्रेनी ।
स्यंदन सुधा कलस अंकुस जव उरध रेख निज जन सुख दैनी ॥
कंबु कुलिस सुभ मीन चक्र ध्वज नंदनंदन मन आनंदकारी ।
गिरवर आदि जुगल पद लांछन भक्तन हित सब ही सुखकारी ॥
जन मधुकर भये मधुर गंध बस प्रेम मगन निसदिन मन दीनें ।
यह सुख पग मुक्ति सुख त्यागे गोबिंदसरन आनंद रस भीनें ॥

( ९० )

होजी हरि मोने काहे कौं बिसारो ।
क्युं भटकाबो घरि घरि मांही लियो हो आसरो अब आये तिहारौ ॥
मैंहू पसु सम लाज न आवै कर्मन को सिर बंधि रह्यौ भारो ।
क्युं न संभारो दीन जान ये मूरख सौं जु कहा चित्त धारो ॥
अपनो बुरो करत हैं आप ही अैसा को प्रभु ओर निहारो ।
एक तनक चितवो या कानी कहा देत होई नंस ही टारौ ॥
गोबिंदसरन चरन रज येही करि कृपा ब्रजरज मैं डारो ॥

( ९१ )

पौढ़े राधामाधव रंग महल मैं ।
सरस सुगंध सचि सखीन सँवारी सेज,

तापै दोऊ बात करत हैं मदन गहल मैं ॥टेक॥॥
भाजन भरे मधुमादिक बिबिध रस,
मनि दीपक दुति बदन चहल मैं।
गोबिंदसरन प्रभु दुल्लभ यह सुख श्रीभट प्रताप मैं दासी टहल मैं ॥

राग सोरठ

( ६२ )

पौढ़ें री राधाधव सुख संपति।
अधर थकित मुसकान दसन दुति,
अनुराग भरी सहचरी पद चंपति ॥टेक॥
अंसन भुजा परसपर सोभित,
मृदुल चरन परसत जिये कंपति।
झपि उघरत दृग रूप लालची,
नव छबि लखि पुनि पुनि पल झंपति॥
कंचन मनि मरकत मनि जोरी,
रूप रतन मन संपुट ढंपति।
बिपुन बिहारी रसिक पुरंदर,
गोबिंदसरन हिय ये बसो दंपति।

राग बिहागरो

( ६३ )

नींद भरे लोयन अति लौंनें।
यह छबि देखन पिय हुलसौंनें॥
झपकि खुलत सो लगत रुचिर जुग रूप सरोवर जनु झख छौंनें।
रति लंपट पिय फूंकि जगावत चौंकि चपल संभ्रम रस भौंनें॥
आलस बस जानी जब प्यारी तब दोउ सैन भवन प्रति गौंनें।
सुख पागे अनुरागे नागर रसिक नृपति जग को अस हौंनें॥
उरझनि प्रेम की कहा कोउ बरनै कसौटी लीक जैसै पागी हैं सौंनें।
स्रमित जानि (स्याम) पिय श्रमकन पोंछत निज अंचल के कौंनें॥
गोबिंदसरन सखि लतन ओट ह्वै रूपसुधा पीवत दृग दौंनें।

राग विहागरो

( ९४ )

बनी हैं रुचिर विहारो-विहारिनि जोरी ।
अद्भुत गौरस्याम छबि निरखत वारौं रति मदन किरोरी ॥
कुंजमहल छवि पुंज भरे सौहैं इनकी पटतर को री ।
सेवा हित (सत) संग सखी रंगीली कोउ सांवरि कोउ गोरी ॥
बसन अभूषन अंग अंग लौंनें कहा बरनौं मति थोरी ।
गोबिंदसरन प्रभु जब तैं निरखे तब तैं लगी ठगौरी ॥

राग विहागरो

( ९५ )

भजि मन राधिकाबर चरन ।
पाद-पद्म-प्रतीति करि दृढ़ यहै तारन तरन ॥
गोप गायन संग बनि बिधि संभु सासन धरन ।
ध्यान पथ मुनि करत उर भये सुद्ध अंतः करन ॥
आनंद निधि जग दुरित हारी अखिल पावन करन ।
जात औसर भलौ बीत्यौ कहत गोबिंदसरन ॥

राग विहागरो

( ९६ )

हमारैं साहिबनी बन-रानी ।
बेद पुरान जासु जस गावैं नन्द-नँदन सुखदानी ॥
रूप अगाध हरन भव बाधा राधा भूषन बानी ।
एक भरोसौ बल उनही कौ बात नहीं यह छानी ॥
जाके प्रेम पग्यौ मन मोहन बृन्दाबन रजधानी ।
करत बिहार रसिक चूड़ामनि पल पल तृपति न मानी ॥
जोगी जपी तपी सन्यासी रस बिहीन जे ज्ञानी ।
यह सुख तिनकौं सुपनैं हू नहिं गोबिंदसरन बखानी ॥

राग विहागरो

( ९७ )

गोबिंद के गुन गाय रे, पिंजरे के सुवा ।
मोती स्वास अमोल है भाई हरि के नेग लगाय रे ॥

परचौ करम के फंद में तोसों निकल भग्यो नहिं जाय रे।
चेत अचेतन कहति तोहि हौं काल मजारी खाय रे॥
साधुसंग तरु डार बैठि चढ़ि तू प्रेम अमृत फल पाय रे।
गोबिंदसरन औसर भलो तेरो जनम पदारथ जाय रे॥

( ९८ )

हरि अमृत फल चाखि री, मेरी मति मैना।
ताहि लागि भये अजर अमर जन बेद पुरानन साखि री॥
मैंना 'हरि, मैं ना' रटै दूध भात निति खाय री।
'मैं मैं' अजया सुत कहैं तिहि गुन गरो कटाय री॥
हरि को कियो यह सब भयो हरिहि करै सो जोय री।
करि बिस्वास अनत जिन भटकै मनसा चरन समोय री॥
परी कुमति कें पीजरे कछु छुटिबे कौ न उपाय री।
जौ चाहत परिकर मिली गोबिंदसरन जस गाय री॥

राग बिहागरो

( ९९ )

मानुष तन बिनु पुन्य न पैबौ।
राधामाधव भजि तजि आसा हरि बिमुखन के संग न जैबौ॥
साधु संग में कृष्न कथा रस पी पी श्रवनन काल बितैबौ।
गौरस्याम सोभा के वारिधि निरखि नैंन मीनन सुख दैबौ॥
समझि बिचारि देखि मन अपनै तजि अमृत बिष बिषया खैबौ।
गोबिंदसरन इहि सुख मन राखहु क्यौं भावै जम द्वारै जैबौ॥

राग बिहागरो

( १०० )

मनुवाँ हरि हरि हरि भजन भला।
धूमधाम में द्यौस गमायौ यह जग-धन्धा जला॥
सुत बन्धू सब स्वारथ पागे तू क्यौं जाय रला।
गोबिंदसरन चित चेत सबेरा क्यौं दुख लेत उला॥

( १०१ )

देखो 'हरि बिमुखन' की करनी।
पर निन्दा-हिंसा परद्रोही तिनके भार दुखित तन धरनी॥

हरि चरनामृत विमुख अधम नर पीवत मदिरा नरक वितरनी।
रुचि सौं सुनत बिषै की गाथा सुनत न कथा स्याम मन हरनी॥
हरि अमृत फल त्यागि बिषै बिष खात न जानत परबस परनी।
गोबिंदसरन चिंता तिनकी मन पार चहत पाषान सु तरनी॥

( १०२ )

हरि बिन कौन सहाइ करैगौ।
अंतक हाथ प्रान परबस भये जब जम जाल पसार परैगौ॥टेक॥
मात पिता बांधव सुत दारा कोउ न धीर धरैगौ।
चरनकँवल अनुरागि जान सठ तबहि काज सुधरैगौ॥
नर तन रतन पाइ हरि हित करि तब हरि ढारि ढरैगौ।
गोबिंदसरन निरभै चाहत भयो हरि को ओर ढरैगौ।

( १०३ )

हरि बिन कौन सु भजिबे लायक।
जाकी सरन अभै पद पइये दुख में होत सहायक॥
धरनी हरी हर नाख रसातल बिधि भयौ बिह्वल वायक।
सूकर रूप हत्यौ धर बिधि दई भक्ति बछल खलु--खायक॥
दीनौ बर जु बकासुर कौं सिव जान आपनौ पायक।
भगे असुर ते डरे उमापति सरन गही हरि लायक॥
हत्यौ इंद्र ब्रित्तासुर दुख भयौ पद तैं परचौ लागि मनसा यक।
तारापति करि हरि आराधन मघवा सुरपुर पुनि लै दायक॥
सूरज रथ कौ पंगु सारथी देखत नैंन अगमनी धायक।
प्रभु बिन कौन करम कौं मेटै हरि ही सबकौ बनक बनायक॥
सरन अभै दायक सुर नायक निज जन नेह निबाहक।
गोबिंदसरन औगुन न धरत चित एक भक्ति के गाहक॥

( १०४ )

जग में हरि के जन बड़भागी।
निस दिन भजन भावना बितवत चरन कँवल अनुरागी॥टेक॥
प्रेम मगन गावत माधौ गुन हरि धन भये बिभागी।

धारत तिलक माल तुलसी की बुधिसो तें जागी (?) ॥
दरसन पावन होयँ पतित जन जिनकी मति हरि पागी ।
गोबिंदसरन बिस्व-उपगारी रसना हरि रट लागी ॥

( १०५ )

मेरे प्रान प्यारे राधामाधव राजत रंगभीनें ।
गौर साँवरे सरूप, कहि न परत छबि अनूप,
गावत हिय प्रेम उमगि, सरस सुर नवीनें ॥टेक॥
नव किसोर नव किसोरी, भई न होनी ऐसी जोरी,
आलस सरस बलित ललित, अंसन भुज दीनें ।
कबहुँ बिहँसि बात करें, मुस्क्यावनि फूल झरें,
अनुराग उमंग बढ़ी, रति–मदन छबि छीनें ॥
तैसोइ सरद चन्द उदित, प्रफुलित बन देखि मुदित,
बढ़्यौ है सुख सार सिन्धु, सखिजन दृग मीनें ।
नेति नेति कहत निगम, एक प्रेम ही तें सुगम,
गोबिंदसरन प्रभुता तजि, भये अति आधीनें ॥

( १०६ )

नीके बिहारी-बिहारिनि प्यारे ।
कुंजमहल राजत रँगभीनें सखि नैंननि के तारे ॥टेक॥
अद्भुत गौर-साँवरे दम्पति पलहू होत न न्यारे ।
मन बसी रसी सोहनी मूरति बिसरत क्यौंच बिसारे ॥
रूपसुधा रस पियें परसपर रहत प्रेम मतवारे ।
गोबिंदसरन जिय कल न परत है जब ते नैंन निहारे ॥

( १०७ )

हेली हे मोहन परम सलौनौं ।
तरुन किसोर कँवल दल लोचन मेरे जिय को लगौनौं ॥
एक द्यौस बनिठनि बानिक सो इत ह्वै निकस्यौ आय ।
रूप ठगौरी डारी मो पै चितयो दृग ललचाय ॥
तादिन ते चित अधिक चटपटी निपट अटपटी सजनी ।

मिलवै कौन प्रानधन जीवन कल न परत दिन रजनी ॥
सोवत सुपन माहिं रंगभीनौ ठाढ़ौ देखौं आगें।
उचटि जात जब नींद निगोड़ी जकरी बिरह अभागें ॥
जो कबहूँ कोउ भाग-जोग तें इत ह्वै निकसै आय।
निकसि न सकौं गुरजन डर बाहिर जियरा अति अकुलाय॥
घर गुरजन बाहिर दुरजन डर या दुख छिन-छिन सूकौं।
औषद दरस-स्याम सुन्दर बिन कहौ कौन पै कूकौं ॥
बिरह-अगिनि लागी तन मन मैं कीजै कौन उपाय।
सुरति तेल तापैं परै सजनी कहौ किहिं भाँति सिराय ॥
मिलिहौं अब निसंक ह्वै सजनी प्रेम निसान बजाय।
श्रीगोबिंद संग नित बिहरौं लोक लाज बिसराय ॥

राग खम्माच

( १०८ )

मेरे घर मीत मोहन आव।
दरद दिवानी रूप लुभानी जरत नैन सिराव ॥
पलकन के पग पांवड़े करिहौं पुतरिन पर धरि पाँव।
गोबिंदसरन मन मोहन प्यारे आनँद रस बरसाव ॥

( १०९ )

झूंठे जगत के झगरे इनमें न मन कुं ल्या तू।
यह बोझ सिर पै नाहक डारे फिरै सु क्या तू ॥
दुनिया के लोग जे हैं मतलब के गरजो तेते।
नहिं काम के सगे हैं ये काम के किये ते ॥
हर रोज ख्वारी भुगतैं ऐसों के चसके चाहै।
तिन वासनों के मारे बिषयों के द्वार गाहै ॥
तहां इष्ट वर्ग बातैं अनभावती सुनावै।
वह चाहि कैं सुनै तो गुरु मंत्र लौं बतावै ॥
एक लोभ के दबाये भाये करैं सबन के।
सतसंग में जो सीखी सब और के कहन के ॥

ऐसेहि करिकैं है है यह जन्म बाद खोवैं।
जम त्रास के भये ते सब याद करिकैं रोवैं॥
इनकौं मिलै विवेकी गोबिंदसरन ल्यावैं।
संसार ताप तपनै की आँच सौं बचावैं॥

( ११० )

अहो वृषभानुजे किसोरी श्रीबनवास दै बसावौ।
मीठे बैनन कहि 'यह मेरी' मेरौ हिय हुलसावौ॥
'परम कृपाल तुरत ही रीझत' जिन यह बिरद हँसावौ।
सर्वेस्वरी हरि प्रिये राधिके बाधा दूरि नसावौ॥
निजजन बिसरैं क्यूं बनै श्रीबृन्दावन रानी।
मेरी भूलि अनादि की तुम नहिं पहिचानी?
अपनी ओर निहारिये येहो सुखदानी।
सब गुनहीन बह्यो फिरौं नहिं बात रहानी॥
रूखे जिन बलि हूजिये राधे दिलजानी।
उत् पथ अपनी चाल सौं कहि नेक न मानी॥
गोबिंदसरन भल देखिये जित आनाकानी।

( १११ )

कभी तो मिलना करौ रे, गुमान भरे काग्ह।
जीवन के दिन गिनती केसे महर की नजरी ढरौ रे॥
अपनौ दुःख कहत पिय तुम सौं आवत भरयौ गरौ रे।
गोबिंदसरन झिझक नहिं चहियत सूधौ नेह धरौ रे॥

( ११२ )

रघुकुल तिलक प्रगट भये अब ही, नर नारी आनन्दे तब ही।
भूपर रवि कुल मण्डन दसरथ तिन जाये सुत सबही॥
कौसिल कूंखि चन्द्रमा वारिधि भक्त कुमुदगन प्रफुलित जबही।
गोबिंदसरन कुमरन के साथ में राम गुलाम कहाय है कबहो॥

( ११३ )

जहाँ स्याम सुन्दर निकुंज-भवन मन्दिर के,
अंदर करत केलि सोभा सरसावनी।

सखीगन मन की उमंग भरी अंगन में,
अनँग-कहानी कहि रंग बरसावनी ॥
दंम्पति की घुरि घुरि मिलनि दुरि दुरि देखि,
चाहत सिरायो हिय लाल गुन गावनी ।
तिहि बास पास के महल प्यास आस भर्यौ,
गोबिंदसरन दास करघौ चहै छावनी ॥

( ११४ )

प्यारो जी नन्दलाल वारी, अंग-अंग अति सोहना ॥
एंड भर्यौ आवत चल्यौ री, दृग कँवल बिसाल ।
सिर चीरा हीरा गरै, लखि भइ हौं निहाल ॥
मकराकृत कुंडल बने सखि, रुचिर कपोल ।
पान खात हंसिकै कहै, मृदु मीठे बोल ॥
हौं इन बेची बीच ही री, दृग भये दलाल ।
गोबिंदसरन संग ही फिरौं बिन लखे बेहाल ॥

( ११५ )

नर तन रतन पाय नहिं चीनौं ।
पारस पायो मूरख कर तें स्वान गेल नहिं दीनौं ॥
श्रवन कथा नहिं सुनी कृष्न की फिरै काम रसभीनौं ।
गोबिंदसरन ब्रजचन्द भजन बिनु भयो काल आधीनौं ॥

( ११६ )

हरि भजि जनम सुफल करि लीजै ।
सतसंगति हरि कथा महारस अमल श्रवन पुट पीजै ॥
यह नरतन दुल्लभ देवन कौं पाइ वृथा क्यौं कीजै ।
पारस परघौ हाथ अब तेरें स्वान गेल क्यौं दीजै ॥
हरि तज आन देव भजिबे कौं मनुवा क्यौंव पतीजै ।
गोबिंदसरन गहि चेत सबेरा पल पल यह तन छीजै ॥

( ११७ )

हम तो सरन हैं राधावर की ।
और आस तजि एक आस उर सीख सुनी श्रीगुरु की ॥

मन संका न आन काहू की पकरी टेक सुघर की।
हरि जस नाम सुनत सुख उपजत सेवा अच्युत घर की॥
गावत गुन प्रसाद पावत पति चाह न भूत पितर की।
माला तिलक देख हरि बानौं आह न जम किंकर की॥
उपज्यौ मन बिस्वास कियो जब छाप लिखी निज कर की।
बहै जात सब भव प्रवाह में गनति न नारी नर की॥
गोबिंदसरन निरभै भै नैंक न मिटी डुलनि दर दर की।
सेवत बृन्दाबिपुन-पुरंदर मति औरन सौं तरकी॥

( ११८ )

ज्यौं सींचे तरु-मूल स्कंध साखा सरसाहीं।
ज्यौं प्रानन कौं असन दयें इन्द्री तृपताही॥
सकल देव कौ मूल एक अच्युत कौं गायौ।
ताकी सेवा कियें सहज सबहिन सुख पायौ॥
यह प्रगट बचन भागौत में, रिषिबर्ज प्रचेता सौं कह्यौ।
सार भजन हरि देव कौ, गोबिंदसरन निज जन गह्यौ॥

( ११९ )

"प्यारी तेरे रूप की सुनि उपमा दीजै कौनै री।
माधव अंग अंग सोभित यौं कसौटी लीक ज्यौं सोनै री॥टेक॥
खंजन मीन कुरंग करे बलि मद भीनै दृग लौनें री।
बदन सुधाधर इकसर निस दिन ससि उपमा नहिं होनेंरी॥
नित्य बिहार-बिहारी मानत अबही आई है गौनें री।
रमा उमा अरु सची उरबसी उनहूँ के मन भौनें री॥
अद्भुत रूप माधुरी को कहै जब दंपति अलसौनें री।
गोबिंदसरन सब कबि कुल छबि लखि रहे ठगे से मौनै री॥

( १२० )

पिय संग सोहै अलबेली हे प्यारी लाड़िली।
मुख मयंक की दुति जु फैलि रही ललित कपोलनि गाड़ली॥

गोविंदसरन पै कृपादृष्टि करि रास रसिक सुख चाड़ली।
आनन-अंबुज-मधुप स्याम मन बनक कनक लै आड़ली॥

( १२१ )

लखौ री मनमोहन छैल।
सीस लटपटी पगिया भर्‌यौ जोबन के फैल॥
दानी ह्वै ठाढ़ो तिरभंगी रोकि मही कौ गैल।
गोविंदसरन कुलकान रहै क्यौं नित ब्रज बीथिन सैल॥

( १२२ )

राज आँखड़ल्या घर घालै छै वो, गिरधर।
अणियाली रतनाली तीखी हिबड़ा माँही सालै छै वो॥
घायल ज्यूं घूमैं गल लागी नहिं बोलै नहिं चालै छै।
गोविंदसरन सुधि बेगिहि लीज्यौ बधिकहु भार सँभालै छै॥

( १२३ )

मोही री हौं तो सांवरे सलोनैं।
टरत नहीं छिन चितते सजनी चपल दृगन के कोनैं॥
पगिया सीस सुरंगी तापै मोर चन्द्रिका सोहै।
लखि धीरज राखै मन अपनै त्रिभुवन तिय अस को है॥
साँवल बरन पीत उपरैना उर मोतिन की माला।
पान खाय ऐंड़ाय चलत जब पर्‌यौ मन रूप जँजाला॥
लोक लाज की सुधि न रही कछु वह मूरति मन भावै।
गोविंदसरन दुख कासौं कहिये हरि बिन कछु न सुहावै॥

राग माड़

( १२४ )

हरि तुम मेरे नाथ गुसाईं।
एक भरोसौ आस रावरी और सब दिस बिसराई॥
ऐसौ और कौन त्रिभुवन में तुम तजि जापै जैयै।
सिव बिरंचि पद लह्यौ आप तें चरन सरन सतु पैयै॥
अभै दान दाता बिष्नु ताहि बेद पुरानन गायौ।

यह सुनि हरष बढ्यौ उर अंतर दौरि द्वार नियरायौ ॥
तुम बिन और ठौर नहिं मोकौं करुणा दृष्टि निहारौ ।
गोबिंदसरन को यहै बीनती सरन पर्‌यौ प्रतिपारौ ॥

( १२५ )

माधौ जी तुम जन दया बिचारौ ।
जा दिन तें बिछुर्‌यौ हौं तुम तें ठौर ठौर दुख भारौ ॥
मेरे जनक प्रगट तुम ही तें क्यों अब मोहि बिसारौ ।
जद्‌यपि पूत कपूत प्रगट जग पिता भरोसौ भारौ ॥
दीजै चरन कँवल रति जन कौं सतसंगत गुन गाऊँ ।
कथा स्रवन मन उज्जल रस मैं यह प्रसाद अब पाऊँ ॥
जो कबहूँ मन औगुन धरिहौ तो न कहूँ मुहि ठौर ।
गोबिंदसरन प्रभु करत बीनती मेरी तुम लौं दौर ॥

( १२६ )

बृन्दाबन बसंत आयो सुनि सजनी नव पल्लव द्रुम बेली।
कुसुमित बन अरु अंब मोर पर ठौं ठौं मधुकर केली ॥टेक॥
कोकिल कलरव श्रवननि भावै जमुना कूल सुहायो।
माधव सखा संग लियें डोलें राग बसंत जमायो॥
सुनि सुनि श्रवन चाह मिलिबे की लगी रहत जिय भारो।
कहा करैंगे गुरजन दुरजन चलि सखी जहां बनवारी॥
कंचन तन सजि भूषन अंबर उर सोहै मनि माल।
अंजन जुत दृग खंजन गंजन अरु बेंदी बर भाल॥
चलि गजगामिनि भामिनी संग लै जहां बृन्दाबन ऐना।
राधामाधव कौ निज मन्दिर सेवत मैननि सैना॥
जाय मिलीं ढिग स्यामलाल कें नव तरुनी जु सहेली।
सींचि सबै अनुराग दृष्टि करि नवल नेह की बेली॥
रंगावती रंग बरसावै हरिप्रिया गुलाल अबीरा।
उतहू सखा मैन से संग लै आय मिले बलबीरा॥
छिरकत चन्दन बंद भामिनी दामिनि सी सब सो हैं।
लपटि गई घनस्यामलाल सों उपमा कौं जग को हैं॥
लइ पिचकारी छीनि बिहारी मुरली प्यारी राधा।
चितवनि मुसकनि खेल मच्यौ (है) बाढ़्यौ रस सिन्धु अगाधा॥
मगन भये तन मन सुधि बिसरी रूप माधुरी पागे।
गोबिंदसरन प्रभु राधामोहन प्रथम खेलि अनुरागे॥

राग बसंत

( १२७ )

खेलत बसंत हरिब्यास देव।
कोउ कृस्न कृपा बिन लहै न भेव ॥टेक॥
सोहैं परमहंस मंडलो मंझार, करुनारस पागे अति उदार।

जैसे तारा गन मधि सोहें चन्द, यौं राजत बर भक्त बृन्द ॥
उज्जल-रस सोंधौ सरस लाय, सब किये सगबगे संत भाय ।
भक्ति सु केसर सरस रंग,निज कर छिरकें खुलि रह्यौ है संग ॥
भाव कुमकुमा की मची हैं मार,सब भीजि रहे तन नहिं सँभार ।
रंगी प्रेम रंग पचरँग गुलाल, झोरी भरि डारत भरे हैं भाल ॥
बोहित अद्भुत कर धर मृदंग, सोभू कर बाजत डफ मुचंग ।
नौधा बाजो बजें सरस खेल, दसधा मृगमद की मची है रेल ॥
तिन मधि श्रीनायक परसुदेव, कहैं ग्यान भक्ति बैराग भेव ।
गारी हरि चर्चा नारि देत, इंद्रीगन छिन-छिन लाहो लेत ॥
कई बिमुख ख्याल सों रहहिं दूरि,हरि रस बिहून नहिं भाग्य भूरि।
श्रीभट मारग सौं बिमुख लोग, तिनके हिय को नहिं मिटत सोग॥
यह रस बरस्यो कालिंदी तीर, सुख निरखत कोऊ संत धीर ।
गोबिंदसरन जन राख्यो मान, फगुवा मधि पाऊँ भक्ति ॥

राग बसंत

( १२८ )

बसंत खेलत राधामाधव नव बृन्दाबन सखियन संगा ।
धूम मची इत उत दुहुँ घाँते पिचकनि छिरकत केसरि रंगा ॥
धुंकिट धुं धुं किट त्रिकिट ततकिट तैसिय बाजत मधुर मृदंगा ।
तैसेहि गावत मंद मधुर ध्वनि ता तननन उठै तान तरंगा ॥
अबीर गुलाल छयो धर अंबर रसिक पुरंदर बसन सुरंगा ।
गोबिंदसरन सोभा बरिघि लखि धरनि गिरी रति सहित अनंगा॥

राग बसंत

( १२९ )

बसंत रंगीली गलिन में खेलै गोकुलपति के कुमार ।
साँवरे गौर भावते जिय के हितु जन प्रान अधार ॥टेक॥
बै गुन-रूप समान सखा सँग सबै मैन से सोहैं ।
कौतिक करि नाचत गावत हँसि चितवनि में मन मोहैं ॥
नव बय अंब मौर कुच गड़ुवा धरि लाईं मृगनैंनी ।

गावत राग बसंत मधुर सुर हरि प्रीतम सुख दैनो ॥
छिरकत चन्दन वन्दन बूका उड़वत अबिर-गुलाला ।
कंचन बेली-सी ब्रज भामिनि खिलि ढ़िग स्याम तमाला ॥
कनक कमोरी केसरि घोरी छल सौं एक किसोरी ।
पीत बसन गहि कंवलनैन कौं हँसि सिर पर लै ढोरी ॥
मोहन गौर साँवरे बल भये मुख मृगमद लपटायो ।
नहिं परत पिछाने सखा भुलानें घोष कुलाहल छायो ॥
जो सुख बिलसत घोष निवासी सो दुर्लभ सुरगन कौं ।
गोबिंदसरन सँग केलि करत निति वे तरसत दरसन कौं ॥

राग बसंत

( १३० )

जै श्रीनिबादिति आनंद मूल, खेलत बसंत कालिंदी कूल ॥टेक॥
देवी जीव उधार हेत, वपु आधारज अवतार लेत ।
करुनारस पागे अति उदार, कर कृपा सरन किये जन अपार ॥
पाखण्ड धर्म वन दहन काज, प्रभु धूम केत सम धर्म पाज ।
गिरि गर्व चूर हित बज्रदेव, काम कर्म अहि गरुड़ भेव ॥
गज मतवारे बादी अनेक, तुम पंचानन तिन हित जु येक ।
कामादिक सर तहां अति गंभीर,तिंहि सोषन कों कुंभज सधीर ॥
भक्ति लता पोषन हि चन्द, भवरोग रहित भग्ये भक्त वृन्द ।
मग संप्रदाय सुरतरु समान, तम रहै कौन विधि उदै भान ॥
जग जीव परे संसार कूप, तिनकौं तुम ही अवलम्ब रूप ।
जद्यपि ईश्वर सीतल सुभाय, निजजन हित राजत मधुर भाय ॥
भव भय टारनि सुख दान जान, त्रयताप दूरि करि जस निधान ।
हरि सेवा आनन्द जुक्त, राजैं सुद्ध भेष जग भूप भक्त ॥
परमहंस मण्डल सुदेस, ज्यौं तारागन मधि तारकेस ।
नवधा गुलाल नवरँग अनूप, झोरी भरि डारत भक्ति भूप ॥
हरि गुन बाजे बाजैं झाँझ ताल, बीना मृदंग सुर अति रसाल ।
गावत बसंत घुमड्यौ पराग, सुनि सुनि उपज्यौ तहाँ परम राग ॥

सनकादिक कहत जु ग्यान भेद, बिज्ञान भये मन मिट्यौ है खेद।
गहि ल्यावत नारद दौरि जाय,हरि रंग सों सब जन दिये भिजाय॥
दसधा मृगमद मुख दयो लगाय,हो हो कहि नाचत मुदित गाय।
भये प्रेम मगन नाहिन संभार,नर नारिन को नहिं रह्यौ बिचार॥
उज्जल रस श्रीभट्ट घट भराय, छिरकत सब जन पर भरे भाय।
श्रीहरिव्यास नेह सोंधो जु सार, करुनारस बूका मचो भार॥
श्रीपरमराम मृदु रस अबीर, हरिबंस रूप स्रवें अमी सीर।
श्रीनारायन केसरि समीर, श्रीबृन्दाबन भिजवें हियें चीर॥
श्रीगोबिंदसरन चोवा सिंगार, मुहें लाय करत आनन्द अपार।
फगुवा मधि दीजै भक्ति दान, गोबिंदसरन जन राखे मान॥

राग बसंत

( १३१ )

जै जै कृष्नचन्द करुनानिधान।
बृजजन पंकज बन सुखद भान॥टेक॥
नव जलधर सम अंग स्याम, लावन्य धाम बलि कोटि काम।
अमै दैन भुज दंड मूल, दामिनि समान राजत दुकूल॥
मद छके असित-सित-अरुन नैंन, मृदु हसन सुधा बसषत सुबैन।
कुंडल मन्डित स्रुति दुति अतोल,परि झलक गंड सोभित कपोल॥
मुख मुरलि सुधा बरसत सु छन्द, निज जन जीवन आनंद कंद।
सखि वृन्दाबन खेलत बसंत, वृज रवनी मिलि भयो सुख अनंत॥
बंदित बिरंचि सिव पाद मूल, बाढ़यौ सुख समूह कालिंदी कूल।
गोबिंदसरन रहौ हीय ध्यान,छयो सकल लोक रस जसु बितान॥

राग बसंत

( १३२ )

मंगल निधान भजि कृष्न चन्द।
जाके नाम अगनि जरैं पाप वृन्द॥टेक॥
द्रुम धर्म मूल करुना निकेतु, पावन पवित्र कर अभय हेतु।
बिस्त्राम धाम जन सासु नाम,कविजन रसना अवलंब स्याम॥

जन परमहंस मुक्ता सु नाम, जग त्रिविधि ताप विश्राम धाम ।
है पाप बिपुन कौं हरि कुठार, वासना वृन्द कैरव तुसार ॥
भक्ति भूमि मृग पति उदार, मृग आन धर्म बर्जित बिहार ।
भवसिंधु पोत हरिनाम एक, समतूल नाहिं साधन अनेक ॥
बिपुन चन्द जुग गौरस्याम, सोभा निकेत जन पूर्न काम ।
गोबिंदसरन जन जीवनि मूल, भजि पद पंकज मिटैं सकल सूल ॥

राग बसंत

( १३३ )

आजु बनराज कियें नवल सब साज सखी,
रमत रितुराज सुख मदन उत्सव महा ॥
इतहिं संग लाल बृजबाल बानक बने,
उतहिं हरि प्रिया छवि छबिलि कहिये कहा ॥
बजत बीना मृदंग तरुनि नाचत सुधंग,
कोउ गावति जु दुति सरस दमकत दसन ॥
कोउ भामिनि भरत भावते छैल कौं,
च्यार उर हार पुनि फब्यौ नीबी बसन ॥
उड़त गुलाल सब धर गगन छै गयो,
अरुन रंग ह्वै गये लाल अरु बाल सब ॥
बदन लपटाय चोवा सबन्दन दुहुंनि,
बोल हो होरि रँग देत करताल अब ॥
टोल टोलन मिले करत कौतिगन सब,
ग्रीव की दुरनि पुनि लटकि पग धरत कोऊ ॥
रूप रस पुंज गुन-निकर प्रीतम-प्रिया,
मंद मृदु हंसनि हिय हरत सबके दोऊ ॥
रीझि सुरनारि वारत सकल अपनपौ,
हम न बिधि करी बृज कहत यह हेत मन ॥
धन्य ब्रज बधू संग रमत गोबिंदसरन,
हरि हि सुख देत सब भांति तन धन असन ॥

## होरी--उत्सव

राग धनाश्री

( १३४ )

होरी खेलैं गोकुलचन्द गोकुल चौहटैं।
ख्याल मच्यौ गोरो मिलि गोबिंद इत उत तें नहिं औ हटैं॥टेक॥
उत घनस्याम सखा लियें इत प्यारी निज मेल।
उमँगि-उमगि रँग बरसहीं घन-दामिनि मच्यौ खेल॥
कनक दण्ड धरि भामिनि हरि पैं आईं धाय।
मनौं दामिन दामिन चढ़ी नव घन घेरयौ आय॥
छीन जु कटि अरु पृथु नितम्ब बर गुरु उरोज कैं भाय।
रूपलता मनौं पवन बिबस भई चलत लंक लचकाय॥
डारत मुठी अबीर की बलि भामिनि भरी सुहाग।
यह उपमा मन आवहीं मनौं पंकज छुरत पराग॥
कनक कमोरनि रँग भरें हरि छिरकत बाला वृन्द।
सींचत मनौ सनेह सौं चन्द बधुन कौं चन्द॥
हरि नाना रँग छिरकहीं बसन फबे तिय अंग।
मनौं मदन के बाग में रँग रँग फूल सुरंग॥
दुहुँघा खेल मच्यौं अधिक अरु रूप सूर रस खेत।
मनौ मदन अरु संभु मिलि जुटे सैन समेत॥
संग रँगभीनें सखा सुहाये मानौ मदन बरात।
यौं राजत गुलाल धूंधरि मैं जैसैं कँवल प्रभात॥
रँगभीनी गारी सब गावैं सुनत स्याम चित चैन।
बाजे बजैं सुहावने मनौं ब्याह घर मैन॥
एक सखा कौतिक करै लखि जुवतिन अंग मटकाय।
हँसत सबै करतार दै आयौ फागुन रूप बनाय॥
अनुराग गुलाल उड़ाय कैं छिपि गहि लीने घनस्याम।
रसिक-नृपति-चूड़ामनि बँधे प्रेम की दाम॥
दोऊ पूरन चन्द्रमा सखि दोऊ तृषित चकोर।

प्रेम खेल मिलि खेलहीं बढ़ो प्रीति दुहुँ ओर ॥
तब नन्दरानी मोद सों मेवा दियो मँगाय।
दै असीस घर कौं चलीं पै परत पिछौड़े पाँय ॥
यह सुख छयो घोष में प्रेम मगन नर-नारि।
सुर नर मुनि जय-जय करैं गोबिंदसरन बलिहारि ॥

राग खम्माची

( १३५ )

बनवारी छबि पर बलिहारी किये, प्रान रँगभीनौं हो हो होरी बोलैं।
साँवरे बरन केसरी फेंटा कनक पिचक भरि करैं तोलैं ॥टेक॥
रगबगे अंग सगबगे सोंधें बीथिन सखन संग डोलैं।
गोबिंदसरन प्रभु ढीठ चतुर अति बतियन गढ़ि गढ़ि छोलैं ॥

राग बिहागरो

( १३६ )

साँवरौ नवरंगी री माई।
ऐंड भर्‌यौ मुख पान खात ठाड़ौ, कहा कहौं अँग-अंग लुनाई ॥टेक॥
फेंटा सीस केसरी सोहै बदन-कँवल अलकनि छबि छाई।
अंबुज बन भ्रम बास आस लगि अलि माला मकरंद लुभाई ॥
पानिप भरे सहज कजरारे अनियारे दृग लियें अरुनाई।
रूप सरोवर रुचिर मीन मनौं लखि लखि तन-मन सुधि बिसराई ॥
नासा स्रवन जलज मनि कुण्डल अधर दसन दुति को अधिकाई।
मन बसि रही माधुरी मूरति अब छिन वा बिन रह्यौ न जाई ॥
छैल भयो डोलै होरी को अरु गुलाल की फेंट भराई।
हो हो करि ब्रज धूम मचावत सजी सुरनि बंसी दुनिहाई ॥
बसन गुलाली तन बनमाली फबे सरस को कहै निकाई।
लटकि चलत जब रुचिर स्यामघन त्रिभुवन को तिय धीर धराई ॥
मेरी उनकी प्रीति प्रगट भई गाँवन गाँवन गीतनि गाई।
मिलिहौं धाम निसंक अंक भरि गोबिंदसरन बिन रह्यौ न जाई ॥

राग धनाश्री

( १३७ )

खेलैं राधा मोहन संग रंगनि रंग होरी हो ।
रमकि झमकि घिरि गईं चपला-सी कोउ सांवरि कोउ गोरी हो ॥टेक॥
श्रीवृन्दावन बंसीबट तट रंग मच्यौ दुहुँ ओरी हो ।
गावत फाग भाग बड़ रस भरी मृदंग जंत्र धुनि थोरी हो ॥
छिरकत चन्दन बंदन चोवा मुख मांड़त कल रोरी हो ।
उड़त गुलाल कुमकुमा केसरि मनौं रह्यौ घन घोरी हो ॥
हँसनि दसन चौका चमकनि बलि चितै करत चित चोरी हो ।
गोबिंदसरन असीस देत बलि चिरजीवौ भूतल जोरी हो ॥

राग काफी

( १३८ )

खेलैं आज होरी मोहना ।
फेंटा सीस सुरंगी बांधे स्याम सुभग तन सोहना ॥टेक॥
पढ़ि गुलाल डारी कछु भुरकी बजतिय सब लगि गोहना ।
गोबिंदसरन कुल कान रहै क्यौं प्रथम खेलि कियो बोहना॥

राग सोरठ

( १३९ )

होरी हों खेलन जाणों राज थे तो मोहन प्यारे छैल ।
लाज बिहूंणा नणदल निरखत बांहड़ली गहि तांणौ ॥टेक॥
चतुर सुजाण जाण छौ जिय का आँखड़ल्यां रस माणौं ।
गोबिंदसरन बलि बिलग न मानौ थासौं कौंण सयाणौं ॥

राग मारु परज

( १४० )

बृजराज कुंवर रँगभीने आली रँगभीने समाज राजै ।
सजे हैं सिंगार अंग अंग नइ खिलवारन काजैं ॥टेक॥
छबीली सीस सुरँग पाग बाम भाग सोहै ।
तापैं रतन पेच रुचिर चन्द्रिका मन मोहै ॥

उत तैं वृषभान कुंवरि निज समाज लीनैं।
प्रेम उमगि चितवनि हँसि नैन मुदित कीनैं॥
बाजे बजैं दुहुँ ओर सरस सुर सुहाये।
सुनि सुनि सुख स्रवनन मन मदन घर बधाये॥
गावति कोउ गीत सुधरि मोत-रंग पागी।
छूटि गई सिव समाधि तारी ही लागी॥
पीत रंग लै गुलाल पीतम पै मेलैं।
झमकि मुरनि ग्रीव दुरनि उपमा को तोलैं॥
कमलन की गेंदुक कर कमलनि सौं मेलैं।
मची हैं मार दुहुँ ओर अंकनि भर झेलैं॥
अम्बर चढ़ि गयो गुलाल सब समाज छायो।
मनौ अरुन उदै प्रात कमल बन सुहायो॥
मची कीच खेल बीच रपट-झपट ग्वाला।
काहू कौं पकरि आँखि आँजि छांड़ि देत बाला॥
संकेत खेत खेल कोऊ हारि नाहिं मानैं।
बाढ़्यौ सुख सिन्धु अपनि अपनि जीति ठानैं॥
थकि रह्यौ नभ सुर समाज रीझि प्रान वारैं।
भूरि भाग बृज की नारि नैन सुख निहारैं॥
रसिकानन्द-रसिकनी जस जनम जनम गाऊँ।
गोविंदसरन जाचत हौं यह प्रसाद पाऊँ॥

राग विहागरी

( १४१ )

नवल केलैं रंगमहल रंग होरी।
रुकम बरन नागरी स्याम मरकत मनि सम बनी जोरी॥टेक॥
रँग रँग चीर हीर मनि माला पहिरे अंग किसोरी।
मदन-बाग की रूपमंजरी चितै करत चित चोरी॥
रगमगे अंग सगबगे सौंधें खेल मच्यौ दुहुँ ओरी।
गान कला अरु मृदंग जंत्र सुनि मोह्यौ जात न कोरी॥

छिरकत वन्दन चन्दन बूका झकझोरी-झकझोरी।
गोबिंदसरन सोभा निरखत रति-मदन करत तृन तोरी॥

राग आसावरी

( १४२ )

सखि नीके बने ये छैल,
कुँवर बृजराज लला ! चलत गति सिंधुर मत अरैल ॥टेक॥
अरध भाल भृकुटी छिये सखि बाँधे पाग सुरंग।
रतन पेंच तुर्रा लसै तापै मोर को चन्द उतंग॥
झगा केसरी सोभही सखि स्याम सलोनें गात।
मन हरत हसन मन भावतो जब चितवत दृग जलजात॥
इहि बानिक बनि लाड़िलौ सखि, बनक बनीले संग।
हो हो हो मुख बोलहीं उड़्यौ गुलाल सुरंग॥
पिचकारी कर कनक की रँग कंचन कलस भराय।
रँगीली तियनकौं छिरकहीं सुख बढ़्यौ कह्यो नहिं जाय॥
उत प्यारी संग सहचरी बै गुन रूप समान।
कनक लता पाँयन चलत छबि पावत रूप निधान॥
बाजे सरस बजावहीं बर बीना मुहचंग।
ढोलकि ढोल सुहावनै महुवर मधुर मृदंग॥
हाथन फूलन की छरी गेंदुक फूल बनाय।
हरषि परस्पर खेलहीं मन बढ़्यौ चौगुनौ चाय॥
इक नाचत गावत सखी, इक हँसत बढ़ावत मोद।
सोभित मदन बरात सी,लखि हरषि बढ़्यौ दोउ कोद॥
मूठी भरी गुलाल की पुनि डारत भरि अनुराग।
नीकी छबि तहाँ पावहीं मनु पंकज छुरित पराग॥
अरुन बरन सब ह्वै गये घर अंबर बन बाग।
फैलि रह्यो दृग देखिये मनु हिय कौ अति अनुराग॥
कहत किसोरी भावते अब कित जैहो लाल।
मन भायो करि छाड़िहैं सुन्दर नैन बिसाल॥

घूंघरि भई गुलाल की तामैं छिपिकैं छबीली बाम ।
सखा न कोऊ सँग रह्यौ गहे आन अचानक स्याम ॥
घिरि आईं चहुँ ओर ते तरुनी तन कंचन रंग ।
चपला थिर मनु राजहीं सोभित घन कैं संग ॥
कोउ दृग अंजन आंजहीं कोउ परसत रुचिर कपोल ।
काहू मुरली हरि लई कोउ लै गई पीत निचोल ॥
फगुवा दिये अब छूटिहो सुनौ कुँवर ब्रजराज ।
बहुत बेर छलबल गये बस परेहो हमारैं आज ॥
मंद हँसे मन मोहना फगुवा दियौ मँगाय ।
यह सुख मुख न कह्यौ परैं गोबिंदसरन बलि जाय ॥

राग नायकी एकताल

( १४३ )

रँगीली जोरी खेलें होरी ।
गौर घटा अरु स्याम मनौ रस बरसत हैं चहुँ ओरी ॥टेक॥
मुरली गरजनि धुरवा अलक बनमाल धनुष-छवि छोरी ।
मिटि गयौ बिरह दवानल सुख बढ्यौ द्रुम पति-पतनी मोरी ॥
नव गुलाल रँग बीरबधूटी हँसनि अबीर लखो री ।
गोबिंदसरन भरे हीय रसिक सर पाज लाज की फोरी ॥

राग नायक ताल मूल

( १४४ )

जिनि डारौ आँखनि गुलाल,
निसंक ह्वै काहे न निहारौ वह बाल ॥टेक॥
हम तो तिहारे सुख सुखी हैं अधिक प्यारे,
हमही सौं चतुराई करत चतुर ख्याल ॥
काहे कौं करत एते छन्द-बन्द रहौ अब,
अपनी गरज काहे देत दुख लाल ॥
जित मन की रुचि उतही खेलिये,
सुनहु रसिक नये नैन बिसाल ॥
गोबिंद रहो जु रहो जानें तुम,
नीकी भाँति उनही कौं कीजै निहाल ॥

राग गोप गौरी तिताल

( १४५ )

रंग होरी खेलैं साँवरो सखि संग रँगभीनें ग्वाल।
कंचन की पिचकारी करन अरु फेंटन भरे हैं गुलाल ॥टेक॥
आई उत वृषभानकुंवरि सजि साथ रँगीली बाल।
कनक बेलि मानौ पाँयन चलि घिरि गई स्याम तमाल॥
भरत धरत भाजत राजत छबि हँसत दै दै करताल।
ब्रजनारी गारी गावत उत गोप बजावत गाल॥
एक देत दृग खंजन अंजन इक बेंदी बर भाल।
एक नचावति एक बचावति एक भरत अँकमाल॥
होरी दरस परस रस बरषत बढ्यौ सुख सिन्धु बिसाल।
गोबिंदसरन तहाँ मगन रहत सखि नैन मीन के जाल॥

राग सारंग

( १४६ )

सुघर खिलार आज सखि देख्यौ बंसी सुर सरसावै री।
मो तन लखि रिझवारि रीझि कें अखियन ही ललचावै री ॥टेक॥
मोहि गुरजन डर निडर ये मो दृग इनकों को समझावै री।
परबस भई बीचि मोहि बेची अब मन अति अकुलावै री॥
नव घनस्याम कँवल दल लोचन अनुरागी पुनि गावै री।
गोबिंदसरन डर डारि फिरौं संग वा बिन कछु न सुहावै री॥

राग बिहागरौ तिताल

( १४७ )

अरी यह काको ढोटा खेलत फाग सुहावतौ।
नव घनस्याम बड़ी-बड़ी अँखियाँ लखि हिये नैन सिरावतौ ॥टेक॥
पगिया सीस मुरंगी सोहै कोटिन काम लजावतौ।
रही न सुधि सुनि मो तन मन मैं अनुरागी पुनि गावतौ॥
मो दृग मीन तृषित अति आतुर तिन हित रस बरसावतौ।
गोबिंदसरन सुनि हितू लाज तजि अब भेंटौं मन भावतौ॥

राग कान्हरो ताल मूल

( १४८ )

आज सुहाई री रजनी सजनी प्यारे पधारे खेलौंगी फाग संग ॥टेक॥
मन मोद पूरे अरु कंटक बिरह चूरे मिले मोहि स्याम आली अति भयो है रंग।
पूरन मनोरथ अभिलाष लाख भांतिन सों पायो मैं अब पिय संग अभंग॥
गोबिंदसरन बढ़्यौ हरष सु तन मन गावौ बधाये गति नचहु सुधंग।

राग अड़ानौ ताल मूल

( १४९ )

खेलें फागु लाल बाल रंगीले समाजै पगिया सीस पट पीत बरन।
जनमगाय रही दुति दरपन प्रभा कोटि अंग भये अभरन के भरन ॥टेक॥
सौंधे मांझ भीजि रहे भीजे अनुराग रंग फेंटन गुलाल और पिचका करन।
धाय भरत सो कही न जाय सोभा अरबीले लाल सब परत अरन॥
हंसनि अबीर तहाँ चितवनि पिचकारी न्यारीही लुनाई सखी ग्रीवा की ढुरन।
सुख वारिधि मिलि काहू न रही है सुधि कहा बिबि छबि कहै गोबिंदसरन॥

राग कमोद कल्याण

( १५० )

आजु होरी खेलैं रूपनिधान।
बरन स्याम बलि काम रसभरी गावैं मुख मीठी तान ॥टेक॥
हो हो कहि गुलाल कर डारत बन छयो अनुराग बितान।
गोबिंदसरन दृग वा छबि छाके अब न रुचै कछु आन॥

राग परज

( १५१ )

आज खेलैं होरी नव नागरी।
सरस गुलाल डार प्रीतम पै सकल कला गुन आगरी ॥टेक॥
श्रीवृषभान भवन में सजनी फैलि रह्यौ अनुराग री।
कीरति कुल कीरति गावति लखि गोबिंदसरन बड़भाग री॥

राग—

( १५२ )

आये जू होरी खेलि कहूँ तें।
सुपनें हू न पितैये मोहन अँखियाँ बैरन भईं कितहूँ तें ॥टेक॥

को जानै किहि विधि कित आये बंधु जु रहें मन मन के सूतें।
गोबिंदसरन रति चिह्न प्रगट तन ढकत क्यों न अपनी करतूतें ॥

राग—

( १५३ )

बने रँगभीने बागे होरी के।
आलस भरे ललित लोचन रँग रंगि जु रहे वाही गोरी के ॥टेक॥
धन्य सुहाग भाग वाही को हौं बलि कीनी पिय जोरी के।
गोबिंदसरन हम हू पै मया कीनी राखत मान दुहूँ ओरी के ॥

राग—

( १५४ )

रंग महल रङ्ग होरी खेलैं सिया दुलही।
रितु बसंत विहरत रघुबर सँग नेह बेलि हिय उलही ॥टेक॥
ह्वै निसंक खेलौ छबि निरखौं यह मन ही सुलही।
गोबिंदसरन बलि सुरी-किंनरी जनक नृपति कुल कुलही ॥

राग सोरठ इकताल

( १५५ )

रहोजी होरी खेल न जांणौं राज।
गुलाल नाखि आँख्या में छानैं कालि गया छो भाज ॥टेक॥
नया छैल छाजै चढ़्या मन रे घर आयौ छै राज।
गई करो तो भली बात छै नहिं समझां स्यां आज ॥
ज्यौं खेलै जिनही सौं खैलौ सोही जिसौं समाज।
गोबिंदसरन आंखड़िल्यां बैरण म्हे आया छां बाज ॥

राग—

( १५६ )

रस मीठी तान गावै री साँवरो।
मंद हँसनि चौका चमकनि सँग रीझि लग्यौ सब गाँवरो ॥टेक॥
बिन देखे नहिं चैन रैन दिन चित्त चुभि रह्यौ रूप बाबरो।
गोबिंदसरन घर कैसे रहौं अब बिन देखे आवै तावरो ॥

राग पूरबी चौताल

( १५७ )

रंग महल मध्य रंग भरे स्यामा स्याम,
रंग भरी होरी खेलैं रंगीली सहचरि संग ॥
रूप मद गुन मद नेह मद छके छैल,
उड्यौ है गुलाल भये सदन सुरंग ॥
सौंधें सगबगे लाल किये हियें उमगि बाल,
भरैं पिचकारी धार धारन सुधंग ॥
दम्पति मुदित अरु उदित मनोज लखैं,
गोबिंदसरन नैन बैन गति पंग ॥

राग कान्हड़ौ ताल चंपक

( १५८ )

प्यारे आज आवै री महल मेरे तो संग खैलौं फाग वारौं तन मन ।
अंसुवनि छिरकैहौं भूमि पूतरीन पांवड़े जब देखौं पिय सुन्दर घन॥टेक॥
कोटि चन्द दुति मंद होत लखि प्यासे चकोर नैन मोहन बदन ।
गोबिंदसरन यह फीको है सुहाग फाग जबलौं न भेटौं हरि सुख कौ सदन ॥

राग गौरी

( १५९ )

रितु बसंत सुख खेलिये हो आयो फागुन मास,गोकुल के राजा ।ध्रु।
होरी डाँड़ो रोपियौ सब ब्रजजन मनहिं हुलास ॥
रजनीमुख ब्रज आइयो हो गायन खरिक निवारि ।
सखा नाँव लै लै बोलहीं हो घर घर देत हैं गारि ॥
बड़े गोप वृषभान कैं हो सब मिलि आये पौरि ।
श्रवन सुनत प्यारी राधिका हो चढ़ी चित्रसारी दौरि ॥
उझकि झरोखा झाँकियो हो दुहूँनि मन आनन्द ।
ऐसी छबि तब लागई मानौ निकस्यो घटा मधि चंद ॥
नरनारी एकत्त भये हो घोषराय दरबार ।
सब सनमुख ह्वै दौरहीं नहिं भूषन बसन सँभार ॥

बासुर खेल मचाइयो हो नियरे आयो फागु।
झूमक दै दै गावहीं मन मोहन गौरी रागु॥
अगनित बाजे बाजहीं हो रुंज मुरज नीसान।
डफ दुन्दुभि अरु झालरी हो कछुव न सुनियत कान॥
पिचकारी कर कनक की हो सौंधै अरगजा घोरि।
प्रानपिया कौं छिरकहीं हो तकितकि नवल किसोरि॥
बहुरि सखा सनमुख भये हो बलि मोहन लै संग।
प्रमदा गन पर बरसहीं हो उड़त गुलाल सुरंग॥
ललित बिसाखा मतो मत्यौ हो लीनें सुबल बुलाय।
चेरी तेरे बाप की गिरधर कूँ पकराय॥
तबहि सुबल कूटक रच्यौ हो सुनहु सखा इकबात।
इनकौं भीतर जान दै बोलत जसोदा मात॥
हरें हरें जब रंगि चले हौ नियरें पहुँचीं आय।
सबै सैन दै दौरहीं मन मोहन पकरे धाय॥
प्यारी को अंचरा लियो हो लै पिय को पट पीत।
सखियन गठजोरौ कियौ हो भले हो बने दोउ मीत॥
फगुवा में मुरली लई हो अरु उर ते लियो हार।
प्यारी राधा कौं पहराय कैं हो हँसत हैं दै करतार॥
मेवा बहुत मँगाइयो हो फगुवा दियो निवेरि।
नैनन काजर आँजिकै हँसत बदन तन हेरि॥
इहि बिधि होरी खेलहीं हो ब्रजवासी मंगल गाय।
जुगल कुंवर के रूप पर जन गोबिंद बलि बलि जाय॥

राग मारू

( १६० )

सूधे क्यों न खेलौ होरी हो लाल छाँड़ि बहियाँ मोरी।
लखि पावैगी कोउ सुघर ग्वालनी निकसि आवैगो चोरी॥
लाल पिचकारी जिन डारो हो मेरे मुख जिनि लावौ रोरी।
जानति हौं सब घात तिहारी हौंतो नाहिंन भोरी॥

लाला दूर हि तें दुरि देखिये ये बात नहीं कछु थोरी ।
जन गोविंद बलबीर बिहारी जिन छुवो बिरानी गोरी ॥

राग सारंग

( १६१ )

आजु होरी तो आई है माई मोहन पैं रंग डारौं ।
आंखिन अंजन दै मुख मांड़ौं याके गालन गुलचा मारौं ॥
केसर बोरि करो याय गोरो तनक न रहै कारो ।
ढूंढ़त ग्वालि गुपालै हेरत कित गयो नन्ददुलारो ॥
जब याहि छोड़ो अपने मुंह करे हा हा हूं कैं हौं हारो ।
फगुवा लै बंसी बस करौं याकौं पुन लै पाइन पारौं ॥
प्यारे पैं अपनौ तन मन धन लै लै सर्बस वारौं ।
गोविंदसरन बलबीर बिहारी मेरे नैननि तें जिन टारौ ॥

राग धनाश्री

( १६२ )

खेलत बल मनमोहना रित, बसंत सुख होरी हो ।
सखा मण्डली संग लिये बल मोहन की जोरी हो ॥
भेरि मृदंग डफ झालरि बाजत कर कठताला हो ।
सब तन मदन प्रगट भयो नाचत गोपी ग्वाला हो ।।
व्रजजन सब एकत भये घोषराय दर बौरा हो ।
इत बनी नवल कुंवरिका उत बनें नवल किसोरा हो ॥
जुवति जूथ चन्द्रावली अपने जूथ श्रीराधा हो ।
झूमक दैं सब गावहीं बाढ़्यौ रंग अगाधा हो ॥
बल मोहन एकत भये सुबल तोक एक टोला हो ।
दुहूं दिसि खेल मचाइयो बाढ़्यो है सब मन मोदा हो॥
चमकि चली चन्द्रावली सुबल तोक पर आई हो ।
उत कोपी प्यारी राधिका बलराम कृष्ण पर धाई हो॥
कमलन मार मचाइयो जुरे हैं दोउन के टोला हो ।
मधुमंगल पकरि कढ़ेरियो बांधि गुवी सों ढोला हो ॥

छोरे हू छूटें नाँहि परि गई गाढ़ी फांसी हो।
हँसति हँसति सब आइयो गावत गारी सु हांसी हो ।।
बहुत हँसे बल मोहना हँसें हैं सकल ब्रजवासी हो।
सैनाबैनी कर सबैं बल मोहन पकरे जासी हो ।।
बलजू की आँखिजू आजियो पिय मुरली लई छिनाइ हो।
मन भायो फगुवा लियो पीछे करी सहाई हो ।।
यह बिध होरी खेलहीं ब्रजबासिन सब सुख पायो हो।
भक्तन मन आनन्द भयो गोविंद यह जसु गायो हो ।।

## होरी दोल-उत्सव

राग बिहागरी

( १६३ )

रँगीले हिंडोरें रंगभरी श्रीराधा राजकुमारि ।।टेक।।
हाटक तन पट नील सुदेस, मुख पर बलि कीनें राकेस।
मंद हँसनि मनौ बरषत फूल,झूलत सुभग कमल द्रुम मूल ।।
सहचरी समान संग वय रूप, एक प्रेम रँग रँगी अनूप।
गावत सब मिलि हरि अनुराग,कुसमित नव वृंदाबन बाग।।
सरस मधुर धुनि सुनी जु स्याम,आये कमलनैन अभिराम।
दम्पति मिलि झूलत निजचैन,छबिपर बलि कीनें रति मैन।।
हरषि झुलावत सखी सुजान, जिनकें हरिहि जीवन प्रान।
बाढ़यौ सुख सिंधु कह्यौ नहिं जाइ, गोबिंदसरन निरखत न अघाइ ।।

## फूल दोल-उत्सव

राग बिहागरी

( १६४ )

लील कोयली के फूल लखि लखि प्यारी,
पीतम चमेली पीत लखि फूल बाढी हैं ।।
फूली फूली नील पीत ललित लतानि तरें,
गरें भुज दियें हियें चौंप चाह चाढी हैं ।।टेक।।
कालिंदी को फूल फूल्यौ फूलें हैं कँवल फूल,
फूली हंस सुता रंग रस सिंगार काढी हैं ।।

फूले फूले फूल के हिंडोरें झूलैं दोउ जन,
गोबिंदसरन लखि हिये रति गाढ़ी है ॥

राग विहागरो

( १६५ )

फूल्यौ सखी वृन्दाबन फूली द्रुम बेली ।
फूले फूले फूल के महल सोहैं स्यामा स्याम,
फूली जौन्ह राकानिसि फूले करैं केली ॥टेक॥
फूलन के आभूषन अंग अंग फूलि रहे,
फूलन की पाग सारी रची हैं चमेली ॥
फूलन की चौकी चारु तकिया फबे फूलन के,
फूलन बितान तनें नीकी छबि झेली ॥
धीर समीर फूल्यौ फूले हैं कदंब अंब,
फूली बहैं जमुना सरस रस रेली ॥
गोबिंदसरन बलि फूल के समाज फबे,
फूल्यौ अनुराग फूली गावत सहेली ॥

राग पूरबी

( १६६ )

फूली फुलवारी मांझ फूले फिरैं स्यामा स्याम,
रुचि अपनी के फूल लखि सचु पावहीं ॥
प्रीतम चमेली पीत चाहि चित चौंप बाढ़ी,
फूल कोयली के देखि प्यारी न अघावहीं ॥
जोई जोई लता द्रुम छुवैं प्यारी निज कर,
सोई सोई मोहन कैं मन अति भावहीं ॥
गोबिंदसरन प्यारे लटक चलत जब,
सखी जन आगें नैन पांवड़े बिछावहीं ॥

## श्रीराम जन्म बधाई उत्सव

राग आसावरी

( १६७ )

बधाई आज नृप दसरथ दरबार ।
मंगल मनि प्रगटे रघुनन्दन हरन सकल भुव भार ॥टेक॥

भवन भवन आनन्द अवधपुर जनु घर घर सुत जाये।
नाचत हरषत प्रमुदित ह्वै ह्वै सबन सोहिलो गाये॥
द्वारन बंदनवार साथिये ध्वजा पताका सोहैं।
प्रेम मुदित फूले पुरजन तहाँ अमर अमरपुर को है॥
गज रथ अस्व भवन नहिं मावत सबै सिंगार कराये।
बंदीजन कौं दान देन हित रतन भँडार भराये॥
चलि नृपभवन सुहागिनि-भामिनि सब मिलि मंगल गावैं।
कंचन थार हार उर सोभित गज गति अति छबि पावैं॥
मृदुल नील मनि स्याम राम छबि लखि-लखि अँखियाँ सिरानी।
चिरजीवौ कौसल्यानन्दन कहत सबै मृदु बानी॥
दसरथ राय न्हाय भये ठाढ़े द्विज बंदी सनमानैं।
पुत्र उदै नृप अमित दान दिये जाचक अमर भरानैं॥
आनँदघन ज्यौं बजत दुन्दुभी सुनत संत हरषानैं।
देवन के मन उमँग भई अति सोक परयौ असुरानैं॥
गये अमंगल मंगल ठाँ ठाँ दिसा प्रसन भई सारी।
रामलला के चरन कमल पर गोबिंदसरन बलिहारी॥

राग सारंग

( १६८ )

आज बधाई बाजै माई।
देवलोक भुवलोक रसातल प्रमुदित जन समुदाई॥टेक॥
धाम धाम प्रति ध्वजा पताका मुक्ता बंदन द्वारा।
मंगल साजि चलीं सब सुन्दरि नृप दसरथ दरबारा॥
भवन बेद ध्वनि करत सकल मुनि मंगल ध्वनि भई भारी।
घर घर मानौं पुत्र भयो पुर प्रेम मगन नर नारी॥
मागध सूत भाट बंदीजन दान मान सनमानैं।
सब दानी भये फिरत अवध में श्रीराम जन्म गवानैं॥
सुर भूसुर गो गन हरषानैं खल गन मन मलिनाई।
गोबिंदसरन जन तन मन फूले मन की आस पुराई॥

राग आसावरी

( १६९ )

राम जनम सुनि अपनें पति सौं हँसि ढाढिनि यों बोली हो।
जाओ कंत राजा दसरथ कें दान कोठरी खोली हो॥
तुमैं मिलैगो बागो अँग कौ अरु मोतियन भरि झोली हो।
हमकौं नखसिख गहनौं ल्याज्यो तेलसुधां इक चोली हो॥
साज सहित इक घोरो लीजौ गैयाँ धूमर धौली हो।
सहित अँबारी हाथी लीज्यौ हथनी बहुत अमोली हो॥
सेज सहित इक पलिंगा लीज्यो अरु पानन की ढोली हो।
बीरी करि करि तुम्हैं खवावैं लीज्यौ सुघर तमोली हो॥
लीज्यौ एक कहारन सुधां हमरे चढ़न कौं डोली हो।
सोहनी सी इक सुन्दरि लीजो टहल करन कौं गोली हो॥
जनम जनम जाचौं नहिं काहू बहुरि न ओड़ौं ओली हो।
जन गोबिंद रघुबीर जाचिकैं भई अजाचक टोली हो॥

## चंदन सिंगारोत्सव

राग सारंग

( १७० )

दम्पति कुंज महल में बैठे सुन्दर चन्दन खौरि कियें।
तैसेइ बसन चंदनी सोभित सुभग पाग सिर भृकुटि छियें॥
रुचिर कपूर सिला पर राजत कंवल माल पहिरें जु हियें।
कमल नैंन की अमित माधुरी दृग मधुकर लखि लखि जु जियें॥
तैसिय सहचरि संग सुहाई सेवा सौंज निज करन लियें।
प्रेम मगन तन मन सुधि भूली गोबिंदसरन छबि दृगनि पियें॥

राग सारंग

( १७१ )

सीतल सदन मदनमोहन पिय सोभित कंचन माल गरें।
चंदन कौ तन फब्यौ है पिछौरा तैसिय चन्दन पाग धरें॥
रचि गुलाब दल सेज सुठौनी तापर दम्पति केलि करें।

गावत सारंग राग सखीजन सरस मधुर धुनि हियहि हरैं ॥
भूमि रहे चंदन तरु चहुँधाँ गिरि गोवर्धन झरन झरैं ।
सीतल मंद समीर बहै तहाँ गोबिंदसरन तन ताप हरैं ॥

## श्रीबामन जन्मोत्सव बधाई

राग सूही बिलावल

( १७२ )

आज बधाई री हेली अमर समाज में ।
निज जन फूले री हेली मन आह्लाद में ॥
आह्लाद फूली फिरैं सुरतिय पूजी सु मन की रँगरली ।
तिहुँ लोक मंगल धुनि रली सुख झिली सुरपुर की गली ॥
सुरबधू आई री हेली कस्यप राई कैं ।
बामन प्रगटे री हेली कहौं जस गाइकैं ॥
गाइ जस सुख लहौ किन बह्म सुर-पुर अवतरे ।
गयो सोक सब सुरलोक को अब देव कारज सब सरे ॥
कैसौ लौनौं री बौनौं हेली मन नैंननि पग्यौ ।
अदिति सुभाग सुहागिनि कैं सुकृत फल लग्यौ ॥
फल सुकृत कौ लाग्यौ सखी नीकौ सरस सुत सोहनौं ।
देख्यौ सुन्यौ नहि आज लौं इकटक सबन तन जोहनौं ॥
दसौं दिस भइ विदिस निरमल तिमिर तिहुँपुर को गयौ ।
मलिनता भइ सब असुर मन सुख जु सुरपुर में छयौ ॥
भयौ सुख निज जनन कौं गोबिंदसरन सु गावहीं ।
देव बंदीजन बधाई मुदित घर घर पावहीं ॥

राग सारंग ताल—

( १७३ )

जै जै बावन तन अविकारी ।
अदिति के प्रगट भये खलसूदन मूंज मेखला धारी ॥टेक॥
कस्यपनन्दन स्याम कलेवर जग्यसूत्र कर सोभित झारी ।
छतनां बाम कर कुस दच्छिन लियें बटु बावन बनवारी ॥

आये बलि के जग्य कृपानिधि बलि रीझ्यौ लखि नये भिखारी।
बंदन करि पुनि पद प्रछालि जल सीस धरयौ बंदन त्रिपुरारी॥
लेहु दीप पुनि देस गाँव सब तुम पै कियो बलिहारी।
तीन पैंड भू दीजै बलि मोहि और इछ्या न हमारी॥
दई जबै बलि बिस्व रूप पद तीन करी अवतारी।
बलि कों छलि मघवा कौं दीनी दुख टारयौ महतारी॥
जै जै ध्वनि त्रिभुवन में छाई मन प्रमुदित सुरनारी।
गोविंदसरन जन सदा हरत दुख जुग-जुग प्रगट मुरारी॥

पद राग सारंग ताल

( १७४ )

आज सखी सुरपुर मोद समाजैं,
कस्यिप भवन बधाई बाजैं ॥टेक॥
मंगल गावत सुरबधु निकसीं,
मानहुँ कँवल कली-सी बिगसीं॥
नाचत गावत सब सुर हरषत,
प्रफुलित ह्वै ह्वै फूलन बरसत॥
दसौं दिसा निरमल भइ भारी,
प्रगटे बामन मंगल कारी॥
छंड मेखला छतना धोती,
बेद पढ़त द्विज बर मुख जोती॥
करैं बिचार मन सब ही सोती,
यह बामन मघवा को गोती॥
आय जु बलि कौं दरसन दीनौं,
जग्य सफल गृह पावन कीनौं॥
गोविंदसरन गावत अनुकूले,
संत-भूमि सुर तन मन फूले॥

( प्रमादवश वामन-जन्मोत्सव के पद पहले छप गये हैं उन्हें राधाजन्मोत्सव के अनन्तर पढ़ें । )
—संपादक

## नरसिंह जन्मोत्सव बधाई

पद राग सारंग

( १७५ )

नरहरि सब्द अंड भयो व्यापी ।
सुनि जन मन आनंद उमँग उर असुर चमूँ सब कांपी ॥टेक॥
अद्भुत रूप सुन्यौ नहिं देख्यौ बिधि हू मन भ्रम निपज्यौ ।
रमारमन डर निकट न आवत खल दल भय अति उपज्यौ ॥
मारयौ असुर नखन गहि फारयौ त्रिभुवन दुख निरवारयौ ।
दिसा प्रसन्न नाद भूमंडल मंगल जस बिस्तारयौ ॥
जै जैकार करत कँवलापति पति प्रह्लाद जु राखी ।
गोबिंदसरन रही पैज भक्त की जिहि बिधि बेदन भाखी ॥

राग गौरी

( १७६ )

प्रगटे नरहरि जन सुखदायक ।
खंभ फारि अद्भुत बपु धार्‌यौ सकल किये जन बायक ॥टेक॥
चंड सबद सुनि तिहुँपुर खलभल धरें जु कर नख सायक ।
फार्‌यौ उदर भूमि गहि पटक्यौ न मटक्यौ बहुरि दुखदायक ॥
कट-कट बजत उग्र दसनावलि भाजि गये सब पायक ।
लियो गोद प्रह्लाद भक्त कौं भक्तबछल खल घायक ॥
कर जोरें श्रीप्रभुहि छिमावत भीत सकल सुरनायक ।
सांत रूप भये गोबिंदसरन लखि चार पदारथ दायक ॥

## रथ यात्रा उत्सव

राग मलार ताल चंपक

( १७७ )

रथ सोभा मुख कहत न आवै ।
जापर राजत राधामाधव कोटिक काम लजावै ॥टेक॥
चलनि मंद गति हरत घोष मति भुज पताक बर बानैं ।
चंचल तुरी न खुरी धरत धर मदनपुरी सरसानैं ॥
संग समाज गोप गोपी मिलि मुदित मलार हि गावैं ।

बोलनि हँसनि बंक चितवनि में हरि को हियो सिरावैं ॥
रंगावति ललिता जुग रुख लियें जित मन तितहि हकावत ।
मेवा वर पकवान पान कर समै जानि अरुगावत ॥
जै जै ध्वनि गये सकल अमंगल अमर पुहुप मिलि बरषैं ।
औसर रथ अनूप सुख बरसत गोबिंदसरन लखि हरषैं ॥

राग मलार

( १७८ )

रथ चढ़ि चले भले दोउ सोभित ।
नंदनँदन वृषभाननंदिनी अंग माधुरी गोभित ॥टेक॥
मनि कंचनमै कलस पताकनि धुजनि धरनि छबि छाई ।
बाजि साज सुठि चलन मंद गति बरनैं कोऽब निकाई ॥
सहचरि संग सौंज लियें हार्थानि जुगल प्रेम मदमाती ।
चँवर छत्र कर बीजन बीजत इहि सुख हिय हरषाती ॥
गौर-स्याम छबि धाम काम रति बलि कीने दृग जेरत ।
चितवनि अमित माधुरी बरषत कँवल ललित कर फेरत ॥
जै जै जुगल अनादि एकरस सखि उचरत मुख बानी ।
उज्जल असाढ़ दुतिया सुख बरसत बृन्दाबन रजधानी ॥
रथउत्सव बन के द्रुमबेली पसु पंखिन सुख दीनौ ।
गोबिंदसरन दंपति सुख संपति बन बिहार सुख लीनौं ॥

राग मलार

( १७९ )

रथ चढ़ि आवत गोकुलचन्द ।
आसपास ब्रज ग्वाल मंडली निरखि मिटत दुख द्वन्द ॥
सुभग संवारि रच्यो विसकर्मा नाना रतन अमोल ।
बादर मंद फुही बरसावत सरसत नेह अतोल ॥
हरषित भू राजत चहुँ ओरनि हरषित मोरी मोर ।
देखि देखि सब सुन्दरी सुखनिधि डारत प्रान अकोर ॥
किलकत हँसत ग्वाल तन मन में आनँद उर न समात ।
स्याम सुन्दर मुख देखन कारन बदि बदि आगै जात ॥

पाछैं मंद मंद गति आवत जसुमति करत सँभार।
जुवतीजन सब लेत बलैयाँ वारत मुक्ताहार ॥
अमरफूल डारत अम्बर तें पल पल सुर नर नारि।
देखि देखि सोभा प्रमुदित जन गोबिंदसरन बलिहारि ॥

राग मलार

( १८० )

देखो माई रथ बैठे नँदलाल।
अति बिचित्र पहिरें पट झीनौं उर सोहैं बनमाल ॥टेक॥
सुन्दर रथ मनि जरित मनोहर सुन्दर सोहैं सब साज।
सुन्दर तुरंग चलत धरनी पर रह्यौ घोष सब गाज ॥
ताल पखावज बजे, बांसुरी राजत परम रसाल।
गोबिंद प्रभु पिय पर लैं डारत बिबिध कुसम ब्रजबाल ॥

राग मलार

( १८१ )

देखो माई हरि जू के रथ की सोभा।
प्रात समैं मनौं प्रगट भयो रबि निरखि नयन अति लोभा ॥टेक॥
मनिमय जटित सारज सारस सब ध्वज बिरचित चोभा
मदनमोहन पिय मध्य बिराजत मनसिज मन के छोभा ॥
चलत तुरंग चपल भुव ऊपर कहा कहौं इक सोभा।
आनन्द सिन्धु मकर मनु क्रीडत मदन मुदित चित गोभा ॥
यह बिधि बनी सकल ब्रज बीथिनि महियाँ देत आनन्द।
गोबिंद प्रभु पिय सदा बसौ जिय वृन्दावन के चन्द ॥

## पावस रितु वर्णन

राग मलार

( १८२ )

ललित लतानि तर ठाढ़े हैं ललित भाँति,
राधिकारवन तैसी पावस सुहाई है ॥
उमड़ि घुमड़ि घटा घन घोरि बरसत,
भीजे नेह मेह अंग अंग सुखदाई है ॥टेक॥

सखी चहुँ ओर रूप पान पिचवत दृग,
गावत मलार हियें प्रेम उमगाई है ॥
गोबिंदसरन लखि सुधि हू की सुधि भूली,
रति औ अनंग धर गिरे मुरझाइ है ॥

राग मलार गौड

( १८३ )

उज्जल महल पर बनि ठाड़े दंपति,
तैसिये पावस सोभा अति हो सुहावहीं ॥
साँवरी गोरी सी घटा पीतांबर छबि छटा,
भरे हाव भाव रूप बारि बरसावहीं ॥टेक॥
मुरली धुनि घन गरजनि लरजनि,
सुनि सुनि सखी सुक पिक हरसावहीं ॥
गोबिंदसरन सुख सरिता बढ़ी हैं तामें,
गोपीजन नैन मीन पार पै न पावहीं ॥

राग मलार ताल चंपक

( १८४ )

दरस बिन कैसे भरैं दिन प्यारे ।
पावस रितु घनस्याम घटा सुधि आवत कान्हर कारे ॥टेक॥
सावन मन भावन जस पावन क्यौं बलि अवधि बिसारे ।
पिव पिव रसना रटत पपीहा सुनि सुनि स्रवन दुखारे ॥
परम दयानिधि मघवा भय तें गोपी गोप उबारे ।
अब यह बिरह दवानल जारत किंहि औगुनन सँभारे ॥
घन बन नगर नगर पुर बीथिनि तुम बिन लागत खारे ।
गोबिंदसरन अब तजि निठुराई आय मिलौ नन्द दुलारे ॥

राग मलार चौताल

( १८५ )

नान्हीं नान्हीं हो बूंदनि बरसैं सघन घटा घनघोरैं ।
तैसिये कनक चित्रसारी पौढ़े पिय प्यारी रस रंग बोरैं ॥

तैसेई दादुर मोर कोकिला करत सोर उठत मलय झकोरैं।
दम्पति जिय हुलसैं गोबिंद प्रभु दोउ गावत सुघर मिलि अति तान रसैं॥

राग मलार इकताल

( १८६ )

स्यामैं देखि नाचैं मुदित बन मोर।
ता ऊपर आनन्द उमँग भरि बजत मुरलि कल घोर॥
कुंज कुंज कोकिल कल कूजत अरु दादुर की सोर।
गोबिंद प्रभु सँग सखा लियें बिहरत बल-मोहन की जोर॥

राग मलार

( १८७ )

चहुँ दिस तें घन घोर आई जु स्याम जलद घटा।
दंपति अति रँगभरे बाहाँजोरी फिरैं कुसुम बीनत कालिंदी तटा॥
नान्ही नान्ही बूंदनि बरसनि लाग्यौ तैसिये लहक दामिनी छटा।
गोबिंदप्रभु ओढ़ि रातौ पट दौरि लयौ जाय बंसीबटा॥

## हिंडोरा उत्सव

राग मारू

( १८८ )

हिंडोरैं आली झूलत रंगभरे।
रूप रासि राधामोहन दोऊ प्रेम की ढरनि ढरे॥टेक॥
डांडी चारु सरस पटली जुग खंभा रतन जरे।
रमकि झमकि झूलनि फूलनि लखि पलक बसन बिसरे॥
सावन मनभावन बन फूल्यौ उमड़ि घटा घुमरे।
मंद हँसनि चौंका चमकनि बलि बड़े चिकुर बिथुरे॥
कुच जुग मूल हार सोभित कल पवन परसि उघरे।
गौर-स्याम सोभा निरखत रति-मदन के गर्ब गरे॥
अंजन जुत नैना मन रंजन खंजन जुगल अरे।
गोबिंदसरन गावति सहचरि सुनि खग मृग सुधि बिसरे॥

राग सोरठ

( १८९ )

रँगीली बाल झूलत रंग रह्यौ री ।
रंगावति झुलवति रस पागी सुख नहिं परत कह्यौ री ॥टेक॥
मधुर सुरनि गावति सहचरि सुनि खग मृग मौन गह्यौ री ।
रूप छटा लगि नव पल्लव भयो सिव ज्यौं मदन दह्यौ री ॥
रमकि झमकि झूलनि फूलनि सुख दुरि कें लाल चह्यौ री ।
गोबिंदसरन दृग-बसन बिसारे मन प्रेम प्रवाह बह्यौ री ॥

राग धनाश्री

( १९० )

रतन हिंडोरना हो सखीजन रच्यौ है बनाय ।
झूलत जुगल किसोर रूपनिधि हितुजन देत झुलाय ॥टेक॥
गौरस्याम तन नील पीत लसैं सोभा कहिय न जाय ।
झोटा तरल भये नीकैं राजत घन-दामिन के भाय ॥
गान करत मन हरत परस्पर अति हि बढ्यौ चित चाय ।
सखिजन मगन भईं सुख सागर निरखत चित न अघाय ॥
जानें स्रमित जबें सखियन दोउ निज मन्दिर पधराय ।
आरति हरनि नागरी-नागर गोबिंदसरन बलि जाय ॥

राग मलार

( १९१ )

अहो रितु पावस लगत सुहाई ।
रंग हिंडोरैं झूलें राधा मोहन हियैं प्रेम उमगाई ॥टेक॥
नव बंसीबट नव जमुनातट नव बन भू छबि छाई ।
नव घनस्याम नवल श्रीराधे नवल घटा झुकि आई ॥
नवलहि सखी सुघर गावत सब राग मलार नवीन मल्हाई ।
रति रंभा अरु सची उरबसी सुनि धुनि मन ललचाई ॥
रमकन रँगीली में रंग रह्यौ बढ़ि सुख बारिधि न समाई ।
गोबिंदसरन बलि बलि तृन तोरत सुख निरखत न अघाई ॥

राग धनाश्री

( १९२ )

रँगीले हिंडोरैं झूलैं रंगभरी श्रीराधे राजकुमारि ।।टेक।।
गौर बरन पट नील सुदेस, मुख पर बलि कीनैं राकेस ।
मंद हँसनि मनु बरषत फूल, झूलत सुभग कलपतरु मूल ।।
सहचरि संग समान गुन रूप, एक प्रेम रँग रँगी अनूप ।
गावत सब मिलि हरि अनुराग, कुसुमित नव बृन्दाबन बाग ।।
सरस मधुर ध्वनि सुनि निजु स्याम, आये कमलनैन अभिराम ।
दम्पति मिलि झूलत निज ऐन, छबि लखि लाजत हैं रति मैन।।
हरषि झुलावत सखी सुजान, जिनकैं मोहन जीवन प्रान ।
बढ्यौ सुखसिंधु कह्यौ नहिं जाय, गोबिंदसरन निरखत न अघाय।।

राग धनाश्री

( १९३ )

हौं बलि बलि गई री या छबि ऊपर राधामाधव झूलैं ।
धीर समीर भीर सोभा की त्रिविध पवन अनुकूलैं ।।टेक।।
मनि कंचन को रच्यौ हिंडोरा सुमन कलपतरू मूलैं ।
प्रफुलित बन नव पल्लव सोभित कालिन्दी के कूलैं ।।
रमकि रमकि झूलनि फूलनि में को दीजै समतूलैं ।
गोबिंदसरन सोभा संपति लखि रतिपति की सुधि भूलैं ।।

राग धनाश्री

( १९४ )

श्रीवृषभान दुलारी झूलत मोहना ।
रमकनि रंगीली में जगमगात दुति कँवलनैन मुख सोहना ।।टेक।।
डाँडी रतन रतन की पटुली कनक खंभ लगे जोहना ।
गोबिंदसरन लखि बिबस भई हौं लोभी दृग लगे गोहना ।।

राग सोरठ

( १९५ )

हिंडोरैं पिय प्यारी झूलैं, छवि छाई कालिंदी कूलैं ।।टेक।।
सिर पाग सुरंगी सोहै, मन मोर चन्द्रिका मोहै ।

उर दमक पदिक मनि चौकी, दुति फीकी परी ग्रहनौ की॥
स्यामा सारी लहरिया पहिरैं, अंग अंग बढ़ो छबि लहरैं।
सखि चपल दृगन के कोनैं, सुन्दर अस भये न होनैं॥
पावस रितु बिपुन सुहायो, धुनि मोर कोकिलन छायो।
गावत मलार सुर मीठो, मनु पठई मदन बसीठी॥
रंगदेवी झुलावति ठाढ़ी, झूलनि लखि हिय रति बाढ़ी।
गोबिंदसरन बलिहारी, सोभा मन टरत न टारी॥

राग केदारो ताल मूल

( १९६ )

अरी देखि जोरी कैसी नीकी, सोभित झूलत मूल कलपतर।
रमकन रँगीली में छाय रह्यौ रँग जगमगि रही बिपुन घर॥टेक॥
सांवर गौर एकरस बिलसत को दीजै इन पटतर।
गोबिंदसरन निरगुन निकेत गुन-मायाकृत सब सुर नर॥

राग नायकी ताल रूपक

( १९७ )

झूलत दोऊ रंग हिंडोरैं।
अतुलित सोभा उठै छबि की झकोरैं॥टेक॥
पावस रितु सावन मनभावन मंद मंद घनघोरैं।
कोकिल कलरव स्रवन सुहावत दादुर मोर चकोरैं॥
कालिंदी तट सुभग कलपतरु झुलवत सखि लखि लखि तृन तोरैं।
गोबिंदसरन बानिक को बरनै रति-पति को मद मोरैं॥

राग सोरठ

( १९८ )

नवरँग नागरी-नागर झूलत, नवरंग हिंडोरैं रही छबि छाय।
नवरँग कनक खंभ नग जगमगा, दुति दमकनी लखि दृग न अघाय॥टेक॥
नवरँग मोर कोकिला बोलत नव नव रँग घन गरजत भरि भाय।
नवरँग जमुना पुलिन नलिन बन नवरँग भँवर गुंज सरसाय॥
नवरँग सखी झुलावति ठाढ़ी प्रेम छकी दंपति गुन गाय।
रीझ रीझ तोरत त्रिन छिन छिन जिनकें हियें चौगुनो चाय॥

नवरँग फूलन तकिया फबि रहे गादी फूलन अधिक सुहाय ।
नवरँग सोभा श्रीवृन्दाबन गोबिंदसरन लखि· हियो सिराय ॥

राग केदारो

( १९९ )

सब गुन आगर हो नट नागर ।
आलस बलित ललित लोचन ये कौनौं निसि कहुँ जागर ॥टेक॥
मन मेरो तुम कौं न पतीजै दृग मेरौ करत अनादर ।
रोके रुकत न धावत उतही पीवत रूप पल सादर ॥
पलन पीक अंजन अधरन फब्यौ याही ते होत उजागर ।
गोबिंदसरन झूलैं सुरत हिंडोरें आये मेरें उदै बिभाकर ॥

राग हमीर कल्यान

( २०० )

सखी बन्यौं नीको रंग हिंडोलना ।
डाँडी चारु रतन को पटुली कंचन खंभ अतोलना ॥टेक॥
झूलत जुगल किसोर रूपनिधि पहिरें बसन अमोलना ।
गावत राग मलार मधुर सुर मिलि सखियन के टोलना ॥
करत विहार मंद मुसकिन में पुनि मृदु मीठे बोलना ।
गोबिंदसरन औसर सोभा लखि सुरनर भये अडोलना ॥

राग—

( २०१ )

रसिकानन्द रसिकनी झूलैं हंससुता तीरैं ।
पावस रितु घन घुमड़न बन भई अति छबि की भीरैं ॥टेक॥
रमकि झमकि सहचरि झूलवत दुति हँसनि गमक हीरैं ।
जब हिंडोरना तरल होत तब प्रिया कहत धीरैं ॥
बोलत हंस चकोर कोकिला कोलाहल कीरैं ।
मनि कंचन को रच्यो हिंडोरो बने बागैं बीरैं ॥
गोबिंदसरन चितवन मुसकनि कोउ भिजवत सुख सीरैं ।
उरझि रही सुरझत नहिं अँखियां नील जु पट पीरैं ॥

राग सोरठ

( २०२ )

भूलत जनकलली रघुनंदन ।
अति अभिराम धाम छबि गुननिधि धनुषबान कर कंजन ॥टेक॥
सरजू तीर कलपतरु छइयाँ हरित भूमि मनरंजन ।
पावस रितु बन उपवन सोभा निरखि होत मन मंजन ॥
उर बिसाल पर मुक्तामाल सोहै भक्तन के भय भंजन ।
गोबिंदसरन राजाधिराज नृप तिलक असुर दल गंजन ॥

राग—

( २०३ )

देखहु जनकलली को भूलन ।
मनि हिंडोर तुम दिस आवत तब बाढ़त प्रभा अतूलन ॥टेक॥
अलि उपमावलि कहि दुलरावत सुनि मावत नहिं फूलन ।
गोबिंदसरन सोभा लखि रघुकुल तिलक चन्द दुति भूलन ॥

राग मरहटी

( २०४ )

झूलैं गिरधारी छबि भारी, संग वृषभान दुलारी ॥टेक॥
डाँडो रतन सँवारी, खंभा रतन कलस दुति न्यारी ।
घन दामिनी अनुहारी, अंखियाँ रतनारी झपकारी ॥
मुख अलकैं सोहैं घुंघरारी, नागिनि मधुपान करत मतवारी ।
गोबिंदसरन बलिहारी, दंपति मनहुँ रूप की क्यारी ॥

## पवित्रा उत्सव

राग—

( २०५ )

आज पवित्रा दिन मनभायो ।
स्रावन अमल एकादसि मगसर सुभ नछत्र भल पायो ॥
रतन कनक रेसम सुन्दर लै अथवा सूत बनावौ ।
फुंदना रुचिर ग्रन्थि मोतिन की प्यारी पिय पहिरावौ ॥

सुन्दर तिलक करौ रोरी कौ तामधि अछित लगावौ ।
मेवा बर पकवान सरस रस हित सौं लै अरुगावौ ॥
तन मन करौ वारनैं अपनैं निरखि नैन सचु पावौ ।
गोबिंदसरन पवित्र किये सब गुनगन रसना गावौ ॥

राग—

( २०६ )

पवित्रा रेसम बने कनक के ।
पीत रंग मोतिन के छल्ला फुंदना रुचिर बनक के ॥टेक॥
रचि रंगादिक सखि पहिरावत छवि न बढ़ी कछु थोरी ।
सुठि सुगंध लगाय अच्छित जुत तिलक बनावत रोरी ॥
उज्जल स्रावन दिन एकादसि उत्सव सखियन कीनौं ।
तिहि औसर दम्पति सबहिन कौं दान मान बहु दीनौं ॥
वृन्दाबिपुन सरस रस बरसत मंगल गावत गोरी ।
गोबिंद भये पबित्र लोक सब बरन सकै अस कोरी ॥

## रक्षा बंधन--उत्सव

राग मलार

( २०७ )

आज सखि उत्सव जीवनि जीकौ ।
सावन पून्यौं मन रँगरलियाँ राखी सजनि सजी कौ ॥टेक॥
कनक थार अच्छित फल रोरी कंचन रतन खची कौ ।
बाँधत मन प्रमुदित हग जीवनि करि लै लजनि लजी कौ ॥
पुनि लै रसिक पुरंदर कर धरि दुति खल गुरु लग फीकौ ।
रोरी तिलक अछित पुनि मधि दै दरसन भूख भजी कौ ॥
मेवा मिस्री भोग अरोगत बर पकवान सु घी कौ ।
गोबिंदसरन तन मन धन वारत उर अभिलाष पुजी कौ ॥

राग मलार

( २०८ )

आज सुख बरसत पून्यौ सावन ।
मंगल सजि अम्बर भूषन बर लगी सखी मिलि गावन ॥टेक॥

कनक थार कर विप्र सवासनि रौरी श्रीफल पान।
आई सब राखी बाँधन हित पठई नन्द वृषभान॥
जथाविधि राखी बाँधि जुगल कर मन कियो रहसि बढ़ावन।
चोज बचन कहि कहि मृदुबानी उज्जल रस बरसावन॥
देखो री हरि की रचना तन कारे पै सुन्दर।
जानत गुन हम प्रिया संग तें जग भये रसिक पुरंदर॥
देखो री किन मन बिचार तुम नन्द जसोदा गोरे।
कौन हेत ये तन साँवल भये रस सिंगार रँग बोरे॥
बरस्यो दुहूँ कोद मोद सुख सरसो पहराई द्विजरवनी।
गोबिंदसरन आसीस देत सब निज निज गेहन गवनी॥

## श्रीकृष्णजन्मोत्सव

राग बिलावल त्रिताल

( २०९ )

आज बाजत बधाई ब्रजराज कें सखि गहगहे घुरत निसान।
गावत मंगल गोतनि गोपी प्रगटे प्रीतम-प्रान॥टेक॥
ठाँ-ठाँ बिमुख उलूक छिपे उदै ब्रजपतिसुत कुलभान।
दिसा प्रसन्न कँवल-कुल फूले बिनहीं भये बिहान॥
प्रीति-रीति भई-नई सु हरि-मृग रूठे मिलत सुजान।
फूले फिरत गोप गोपी तन्यौं तिहूँ पुर सुजस-बितान॥
नाचत प्रेम-मगन सुधि बिसरी गुन-गन-रूप-निधान।
मागध बंदीजन सनमानें मुदित करत गुनगान॥
गोबिंदसरन द्विज बेद पढ़ें मंगल बेद बिधान।
देत दच्छिना रुकम रतन-रथ हरषि करत गोदान॥

राग बिहागरो ताल—

( २१० )

आज नन्दसदन गोपन की भीर।
दधि काँवर काँधै धरि नाचत प्रेम मगन मन मुदित अहीर।।टेक॥
फूले फिरत बदत नहिं काहू जबतें प्रगट भये बलबीर।
घर घर बात करत नौछावर मनि माला पाटम्बर चीर॥

निरखि निरखि घनस्याम धाम छबि काहू सुधि नहिं रही सरीर।
गोबिंदसरन दीनें पाट पिछौरा गोकुलपति उदार मतिधीर॥

राग बिहागरो ताल—

( २११ )

घर नन्द महर कें मंगलचार।
गावें गीत पुनीत श्रवन सुनि केसर मृग मद लिप्यौ अगार॥टेक॥
गोपी छबि ओपी आवत सोहैं हाथन कंचन थार।
श्रवननि मनि कुण्डल झलकत उर गज मोतिन के लसर हार॥
महा मुदित मन कंचन गिरि सम गोपराजजू अति ही उदार।
गोधन वृन्द रुकम रथ गज हय दीन्हे बिप्रन कनक पहार॥
भाव भरे नाचत नारी नर छिरकत दधि गावत गुन सार।
गोबिंदसरन रिधि सिद्धि नन्द कें बपुरी फिरत बुहारत द्वार॥

राग आसावरो

( २१२ )

रावल माधव के गुन गावैं।
आयौ नन्दसदन दरसन हित है कोउ अलख लखावैं॥टेक॥
सृंगी नाद हरत मन सबके सोवत पुरष जगावैं।
पहपट दै नावत आंगन मैं प्रेमावेस जनावैं॥
बाघंबर ओढ़ें अति सुन्दर गोरे अंग सुहावैं।
जोगनि संग गोरज्या नीकी बृजजन चित चुरावैं॥
कहाँ बसत रावर बूझत जसु उत्तर दिसा बतावैं।
बालकृष्न को दरसन करि करि पल सौं पल न लगावैं॥
कहैं जोगी जसुमति रानी सौं जो मेरो खपर भरावैं।
रोग--दोष कबहूँ नहिं ब्यापैं तेरो सुत सुख पावैं॥
सुनि जसुमति मन अति हरषाई सुत कौं चरन छिवावैं।
मेवा बहुत मँगाय मोद सौं सिर पर हाथ धरावैं॥
डरे जान चुकटी भभूत दई मोर को पच्छि फिरावैं।
टकि टकि चहत बदन रावल को किलकि किलकि मुसक्यावैं॥

जुग जुग दरस भिखारी जोगी बिन दरसन अकुलावैं।
गोबिंदसरन प्रभु प्रगट होत जहाँ तहाँ तहाँ उठि धावैं॥

राग गौरी ताल

( २१३ )

अहो ब्रज घर घर मंगलचार सहेलो आज सोहिलो॥टेक॥
भई दिस अरु बिदिस निर्मल सजन पुलकित गात।
मही मंगल नाद पूरत कही न परत कछु बात॥
हुतौ जिनकें दोस मन में ते मिले भरि अंक।
फूली कमोदनि सरनि में सखि बिनहि प्रगट मयंक॥
जनम दुखिया हुते जे कोउ नाँहि घर पर छाँह।
रमा तिन सौं कृपा करि करि मिलत है भरि बाँह॥
किये जाचक सब अजाचक राय परम उदार।
ढोय लै गये सिरसली तन भरि दीनें निज आगार॥
गोप लै दधि दूध काँवरि चले नन्द निकेत।
फूले परसपर छिरकहीं सब हरषत हेरी देत॥
संग मैन से लरिका लियें गवनी जु गोप कुवांरि।
तृषित दृग हरि दरस प्यासी हरषत बदन निहारि॥
चलि सवासनि बेग चलिये अब बिलंब न लाय।
पाय जसु कें लाग लैहैं मेवा गोद भराय॥
देव दुंदुभि बजत नीकी घुरत घोष निसान।
गोबिंदसरन इत बेद ध्वनि सौं सुनिय परत नहिं कान॥

राग ताल

( २१४ )

भवन बधाई नन्दराय कें प्रगटे मंगलमनि घनस्याम॥टेक॥
घोष कुलाहल प्रमुदित गोप, देखि सखी कछु औरैं ओप।
रमा रीझि मानौं गोकुल बसी, यह छबि मेरे मन मैं लसी॥
घर घर ते निकसी सकुंवार, हाथन सोहत कंचन थार।
खिसत जु सिर तें सुमन सुदेस, जनु चरनन परि रीझे केस॥

इक बाला रचै साथिये द्वार, बांधत मुक्ता बंदनवार।
गावत मंगल गीत रसाल, आवत छबि पावत नव बाल॥
मृदुल नील घन रुचिर सु अंग, निरखि नैन गति होत जु पंग।
लै बलाय गोपी देत असीस, कुंवर कुसल राखहु जगदीस॥
आँगन बेद पढत द्विजराय, सुनि निसान ध्वनि बढ़यौ सु चाय।
बंदीजन गुन करत प्रसंस, मागद पढ़त हरषि बर बंस॥
अति उदारमनि श्रीवृजराज, पूरे सब बिधि सब के काज।
गोबिंदसरन फूले न समाय, यह छबि निरखत दृग न अघाय॥

राग गौरी ताल

( २१५ )

अहो आज वृज की सोभा औरै।
धाम धाम प्रति ध्वजा पताका सथिया सोभित कोरैं॥टेक॥
कृष्न जनम कोउ करत न आदर नौ निधि जननि निहोरैं।
रमा रीझि आय बसी गोकुल मैं अष्ट सिद्धि तिहिं धोरैं॥
गावत ग्वाल देत हेरी सब दधि काँवरि लै दौरैं।
कहा नांव है नन्द सुवन कौ कहत द्विजन कर जोरैं॥
मोहू लै चलि नन्द भवन कौं दैहैं ननद अकोरैं।
लखि मोहन की मोहनि मूरति गोबिंदसरन तृन तोरैं॥

राग गौरी ताल

( २१६ )

बधाई आज नन्दसदन में बाजैं।
इत निसान उत देवदुंभी हरषि परसपर गाजैं॥टेक॥
कनक थार लीनें भरि सुन्दरि सजि सजि मंगल साजैं।
नन्दसदन सागर कौं धाई मनु सलिता तजि पाजैं॥
भवन बेद ध्वनि करत महामुनि बैठे सबै समाजैं।
देत असीस सकल नरनारी पुत्र कुसल कै काजैं॥
बंस अभीर पढ़त मन फूले ढाढ़ी करत अवाजैं।
गोबिंदसरन सुनि स्रवन सबन के सकल अमंगल भाजैं॥

राग जोगिया आसावरी ताल

( २१७ )

आयो एक जोगिया री भस्म चढ़ायें अंग ।
हिम कर्पूर गौर बाघंबर जोगनि सोहति संग ॥टेक॥
नैन तीन इकटक मोहन लखैं जाकै प्रेम अभंग ।
अलख अलख कहि अलख जगावत नाचत बढ़वत रंग ॥
जटाजूट मण्डित गुन पण्डित धरैं नाग अरधंग ।
गोबिंदसरन रावल की जसुमति धरि दिये लाल उछंग ॥

राग ताल

( २१८ )

बजत बधाई ब्रजपति जू कैं धाम माई सुहाई स्रवन सुखदाई ।
सुरपुर नागलोक किन्नरपुर सब ठौं अमल धुनि छाई ॥टेक॥
ब्रह्म अगोचर भयो दृगगोचर निज जन आस पुराई ।
नेति नेति स्रुति कहत निरंतर तिहि नेतनी बँधाई ॥
आदि अंत जाकौ लखैं न कोऊ सो भयो अलख लखाई ।
गोबिंदसरन डोलैं ब्रजजन फूले निज संपदा लुटाई ॥

राग सारंग ताल चर्चरी

( २१९ )

आज ब्रजपतिसदन मदन मन सोहिले सोहिले होत सखि रंगभीने ।
प्रेम मगन तन अंगन गावत गुनी ताल बंधान सुर अति नवीनें ॥टेक॥
पहिरि भूषन हार मुक्तान के मैन से कुंवर लियें संग सोहैं ।
थार हाथनि जुवति गीत गावत चलीं लगत सब भली सुरबधू कोहैं ॥
दाम मुक्ताहलनि द्वार बाँधी रुचिर नगर अरु बगर पट कनक छायो ।
हेम के कलस घर सिखर सोभित ध्वजा अवनि मनु अमरपुर उतरि आयो ॥
पाग सिर जरकसी पहिरि उर उर बसी नन्द आनन्द हरि पुत्र पायो ।
रंक को इंद्र जाको सदन संपति लखैं सुजन दियो दान झर कनक लायो ॥
ग्वाल नाचत अजिर कंध काँवर धरैं साँवरे कुंवर के रंग राते ।
हरद अरु दही छिरकत न काहू गनत राव अरु रंक सब प्रेम माते ॥

मृदुल मनि नील तन स्याम सोभित ललन दरस करि गोपिकन सुधि भुलानी।
बेत मनिहार मानत सुफल अपनपौ बारि हरिदेव परि पिवत पानी ॥
गोप पहराय नँदराय हरषित किये बधुन दिये बसन पट नन्दरानी।
सरनगोबिंद सुख बढ़्यौ अति घोष मैं कह्यौ नहिं जाय सो एक बानी ॥

राग गौरी ताल

( २२० )

आज बधाई बजत सुहाई नन्दसदन मिलि मंगल गावहिं।
आवत रंगभरी निसान धुनि सुर नर मुदित पुहुप बरषावहिं ॥टेक॥
नाचत गोप लियें काँवरि-दधि प्रेम मगन तन सुधि बिसरावहिं।
ललन बिलोकि बलैया लै लै गोबिंदसरन पल पल न लगावहिं ॥

राग ताल

( २२१ )

सजनी श्रीब्रजपति आंगन मैं बजत बधाई सरस सुहाई।
ब्रजबनिता उपहार थार लै गृह गृह तें हरषित उठि धाई ॥टेक॥
झूमक दै नाचत गोपी मिलि फूली अंग न अंग समाई।
गोबिंदसरन सोभा संपति बढ़ी निरषत नैननि चित्त अघाई ॥

राग अडाणी बाल

( २२२ )

बजत बधाई ब्रजपति जू कैं धाम माई,
लगत सुहाई हियें श्रवन सुखदैन ॥
जै जै धुनि घोष मधि छाय रही तिहूँपुर,
थेई थेई थेई नटि नाँचैं छवि जटी अैन ॥टेक॥
नागड़दी नागड़दी नाथा गड़दी थागड़ दी था,
बजत मृदंग कछू कही न परत बैन ॥
गोबिंदसरन ओक भयो सुख लोक,
लोकपति सुनि भयो है परम चैन ॥

राग केदारो ताल

( २२३ )

रजनी सुहाई माई आज की लागत नीकी,
गोकुलपति जू कैं सुत भयो।

गोपी सब प्रेम मगन प्रगटे हरि कामदवन,
गावत अनुराग सहित हिये मोद छयो ।।टेक।।
गोपगन डोलैं फूले सुख के हिंडोरैं झूलैं,
विधि महेस भूमि सुर सबन कौ दुख गयो ।
गोबिंदसरन सुखकरन आये गिरराजधरन,
उनयो है मोद घन जु सुख कौ बीज जयो ।।

राग बिलावल इकताल

( २२४ )

सोहिलो आज नन्दसदन में सुहायौ ।
लयो अजन्मा जन्म भक्त हित (जो) निगम हुं अगम बतायौ ।।टेक।।
जाकौं ब्रह्मा कमलनाल में खोजि फिरचौ नहिं पायौ ।
बड़भागिनि जसुमति रानी मुख चूमि कंठ लपटायौ ।।
माया अंजन रहित गुसांई निरंजन नाम कहायौ ।
ताके दृग अंजन दयो जसुमति नैन निरखि सचु पायौ ।।
काल को काल जु अकल सकलपति जिनि यह जग उपजायौ ।
जाके मुख माटी लखि जसुमति कर साँटी डरपायौ ।।
हरिमाया सब जगत नचायो लखि सिव बिधि सिर नायौ ।
गोपीजन सौं छछी छाछि कों चुटकी दै जु नचायौ ।।
जोगी जोग ध्यान खोजत जिहिं जज्ञ भोग नहिं आयौ ।
प्रेम भक्ति हित ब्रजबासिन को चोरि-चोरि दधि खायौ ।।
ब्रह्मानन्द नन्द-ब्रज प्रगटे जसुधा मुक्ति तन पायौ ।
इनही कौ यह भाग जगत में नारायन गृह आयौ ।।
असुर-तिमिर बृजचन्द उदै भये मिट्यौ दृगनि दरसायौ ।
गोबिंदसरन सुर तन-मन फूले असुरन सीस डुलायौ ।।

राग सोरठ ताल इक ताल

( २२५ )

मंगलझर ब्रजपति जू के ऐन ।
सुर भूसुर जु नाग किनर नर भयो सबहिन चित चैन ।।टेक।।
सजिये अंजन मंजन नवसत बिन बिलम्ब अब गैन ।
नाचैं मुदित मन संकर ताण्डव नारद बजवत बैन ।।

गोपिन संग गोपसुत नीके मनु सोहत सँग मैन।
गोबिंदसरन ब्रज प्रगट भये बलि निजजन आनँद दैन॥

राग आसावरी एक ताल

( २२६ )

बजत बधाई नन्द सदन में डोलत ब्रजजन फूले री।
भयो सपूत पूत ब्रजपति कें देव-पितर अनुकूले री॥टेक॥
भादौं मास दिवस आठैं सुभ रोहिनी औ बुध नीको री।
रानी जसुमति कूख प्रगट भयो लाल भावतो जीको री॥
सदन बेद ध्वनि करत बिप्रगन मंगल ध्वनि गोकुल छाई री।
ज्यौं ससि उदै कुमुद प्रफुलित यौं फूले जन समुदाई री॥
मंगल साजि चलीं भामिनि गजगामिनि रति लखि लाजै री।
गावत मंगल गीत सुनत सब जगत अमंगल भाजै री॥
गुनधाम स्याम बर बदन बिलोकत तन मन सुधि बिसराई री।
देत असीस सकल गोपीजन चिरजीवौ कुँवर कन्हाई री॥
अति उदार ब्रजराज सबै द्विज दान मान सनमानै री।
गज रथ अस्व हीर मनि मोती लै लै सबै अघानै री॥
प्रेम मगन नाचत नर नारी फूले अंग न मावैं री।
लै दधि दूध परसपर डारत आँगन कीच मचावैं री॥
द्वै लख धेनु दई द्विजनि कौं प्रथम प्रसूता सूधी री।
सोनैं सींग मढ़ी खुर तामैं बच्छ सहित घन-दूधी री॥
बहुरि नन्द बहु रतन मंगाये सब इक ठौरे कीन्हे री।
तिल-चावरी राय आंगन में बांटि सबनि कौं दीन्हे री॥
सुनि कीरति मन हरष भयौ अति ज्यौं निज घर सुत जायौ री।
भूषन बसन औरि मनिमाला सब परकरि पहिरायौ री॥
देस देस के जाचिक आये सुनि सुनि जनम बधाई री।
नाचत गावत प्रमुदित ह्वै ह्वै हरषि असीस सुनाई री॥
ब्रजपति सब भण्डार खुलाये लेहु जाहि जो भावै री।
इहिं घर जाचि और नृप के कहा जाचिक नाम धरावै री॥

नँदरानी तब बोलि निकट सब जुवतीजन पहिराई री।
सारी सुरंग अमोल अभूषन पहरि सबै हरषाई री॥
जसुमति रानी भागनि पूरी हरि पूरन सुत जायौ री।
नन्द बड़े बड़भागी जग में गोबिंदसरन जस गायौ री॥

राग देवगंधार ताल चंपक

( २२७ )

उदै भयो परमानँद नंद कैं।
भुवन चतुरदस सप्त दीप नृप आये बधाई ब्रजचन्द कैं॥टेक॥
जै जै धुनि ब्रह्मंड खंड छई अति मन हरष सुरिंद कैं।
असुर तिमर गयो मुदित भये मन फूल सु उडगन वृन्द कैं॥
सनकादिक नारद नाचत गुन भक्ताधीन सु छंद कैं।
गोपी-गोप सु तन-मन वारत प्रमुदित सरनगोबिंद कैं॥

राग सारंग ताल

( २२८ )

नँदरानी सुत जायो महरि कैं मन्दिर बेगि चलौ री।
चली जाहु उहि धाम स्यामहीं जाकी ऊंची पौरी॥टेक॥
मालिन बंदनवारि बनाई बीच अंब की मौरी।
द्वार द्वार प्रति सोभित सुन्दर सखिया ओपि तकौ री॥
देत महावर पाइन चाइन नाइन डोलै दौरी।
उठौ सदन तैं बदन पखारौ भूषन बसन सजौ री॥
हाथन कंचन थार लेहु सजि मधि मोती सौ-सौ री।
गावत आवत मंगल मानौ बृशत संकर-गौरी॥
सब बनितनि की सुभग मण्डली सिमिट भई इक ठौरी।
बालक बिरध तरुन अति तिन मैं कोउ कोउ लरकौरी॥
उठि आई बृजपति कै आँगन किनहूँ न कोनी बौरी।
जन गोबिंद-बलबीर सरनकी सबहिन लागी ढौरी॥

राग सारंग ताल

( २२९ )

बिटिया ल्यावो मोर-चकोरा नन्द महर कैं मन्दिर।
सुनरा गढ़ि सोनें को हाथी अरु अद्भुत इक घोरा॥टेक॥

मालिन बंदनमाल बनाई बिच-बिच राखे कोरा।
सूजो सूथा सांवरे सुंदर पोइ पाट के डोरा॥
कुम्हरा गढ़ि कलसा इक ल्यायो परत कनक कें भोरा।
लाखनि किये लाख के लटकन मनि कंचन के डोरा॥
कहिये कहा भेंट ब्रजपुर की कहत न आवै ओरा।
जन्मत हीं ये कुँवर कन्हैया सब ही के चित चोरा॥
तन मन मगन भये नँदबाबा देत दान नहिं थोरा।
दारिद भार बुझे सबहिन के दिन दिन को रनि तोरा॥
देत असीस चले जन गोबिंद अप-अपने गृह ओरा।
चिरजीवौ यहै गिरधर-हलधर गौर-स्याम सुभ जोरा॥

राग बिलावल ताल चंपक

( २३० )

श्रीब्रजराज घरनि लै बधायो,
चली हैं सकल ब्रजबाल ॥टेक॥
राजत तिलक मृगमद भाल।
बेंनी पीठि होत सुचाल॥
ररकैं उरन मुक्ता हार।
लचकति सुकटि कुच भर भार॥
सुभकर जटित सोभित थार।
तापर बिबिध धरि उपहार॥
प्रेमानन्द छकि भरि पूर।
छबि लखि होत मनमथ चूर॥
बीना जल तरंग उपंग।
महुवरि मुरज अरु मुखचंग॥
ढोलक ढोल मधुर मृदंग।
बाजत बेनु प्रनव सुधंग॥
नाचत गोप छाके छैल।
गहमह भोर चलत न गैल॥

धरि धरि दूब सबकैं सीस, देत असीस मिलि ब्रजईस ।
आवत एक एक घर जात, उमग्यो प्रेम उर न समात ॥
हो हो करत दै करतार, पै-दधि-हरद मांची मार ।
उठि उठि नन्द एकनि मिलत,जसुदा मोद भरिभरि रिलत॥
कहि कहि उठत सब ब्रजबाम,रानी चिरजीवौ घनस्याम ।
बाढ़ौ बेग बढ़ौ प्रताप, कीनौ सुफल द्विज जप-जाप ॥
बिलसौ विविध नन्द उमंग, हँसि हँसि पूत लेहु उछंग ।
कहि कहि बचन अति तुतरात,बढ़वौ प्रीति अपनी मात ॥
हुलसत हँसत यौं कहि बैन, गृह पति चलत नेकु चलै न ।
उफन्यौ उदधि प्रेम अमन्द,मिटि गयौ सबनि कौ दुख द्वंद॥
यह सुख रह्यौ नैननि छाय, पिये गोबिंद बलि बलि जाय ।

## श्रीराधाजन्मोत्सव बधाई

राग भैरो तालचर्चरी

( २३१ )

अरुन उदै भानभवन प्रगट भई राधा ।
भादो सुकल अष्टमी सुभ हरन रसिक बाधा ॥टेक॥
लोक लोक भयो प्रकास सुर नर मुनि हरषे ।
बाजत नीसान गगन मुदित फूल बरषे ॥
सनकादिक नारद औ सारद गुन गावैं ।
निरखि ललौ अरुन चरन पंकज सिर नावैं ॥
भूप भवन भीर अजिर गोपि-गोप नाचैं ।
गावत सुर मधुर ग्रीव दुरन ताल साचैं ॥
मागद अरु भाट द्वार बंदी जस बोलैं ।
किये अभर भानराय प्रेम मगन डोलैं ॥
गोबिंदसरन औसर सुख देखत बनि आवै ।
उमग्यौ सुख--सागर तिहि पार कौन पावै ॥

राग आसावरी ताल

( २३२ )

प्रगटी हैं कुंवरि लड़ैती राधा ।
श्रीवृषभान गोप कें मन्दिर सोभानिधि गुन-रूप अगाधा ॥

घोष कुलाहल आनन्द भारी, प्रेम मगन नाचत नर-नारी।
बिसरी सुधि तन भाव अभंगा, गावत हरषत छिरकत रंगा॥
गोबिंदसरन प्रभु आनंदमूरति, पटतर को दीजै तिहिं सूरति।

राग ताल

( २३३ )

रँगीलो बनि आई आज बधाई।
साहिबनी रससार प्रगट मंगल धुनि तिहुँपुर छाई ॥टेक॥
आँगन गावत-नाचत गोपी चपला-सी अंग सुहाई।
गोबिंदसरन अति लग्यौ मोद झरि जसुमति मन सरसाई॥

राग गौरी ताल

( २३४ )

सहेली आज सोहिलो सुहायौ।
मंगल धुनि तिहुँपुर छायौ ॥टेक॥
भादौं सुकल अष्टमी सुभ दिन बार जोग समुदाई।
राधा हरन सकल बाधा बृषभान भूप कैं आई॥
पूरब पून्य प्रगट भयो जग में महिमा बेदन गाई।
जसुमति के ब्रजभूषन प्रगटे कीरति कन्या जाई॥
तन छाया ज्यौं संग रहत निति पय में ज्यौं स्वेताई।
भूमि गंध जल में सीतलता यों राधामाधव माई॥
ज्यौं नभ सबद एक दोऊ मिलि सूरज चन्द्र प्रकास।
लोक बेद गाये एकै दोउ सुनि हिय बढ़्यौ हुलास॥
जो बैभव घर लोक लोकपति देख्यौ सुन्यौ जु कान।
श्री-सोभा अरु रूपसंपदा कुंवरि कृपा बृषभान॥
सची उरबसी रति-रंभा तिय जे गुन रूप निधान।
भई सुभगता प्रिया कृपा तन्यौ तिहुँपुर सुजस बितान॥
जिनकें बहुत दिनन की मन मैं सुनि गुनि बढ़ि रही चाह।
आये भान भवन दरसन हित सुर नर हरष उछाह॥
नारद सनकादिक नाचत तन संकर सुधिहि भुलानैं।
ध्यान न आवत जोगीजन मन सो प्रगटी बरसानैं॥

राधा आनँद मूरति हरि आनँदनिधि आनँद दायक।
आगम बेद पुरानन भाष्यौ सकल भये सब बायक॥
प्रेममगन नाचत नारी-नर दही दूध झर लायो।
बदत न एक एक कौं कोऊ भयो सबन मन भायो॥
किये अजाचक जाचकजन सब भानराय बड़ दानी।
गयौ मान गरि गर्व जु मन को सुरपति सो अभिमानी॥
कीरति की कीरति छाई जग को त्रिभुवन सम तोलैं।
कृपा मनावत तिनको सुर नर मोलि लिये बिनमोलैं॥
गोपी गोप बृद्ध बालक पुनि जेऊब बधाई आये।
मनिमाला पाटम्बर सबकौं भानराय पहिराये॥
देत असीस चले पुरजन सब चिरजीवौ कुँवरि किसोरी।
गोबिंदसरन औसर सोभा सुख कहा बरनौं मति थोरी॥

राग ताल

( २३५ )

भान भवन बाजैं रंग बधाई।
प्रगटी हैं कुँवरि लड़ैती राधा सब सुख साधा बेदन गाई॥टेक॥
यह रस प्रगट कियौ रसिकन हित दूरि करी जग की जड़ताई।
मिटि गई बिरह बेदना जिय की सुनि हरषे मन कुँवर कन्हाई॥
सनकादिक नारद नाचत करि दरस कुँवरि मन आस पुराई।
गोबिंदसरन फूले रसिक सु तन-मन ब्रजजन घर घर बात लुटाई॥

राग कामोद कल्यान, बिलावल ताल

( २३६ )

वृषभान-भवन आज सोहिलौ मिलि गावत सुघर सहेली।
उलही ललित तमाल-लाल हित अद्भुत कंचन बेली॥टेक॥
करिहैं बिहार दृगन सुख दैहैं दिन दिन केलि नवेली।
बिप्रन दीनें रुकम रतन रथ बसु सरिता भू रेली॥
रमा उमा रति सची उरबसी सब छबि पाँयन पेली।
गोबिंदसरन न्यारी बिधि रचना ते मोहन मोहनि अलबेली॥

राग ताल

( २३७ )

आजु बधाई नँद समध्यानैं ।
हरषित हिये उमगानैं ॥टेक॥
नन्दराय बरसानैं आये ।
भान मिलन में मन सचु पाये ॥
हेम रतन हीरा मनि मोती ।
वारत लली निरख मुख जोती ॥
मिलि समधिनि दोउ कीरति जसुधा ।
कहैं पवित्र आजु सब बसुधा ॥
रंक इन्द्र कौं गनत अहीरा ।
कनक बसन दायक सुख सीरा ॥
भान नन्द मिलिकैं सुख बरस्यौ ।
गोबिंदसरन तिहि हिय सुख सरस्यौ॥

राग मारू परज ताल

( २३८ )

प्रगटो सहिबनो श्रीराधा साडी भाग लता फल फलियाँवौ ॥टेक॥
सुनि गोपी प्रेमानँद ओपी मंगल गावत चलियाँवौ ।
धुज पताक घर घर फहरावत बहत दूध दधि गलियाँवौ ॥
कुनी दुनी के आय गाय जस लेत बधाई भलियाँवौ ।
गोबिंदसरन वृजजन सुरजन के अमित बिघन दल-मलियाँवौ ॥

राग खम्माच ताल

( २३९ )

रावल बजत बधाई गावैं मंगल नारी ।
उज्जल नभ अष्टमी भान घर प्रगट भई हैं सुकुमारी ॥टेक॥
फूले मुनि सुर मुदित भूमिसुर भयो बंछित अज त्रिपुरारी ।
गावत गुनगन सेष सारदा नारद दरस भिखारी ॥
अष्ट सिद्धि मिलि द्वार बुहारत नौनिध रचै सथिया री ।
सुरनर भेट करन लिये आवत लोकपाल गृह द्वारी ॥

अजिर बेद धुनि करत बिप्रगन साखा बिधि बिस्तारी।
दधिकांदौ पुनि लग्यौ दान झर गोबिंदसरन बलिहारी ॥

राग रागभैरव इकताल

( २४० )

भानभवन द्वार रंग बाजै री मदिलरा।
आवत चहुँघाते भेटि दूधि दधि के गगरा ॥टेक॥
एक हरषि दान लेत एक करत झगरा।
लली बदन निरखि नन्द घर लुटायो सगरा ॥
धन्य कूख कीरति की प्रफुलित भये नगरा।
उमगी ब्रज सिगरी भीर मिलत नाहि दगरा ॥
चलहु कुँवरि दरस कीजे कबधौं ह्वै पगरा।
सूखा-दुख दाहे उदै आनँद के बदरा ॥
चली हैं गोपी प्रेम उमगि भूषन बिन कजरा।
पायन के नूपुर किये हाथन के गजरा ॥
नाचत सब प्रेम उमगि सुख समूह बगरा।
गोबिंदसरन यह सुख जग सब सुख तें अगरा ॥

राग कालिंगरी ताल

( २४१ )

रावल रँगीली भानघर बधाई बाजै।
प्रगट भई साहिबनी गावति सुरपति समाजैं ॥टेक॥
चलहु सवासनि बिलंब करत क्यौं मंगल सब साजैं।
कीरति जू की कूख सिरानी सुफल सु ब्रज काजैं ॥
आये गोकुल तें प्रमुदित सब सुधि भई ब्रजराजैं।
नाचति ललो बदन लखि जसुमति गनत कोऽब्र लाजैं ॥
अति उदार मन भानराय नृप गुनी जन निवाजैं।
गोबिंदसरन स्वामिनी स्वामी दोउ पलना में राजैं ॥

राग बिलावल ताल चम्पक

( २४२ )

हेली आज सुभ दिन सुभ घरी बलि छठी पूजन कीजियें।
आनँदनिधि ब्रजचन्द उदै सुख नैन कुमुदिनी दीजियें ॥

पहरि पट भूषन सवासिनि बरन बरन सु राजहीं।
अनुराग रंजित स्याम कैं मिलि सकल मंगल साजहीं॥
गावत सु मंगल गीत धुनि छयौ राग रँग गोकुल गली।
भेरी निसान मृदंग बाजनि स्रवन अति लागत भली॥
पाटला जसुमति सु जननी मुखरा कीरति सुभ जनी।
सुखद भान भूपाल जननी बरैसी ब्रजपति भनी॥
मिली मुखरा पाटला अति प्रेम हिय उमग्यौ परै।
जसुमति सु कीरति मिलन सुख कवि पै सु कैसैं कहि परै॥
कहति जसुमति जोरि कर इहि गेह तुम पावन कयौं।
धनि धन्य दिन इह आज कौ अति मोदमय मंगल भयौं॥
छूछक सु नाना सुमुख ल्यायौ धन बसन बहु भाँति के।
जरकसी पट कनक टोडर मुक्त उज्जल कांति के॥
दिये कीरति बांटि सबहिन जाहि जैसौ चाहिये।
लेत देत असीस जीवौ सुत सु सुख अवगाहिये॥
रमा सम अरु उमा सम रति सची सम फूली फिरैं।
नन्द गोकुल गोपिका मन हरषि सब टहलनि करैं॥
भये बिस्मै देवता ब्रजराज सम्पति कौं लखैं।
अपार धन जाचकनि दीनौं तदपि निघटत नहिं अखैं॥
देव दुंदुभि बजात नीकी मुदित पहुपनि बरषहीं।
गीत गावत सुरबधू सुनि संत द्विज कुल हरषहीं॥
भान नन्द सु मिलनि मन कौ हरख को कवि कहि सकै।
तिनकी सुता सुत बिमल जस निति उमापति नाहिन सकै॥
फूले फले सब बन औ उपबन कुंज बृन्दाबन गली।
गोबिंदसरन गहबर अनन्दित पुजी मन की रँगरली॥

राग सूहो बिलावल,ताल चंपक

( २४३ )

आज बधावो री सजनी रावलि जाइये॥टेक॥
कुंवरि कीरति कैं भई सखि मुदित मंगल गाइये।

आस विधना करी पूरन निरखि नैन सिराइये ॥
चौक गज मोतिन रचे नव रतन मय सुन्दर सजे।
वितान मुक्ता दाम अति सुति निरख कैं गृहगन लजे ॥
पहरि पट भूषन अलंकृत छठी पूजन विधि करी ।
रस रीति प्रीति प्रतीति सौं कर जोरिकैं पाइन परी ॥
बगर बगर आनन्द उमग्यौ गीत मंगल गावहीं।
ढोल आनक भेरि महुवरि डफ मृदंग बजावहीं ॥
उदै भोग सुहाग रावलि सजन दुरजन हँसि मिले।
बिनहिं रबि कैं उदै सजनी देखि पंकज बन खिले ॥
चहुँधा तैं आवत गोप हेरी देत मुद मंगल भरे।
प्रिया जनम उछाह उमगे सबहि मन कारिज सरे ॥
आये बधाये नन्द जसु आनन्द मन कौ को गनै।
संग स्याम सुजान पलना पीत झँगुली रस सनै ॥
लिये भान बधाइ सनमुख जाइ मन हरषित भये।
मिलि परसपर सुख झिले भये काज मन चीते नये ॥
नानी सु मुखरा संग नाना इन्दुसैन महाबली।
ल्याए छूछक लली कौ लै बाँटि दीनौं बिधि भली ॥
पट नील झँगुली हेम हँसुली बरा कनक सु निरमये।
लली कौं पहिराइ पीरे बसन कीरति कौं दये ॥
समधी जु समधिनि मिलनि मन की रली कापें कहि बनै।
कहै सेस महेस तिनको भाग्य महिमा को गनै ॥
आए चतुरमुख पंचमुख षटमुख सुजन कौतुक छयो।
भये विसमय देखि देखि जु एक गजमुख लखि नयो ॥
आये सु च्यारि कुमार बीना पानि गावत जस लली।
नृत्य संकर करत ताण्डव निरखि छबि रावल भली ॥
देव दुन्दुभि बजत पुहुप सु वृष्टि होत नई नई।
तिहुँ लोक में आनन्द छयो अहो सूल मन की सब गई॥

सबकौ कियो सनमान भान सुजान पद सीसहि धरैं ।
करत बिनती जोरि कर मो सजन कुल पावन करे ॥
किये जाचक सब अजाचक भान नृपति उदारधी ।
गोबिंदसरन रति लली पद दीजै सु मोकौं गुननिधी ॥

## सरद-उत्सव

राग काफी ताल

( २४४ )

नृत्तत रासमण्डल बाँहांजोरी ।
नैन दुरनि भुज मुरनि सुहाई किये रति मदन वारनें कोरी ॥टेक॥
ग्रीव लटक कुन्डल कल मृदु पद पटकनि नहिं छबि थोरी ।
गोबिंदसरन लहचरि तृन तोरत चिरजीवौ स्याम-राधिका जोरी॥

राग अडानौ ताल

( २४५ )

आज दोउ राजत रंग भरे ।
नृतत रासमण्डल भुज भीरैं प्रेम की डरनि डरे ॥टेक॥
गावत कल कोकिल कंठन मिलि मरगजे हार बार बिथुरे।
रंगावति दम्पति सुख निरखत पलक बसन बिसरे ॥
बर मुहचंग मृदंग बीन गति बजवत सखिजन सुर मधुरे।
गोबिंदसरन सोभा सम्पति लखि दृग टारे न टरे ॥

राग जैजैवंती

( २४६ )

नवल मण्डल किये, दोउ अंस बाहु दिये,
नवल नागरी नागर नाचत मगन मन ।
नवल कालिन्दी तट, नव सोहैं बंसीबट,
नवल कँवल फूले भ्रमत भँवर गन ॥
नवल सरद सोहैं, नवल पुलिन मोहैं,
नवल ही चन्दा राजै, फूल्यौ नव वृन्दाबन ॥
नवल मुरली घोर, नव बोलैं हंस मोर,
गावैं नव सखीगन, जिनकैं जुगल पन ॥

नव नव केलि करैं, नव प्रेम अंक भरैं,
गोबिंदसरन बलि, दंपति जीवन धन ॥

राग सारंग ताल

( २४७ )

रासमण्डल रच्यौ रसिक हरि राधिका,
नचत दोउ सुघर बर गति सुढंगे ॥
उदित उडराज बन सरद पूरन निसा,
मुदित मन माधवी हिय उमंगे ॥टेक॥
पटक मृदु पदन की मटक भृकुटीन चख,
उघट मुख सुघट थुंग थुंगे ॥
मुकुट की लटक अरु चटक पटपीत की,
होत लखि रति मदन मान भंगे ॥
रुनित नूपुर चरन कुनित कटि किंकिनी,
फिरत मंडल जुगल अर्ध अंगे ॥
थकित नभ चन्द उडगन थकित सुरबधू,
नाद बस बिवस अनुराग रंगे ॥
प्रेम--रसमगन-बपु सुधि न भूषन-बसन,
परसपर ललन तन मन प्रसंगे ॥
स्रमित जिय जानि गोबिंदसरन भामिनी,
दामिनी सो लई निज उछंगे ॥

राग माङ परज

( २४८ )

सखी ऐसो रूप न देख्यौ सुन्यौ नैन ।
रुचिर प्रभा सोहैं अँग अँग दुति कबहूँ मन सुरझै न ॥
गौर-स्याम तन सरस लुनाई फूल झरत से बैन ।
सोभित रासमण्डल सखिगन मधि रास रच्यौ अधरैन॥
जगमगात जामिनी जुन्हैया बिछ्यौ मनौ पै फैन ।
लटकि लटकि गति लेत लाड़ले देत सबन चित चैन ॥

जुगलचंद भई सखी चकोरी बिसरी पलकन गैन
गोबिंदसरन बलि या सोभा पर निरखि मथत मन मैन॥

राग

( २४६ )

कैसे नीके रास रसिक दोउ गावत।
लाग दाट संगीत मधुर धुनि देह-दसा बिसरावत
तत किटि थो तत किटि थो थुं थुं भेद संगीत दिखावत।
धु धु धुमां धिक तक धिक तकथो सखी मृदंग बजावत॥
उरप तिरप गति लेत सुलप अति हितु जन हियो सिरावत।
गोबिंदसरन बलि बलि बानिक पर सुख बारिद बरषावत॥

राग अडानो

( २५० )

निर्तत नवल नँदनन्दन कुंवरि राधे,
थेई थेई थेई मुख उघट सप्तसुर।
धिधि ना धिधि ना धुम किट धि धि किट,
मृदंग बजावत सखी सुघर बर॥टेक॥
राका निसि ससि प्रफुल्लित भली,
मण्डल सोभित मूल कलपतर।
भइ छबि भीर तीर जमुना कें,
नाद बिबस बिपरीत सु थिर चर॥
मृदु पद पटकनि ग्रीव सु लटकनि,
दृगन चटक मन काहू के न रहे कर।
चांदनी बदनचन्द चहूँ ओरि फैलि रही,
जग-मग रही री विपुन धर॥
कंचन तन मर्कत मनि जोरी बनी,
उपमा रति औ मदन हू न सरवर।
गोबिंद सुखसागर में सखी जन,
नैन मीन तिरत रहत निति भूर भाग भूपर॥

राग केदारो ताल मूल

( २५१ )

सरद निकाई हो राका रच्यौ राधामाधव रास।
जमुना पुलिन नलिन बन प्रफुलित मुख जुग चन्द प्रकास ॥टेक॥
लेत भेद संगीत मीत मिलि थेई थेई सुख बरषावैं।
बोलनि हँसनि बंक चितवनि में सबके हिये सिरावैं॥
कटि किंकिनि कंकन नूपुर मिलि मुरली मधुर बजाई।
तैसिय मृदंग चंग मुहँचंग जु वीन सरस धुनि छाई॥
लखि सुरबधु वारत मनि मुक्ता अभरन देह गेह पति भूली।
यहि सुख मानत तुच्छ सुरग सुख गोविंदसरन अनुकूली॥

राग कल्यान ताल

( २५२ )

श्रीराधिका छबि सखी आज जात न गनी।
रास में रसिक हरि संग राजत रुचिर,
हेम मनि संग मनु खचित मरकत मनी॥
सीस सीमंत नग जटित बेनी सुभग,
वदन विधु अमी हित मनहु सोभित पुनी।
सरस तन नीलपट हिये हारावली,
स्रवन ताटंक जुग निरखि रीझे धनी॥
मंद मृदु हँसनि में दमक दसनावली,
धनुष भृकुटी जु सर सरस लोचन अनी।
बेध पिय मन मृगहि सुभट संग्राम रस,
अवधि गुन रूप रति मदन प्रीवा धुनी॥
सप्त सुर भेद मिलि लेत सांगीत गति,
तत्त थेई थेई उघट रहि न कोकिल मनी।
गतिव नई नई नचनि लसनि कुस कटि लचनि,
कला कोविद कुंवरि निपुन दामिनि भनी॥
अंग छबि पुंज लखि लुंज भये रति मदन,
चरन कमला कलित रसिक बर रस सनी।

बलि बलि गोबिंदसरन मानिनि मन मान हरन,
सर्वोपरि राजत जस बिसद कीरति जनी ॥

राग बिहागरो इकताल

( २५३ )

रास में रसिक आली रंगभीनें सांवर-गौर ।
तन मन एक प्रान प्रानन के परम रसिक सिरमौर ॥टेक॥
वारिधि रूप भूप बन बिलसत इक रस इक छत राज ।
सदा निरंकुस एक प्रेम बस नित्त नवल सुख साज ॥
निरतत रास मण्डल गावत कल चपल चखन के कोनें ।
खंजन मीन मृग जु बल कोनें ऐसे भये न होनें ॥
देखत बनै कहत नहिं आवै रसना लहै न नैन ।
गोबिंदसरन गूंगे के गुड़ ज्यों नाहिं दृगन के बैन ॥

## सांझी--उत्सव

राग

( २५४ )

बन आयौ नहि सखी सांवरो बिन देखें जिय अकुलाय ।
बन बेलिन ढूंढ़त फिरौं सखि तू कहुँ मोहि बताय ॥
बन रंग रंग कुसुम लिये भवू नहिं स्याम रंग दरसाय ।
गोबिंदसरन मनभावतें आये उर भयो मन सुरझाय ॥

राग ताल

( २५५ )

कुंवरि वृषभान को सोहै, समबैस सहचरि संग ।
पिकबचनी चंपकबरनी, छबि लाजत मनसिज घरनी ॥
सांझी हित फूल नवीने, बीनत पट ओली कोनें ।
सोहै सरस कंसूभी सारी, उर अंगिया सुन्दर दुति भारी ॥
लँहगा लावन रूप चुचातौ, पानिप अँग-अंगन न समातौ ।
सब जमुना पुलिन अनुकूली, जहाँ कुंद केतकी फूली ॥
रँग रँग के फूल भरि डलियाँ, खिलि मदन बाग की कलियाँ ।
गावैं गीत मीत अनुरागी, सुनि कोकिला बधू सीखन लागी ॥

बन खगमृग सुनि रँगभीनों, प्रीतम स्रवनन सुख दीनों।
साँझी भली विधि (सों) पूजो, गोबिंद मन चाह न दूजो॥
मो कह्यौ महेसनि कीजै, मदन के अभिलाख पुरीजै।

राग गौरी ताल

( २५६ )

सांझी पूजें सब सुकुंवारी, सरद सरस रतवारी ॥टेक॥
श्रीराधा रूप दूसरो धारचौ, ताको नाम संझावलि पारचौ।
भई व्रज प्रगट सँझावलि देवी, सूंघै फूल औ खात जलेवी॥
जो साँझी के गावै गीत, ताहि मिलै मन मोहन मीत।
आप आपनी पूजा कीनी, ज्यौं गिरि तन धरि हरि पूजा लीनी॥
बिन कुंवरि कृपा यह रहस को पावै।
गोबिंदसरन जिय समझि सु गावै॥

## दिवारी उत्सव

राग विहागरो इकताल

( २५७ )

आज सखि मंगल दिवस दिवारी।
रतन सिंहासन बनि ठनि बैठे रूप सींव पिय प्यारी ॥टेक॥
मनि दीपनि की पंगति चहूँघां सुघर अली निज करन सांवारी।
मनौं नक्षत्र मंडल मधि राजत जुगल चन्द की सोभा न्यारी॥
कोउ हितु गावत गुनगन दंपति निरखि-निरखि मनु मुदित महारी।
कोउ नृत्तत संगीत भेद गति कोउ अलाप रचना री॥
बाँटि देत इक पान मिठाई नेग वारि जैसी थिति वारी।
देत लेत अति रसहि बढ़ावत सो सुख बैन न जात कहा रो॥
खेलत चौपरि चौंप दुहुँन चित कर पंकज जनु उगलत सारी।
गोबिंदसरन पिय हारि लजित मन अंकमाल भरि लीने प्यारी॥

## गोवर्धन उत्सव

राग

( २५८ )

हरि सौं टेरि कहत ब्रजवासी।
महा मेघ मघवा के पायक नेंक न देत उसासी॥

तुम बिन कौन नन्द सुत समरथ मेटन कौ दुखरासी ।
गोबिंदसरन गिरधर कर राख्यौ मघवा गयौ बिसासी॥

## दानलीला उत्सव

राग ल लत ताल

( २५९ )

ललन तुम दानी नये भये जानैं ।
हम दधि दान सुन्यौ नहिं अबलौं नई भई महरानैं ॥टेक॥
बनिठनि डाढ़े कर लकुटी लै मनौं कहूँ के रानैं ।
गोबिंदसरन जिय की हौं जानत क्यौं न रहौ जू छानैं॥

राग

( २६० )

हमारौ दधि दान दै री महरेटी ।
बहुत दिना तुम इत ह्वै आई गई सहज ही भयो सहेटी ॥टेक॥
अब हौंहूँ दिन दिन की लैहौं बड़े गोप की बेटी ।
थोरे कहे अब अधिक जानिबौ तुम बलि लाज लपेटी ॥
तुम पै सौंज सकल दामिनी की अँग अँग रतन लपेटी ।
गोबिंदसरन अब नाट न करियै आज पहिल तुम भेंटी ॥

राग ताल

( २६१ )

लखौ री मन मोहन छैल ।
सीस लटपटी पगिया बाँधे भरचौ जोबन के फैल ॥टेक॥
दानी ह्वै ठाढ़ौ नवरंगी रोकि मही कौ गैल ।
गोबिंदसरन कुलकान रहै क्यौं नित बृजवीथनि सैल ॥

राग ताल

( २६२ )

बड़कुल नवल बधूटी हो ग्वालनि (ने) लूटी ॥
सुनि भटु न्याव नहीं इहिं नगरी, बतियां करत अनूठी हो ।
कौन पुन्य चंचल सुत जायो दैया कहा दई घूटी हो ।।

चकसौली अरु मानपुरा बिच पायन परि परि छूटी हो ।
गोबिंदसरन मोहन हि बुलावौ जो बोलत हौं झूठी हो ॥

राग रेखती ताल

( २६३ )

सुनि ढीठ गुमानी, तू कब की दधि दानी ।
चोरी दधि पुष्ट भये हौ, अजु बृज छैल नये हौ ॥
आँखि उघारत हो न लला, दुख पैहैं जो काहू को जैहैं छला ।
लखौ बृजराज को जायो री, मैया किहि ढंग लगायो री ॥
चलौ जब छाँह निहारै री, रीझि पुनि पाग सँवारै री ।
अपनें मन काहे न राखौ मनी, हम दैहैं नहीं दधि एक कनी
हम सब लाज लपेटी री, बड़े कुल गोप की बेटी री ।
लख्यौ यह निलज ढिटौना री, ऐसो कोउ भयो न होना री ॥
कहा केसरि लौंग सुपारी भरी, ताको माँगत दान गोबिंद हरी ।

राग ताल

( २६४ )

ब्रजराज दुलारे हो, मन मोहन प्यारे हो ।
ब्रज रूप उजारे हो, भये नये घटबारे हो ॥
कबकौं यह देस भयो तुमकौं, तुम दानी भये रोकौ हम कौं ।
सदा निबहै सो बात करो, जु लला अब नैक दई तें डरो ॥
गूजरि सब गर्व गुमान भरी, ब्रज है हमरो नहि बात बुरी ।
दान लेहुँ अहो हठ काहे करी, जिन आगे दिये ब्रिन पेड धरी॥
सुधि लेहुँ सबेरीऽब गोधन की,हम दैहैं नहीं दधि की कनकी ।
लँगराई किये कछू है न लला,दुख पैहैं जो काहू को जैहैं छला।।
मेरी ओर ही नाट जु मेटियें जू, घटबारन ते न खखेटिये जू ।
हँसि नैननि में समझाय कह्यौ, दुहुँ ओर सु गोबिंद रंग रह्यौ॥

——

# विविध

( छप्पै )

( १ )

सर्प पिवत नित पवन सोउ दुरबल बपु नाहीं।
बन के गज बृज खात मस्त पीवर तन आहीं।
कंद मूल करि असन मुनी यों काल निबाहैं।
जल थल जगमें जीव सहज ही सुख अवगाहैं।
जो इहि मिलै विरंचि-पदा, त्रिपति न पावै अधम मन।
गोबिंदसरन कहै नरन कै इक संतोष जु परम-धन॥

( २ )

गंगा औरहु नदी नीर मिलै सागर पहियाँ।
गर्व न मन कछु धरै रतन बहु भरे जा महियाँ।
मेढ़क गोपद नीर आय अति ही गरबानौ।
बैठ्यो आसन मारि मनहु तिहूँ पुर कौरानौ।
एक बकौहू जगत में, यहै रसना लागी जु रट।
लघु विद्या जु गुन पाहि यों, गोबिंदसरन फूलें अभट॥

( ३ )

कोउ कहै अमृत सिन्धु मध्य कोउ विधुहि बतावै।
वधु अधरनि कोउ कहत कोउ अहिधाम जतावै।
सिन्धु ऊार क्यों हुए इन्दु क्यों छीनक लागनि।
पति पत्नी क्यो मरे अही मुख विष जु क्यो वमनि।
रात दिवस पंडित बदत-हरिनाम रहति जिहि मुख-सदन।
निस्चय करि गोविन्दसरन सुधा बसत हरिजन-बदन॥

( ४ )

नहीं बड़े कुल जन्म नहीं सौभाग्य हमारे।
बानीहू नहि मूल बुद्धिबल कछु न बिचारे।

आकृति गुन कर हीन दीन वन ही मधि ओका।
बिन कारन जदुनाथ कृपा जानत सब लोका।
किपुरुष कै जननि हनूमान भाषै गरज।
अचरज सदगुन एक नहिं,मोहि कियौ सखा लछमन अग्रज॥

( ५ )

अथवा सुर हरि भज्यो असुर कुल हू अधिकारी।
नर नारायन भजौ अमर हू भज नर नारी।
सर्व भाव गोविन्दसरन जनकृत भल जानै।
औगुन गिनै न रंच रंच गुन मेक प्रमानै।
ब्रह्म नराकृत राम कै वर्न भेद नहिं कोय।
अबध सकल जीवनभरी सुरपुर पठई सोय॥

( ६ )

गंगा पाप जु हरै ताप रजनी हय टारै।
सुरतरु कलपना हरे दरदी न मनी निहारै।
अमृत अमर जु करै हरै अहि मनि विष-धारी।
औषधि रोग जु हरै चित्त चिंता मनि-हारी।
ए आराध सब जगत में एक एक गुन का करै।
सन्त द्रवै जा दीन पै गोविन्दसरन सब सुख करै॥

( ७ )

धन कौ भ्रम मन जानि मही तल खोदि निहारचौ।
भस्म करी गिरि-धातु अर्थ वित काठ विगारचौ।
सरिता कौ पति सिंधू सोउ दुस्तर हचौ मोई।
सेए बहु नर देव कमी राखी नहिं कोई।
मंत्र साधि साधन थक्यो हाथ जोरि यों कहत तोहि।
मिली न कौड़ी एक अब हे तृष्ना तू त्यागि मोहि॥

कवित्त

( ८ )

गुरुदेव कृपाबल पसु हुतौ नर भयौ,
गुरु देव कृपा (बल) सुभ असुभ दरसायौ है।

गुरु की कृपा ते सब निज--रूप पर रूप,
जान्यौ भगवत सद् गुरु ही बतायौ है॥
गुरु की कृपा ते सब रिद्धि अरु सिद्धि पाई,
गुरु ही की कृपा जग आय सिर नायो है।
ऐसो वस्तु कौन जाते गुरु सुप्रसन्न कीजै,
गोविन्दसरन यह सोच जिय छायो है॥

( ९ )

पूरब जन्म किधौं द्विज कुल जन्म ही में,
साध्यो निज धर्म परम कृपा को उतंग है।
किधौं जन्म कोटि पाये जोग की जुगति साधी,
अनल आराधि जीत्यो प्रबल अढंग है॥
किधौं नेमजप कीन्हे वेद पाठ कीने किधौं,
जीव दया पाल लियों गोतौ श्री गंग है।
किधौं तप सिद्धि किधौं जप को भयौ है फल,
गोविन्दसरन जासौं पायो सतसंग है॥

( १० )

घर को धनी तो ग्राम पति की विभौ कूं चाहै,
ग्राम पति कहै देसपति बात मोटी है।
देस को धनी तौ मण्डल पति की श्रीकौं चाहै,
सप्त दीप राज तन ममता अहोटी है॥
चक्रवर्ती हू कहाय इन्द्र पद भोग चाहै,
ब्रह्म पद चाहै पुनि बुद्धि तौ न लौटी है।
गोविन्दसरन तृष्ना तरल निगोड़ी एक,
प्रभु के सरन बिनु सबै बान खोटी है॥

( ११ )

राजै पिकबैनी मृगनैनी छबि रैनी बोरी,
लचकत छीन कटि सोभा भर भार है।

बैंगनियाँ सारी पै किनारी जरतारी भारी,
देख कै सुमार भयौ अति सुकमार है ॥
मानौ रूप सागर में सरस सिवार लसै,
ज्यौं चन्द लपटाने पन्नग कुमार है।
किधौं मकतूल स्याम मरकत के तार किधौं,
ठाडी फुलवारी माँहि सुखवत बार है ॥

( १२ )

आनन की ओप अति गैनन बसीकरन,
नैन अनिआरे विवि खंजन चय चारे है।
ललित स्रवन जुग (माँहि) करन फूल सोहै,
मोहै मन मोहनकौ अति सुकुमार है ॥
बाजूबंद मोतिन में पहुँची रुचिर कर,
मोतिन के हार गुन रूप को आगार है।
सारी स्वेत सारी तापै राजत किनारी प्यारी,
पौर पर ठाडी सुखवत निज बार है ॥

( १३ )

ककरेजी सारी तन सोहत उज्यारी नीकी,
लागी है किनारी बज देखि जरितार है।
भृकुटि नचानि अति मीठी बतरानि सुनि,
माधा की चटानि अजि रूप ही कौ भार है ॥
लटकन मोती ज्योति चहुँ ओर रही फैल,
पद्म से नैन चलें सैनन की मार है।
कुमरि किसोरी गोरी थोरी वय भोरी प्यारी,
ठाडी फुलवारी मांझ सुखवत बार है ॥

( १४ )

सरस पलास-फूल कुसुमन—मोद-वन,
ललित द्रुमनि लगि चढ़ी बन बेलि री।

ठौर ठौर सर तहाँ अमल कमल खिले,
नूत मंजरी पै करत मधुकर केलि री॥
कोकिला की कलरव सुनकै जगैगी काम,
आपुही मानौगी मानि बचन सहेलिरी।
गोबिन्दसरन प्यारी उठि चलि मोहन पै,
ऐसौ है बसंत कल कंठ भुज मेलि री॥

( १५ )

नृत्यत सुघंग दोउ राधिका-रमन संग,
रंग बरसावै कल गावैं मृदु तान री।
तत्त थेई-थेई करें गति लेत मति हरें,
भरें हाव भाव चाव एक ही समान री॥
ग्रीव की लटक औ चटक पट नील पीत,
उमगि उमगि अंग अंग लपटान री।
बार बार कहैं बिबि रीझि रीझि अंग भरे,
गोबिन्दसरन की बिकान ही की बानि री॥

( १६ )

जमुन सुकर कूल सरिस संवारि राख्यो,
मनो चन्द्र चूरि रज मृदुल सुहावनौ।
मालती मधुर गंध मन भए भौंर भ्रमैं,
सेवति सुबास बिबि केलि सरसावनौ॥
तैसोई मयंक कला पूरन प्रगट भयौ,
बन छवि छाय मन मदन जगावनौ।
गोबिन्दसरन रास रसिक बजाइ बेनु,
ऐसौ बृन्दाबिपिन लख्यौ है मनभावनौ॥

( १७ )

कनक लता सी गोरी एक डार की सी तोरी,
भूषन बसन अंग सोहै बरसत है।

छवि सिन्धु मीन किधौं चंचल-कल-खंजन से,
अनियारे नैन मैन मनै सरसत है ॥
रंभा मैनका सी बारूँ पटतर दीजे काही,
नीकी देववधुन सबै पग परसत है।
हेम--थार अंबभार रूप-गुन मंजरी सी,
आइ हुलसाय लै बसंत बरसत है ॥

( १८ )

लछिमी लुनाई चन्द-वदन अधर--सुधा,
मृदु-बानी कामधेनु सम सुखदानी है।
चाप भौंह रंभा हरष कंबु--कंठ विष परत,
कुच कुम्भ बारुनी सो मादिक भरानी है ॥
धनवन्तरि पानी अस्व मनोरथ रागमनि,
सुर हू अर्चन जगहि लै बखानी है।
रूपसिन्धु प्यारी तन चौदह रतन भन्यो,
याही ते विहारी भयो अति अभिमानी है ॥

( १९ )

बोले मधुमंगल सो दानी मधुबानी कहि,
रोको मग जाय यह जात महरेटी है।
केह बेर दान आगे मारि के हमारो गई,
औचक अचानक ही भागन सो हैटी है ॥
याही बेर सब लेहौं पाछलै को दाव देहौं,
अंग-अंग भरी याके रतन की पेटी है।
कीजिये न गई अब दई ने कराइ भेंट,
गोबिंदसरन आज पहले ही भेटी है ॥

( २० )

ऐसो चाल चलौ जो सबही कौं भलौ लगौ,
एढ़ीटेढ़ी बात यह औरन सौं कहिबौ।

रावरे डराये कहो कैसे डरि बैठि रहौं,
ढोटा सदा हम ही कौं याही देस रहिबौ ॥
दधि को न दान सु गुनमंजरी सुन्यो है कान,
तुम नई रीति करौ कौन भांति सहिबौ ।
ऐसो लघु मन किये कबहूँ न पूरी परी,
बड़ौ कोउ दान जाय दानिन सो गहिबौ ॥

( २१ )

जगे बिबि प्रात बलि मोद न समात गात,
आलस बलित अति ललित रसीले हैं ।
झूमत झुकत जमुहात अंगरात दोउ,
सोहैं अंग अंग आभरन पट ढीले हैं ॥
पीक वर छाप लगी ललित कपोलनि सौं,
अंजन अधर दृग राजै अर्द्ध मीले हैं ।
सखी गुनमंजरी लै मुकर मुकर देखि,
प्रतिबिंब अति लखि लजत लजीले हैं ॥

( २२ )

प्रातकाल नन्दलाल बाल उठि बैठे सेज,
सरस रसीली छबि-पुंज न कही परै ।
खुले कल बार अंक हारन उरझि रहे,
मरगजे बसन अब नई दुति को धरै ॥
पीकवर लीक लगी ललित गन्डस्थल,
अधखुले नैन गुनमंजरी हिये हरै ।
रजनी व्यतीत भई रुचि पल-पल नई,
उठिबौ चहत पै न उठिबौ सह्यो परै ॥

( २३ )

जुगल टहल हित सखी रगमगी डोलैं,
कनक-लता सो मनु एक सांचे काढ़ी हैं ।
पानदान पीकदानी बिजन बसन हाथ,
काहु काहु कर चौंर चहुँ ओर ठाढ़ी हैं ॥

गावति विभास गुनमंजरी बजावै बीन,
अति ही नवीन-सुख-सलिता सी बाढ़ी है।
पीवत रूप-माधुरी न अंग की सम्हार काहू,
मानौ विधि चन्द सों चकोरी चाह चाढ़ी है॥

( २४ )

मंगला को भोग सखी मेवा मिस्री आई लैके,
कछु यक रुचि सो अरोगे दोउ प्यारे हैं।
आरती करत गुनमंजरी लै आरती सों,
जय जय राधाधव जू की सब्द उचारे हैं॥
छबिन की भीर भई काहू न संभार रही,
सबैं प्रान वारि जीवैं दृगन के तारे हैं।
सांवल गौर पट नील पीत सोभा देत,
राजैं घनदामिनि ज्यौं रूप उजियारे हैं॥

( २५ )

चले स्नान कुञ्ज अब पग डगमग धरैं, विपिनवर भूमि सब भई रूपमई है।
जिहि द्रुम लता तन चाहत जुगलवर, तेइ तेइ ठौर और रूप भार छई है॥
पलकन के पांवड़े बिछावत सखीजन, देखि गुनमंजरी बिबस तन भई है।
पंछी गहि मौन लखि पलक बसन भूलि, रतिपति की हू अब मति थकि गई है॥

( २६ )

रतन-जटित-चौकी दुति रोकी ग्रहनौ की,
मखमल गादी मृदुल बर छाई है।
देत सुख हेत सखी कंचन की झारी,
जल भरि ल्याई सो सुगंध सरसाई है॥
तापैं बैठे प्यारे मिलि बदन पखारि लीनैं,
स्वच्छ हाथ सौंधो पोंछि प्रभा की निकाई है।
गौर-सांवल अंग ओपी मनि सोहै जैसे,
सखीजन जरे हरि हीये ही धराई है॥

( २७ )

प्रथम फुलेल लै लगायौ मृदु-अङ्गन सों,
पुनि उबटाय छबि छाये मन भाये हैं।
सरस सुगंध जुत जल लै न्हवाये प्यारे,
अंग-अंग अंगुछाये पटचारु पहराये हैं॥
पादुका पदमपाँय आनि कर आगे धरी,
लटपटी गति लखि लोचन लुभाये हैं।
निगम अगम सोइ भाषय सुभग जग,
भागनि भरानि चारु चौकी पधराये हैं॥

( दोहा )

श्रीगुरु श्रीगोबिन्द कृत, हृत संसय अघ-सूल।
श्रीहरि गुरु-पद सुमिरि के, लिखौं महा सुख मूल॥
देही बिन ज्यौं देह यों, धाम क्षेत्र बिनसंत।
ताते नित प्रति पाठ कर, धाम क्षेत्र निजतंत॥

श्रीगुरु निम्बादित्य प्रनाम, करि धरि उर में स्यामा-स्याम।
धामक्षेत्र चौपाई-बन्ध, बर्नन करैं देवगोविन्द॥
इनको अर्थ अपमित भाई, इहाँ लिखत मैं ग्रंथ बनाई।
ताते ग्रंथ हृदय ते जानौ, नाममात्र हम करैं बखानौ॥
निम्बादित-पद्धति की रीति, सुमिरौं समता करि नित प्रीति।
मथुरापुरी जान भ्रमसाला, पुरीद्वारिका धाम बिसाला॥
क्षेत्र गोकुली परम सुहायौ, सुखबिलास बृन्दाबन गायौ।
गोबर्धन परिक्रमा सुनिलै, श्रीगोपाल-मंत्र--नृप गुनिलै॥
इष्ट-रुक्मिनी जुगल जानिलै, सामवेद ततसार मानिलै।
श्रीवृन्दादेवी सुख करनी, साखा अनँत अनँत दुखहरनी॥
अच्युत-गोत्र नासिका--द्वार, श्रीहरि-मन्दिर तिलक लिलार।
पूजा बंसीबट श्रीजमुना, सेवा पुलिन धूरि मन--रमना॥
गरुड़ देवता अति उदार जू, श्रीपति सनकादिक अचार जू।
पाटसना समीप सहचरी भाव, मलयाचल पुनि पाट निहारी॥

मुक्ति समीप सहचरी भाव, प्रेम-भक्ति मन अधिक उछाव।
अष्टकाल नित ध्यान महासुभ,हरि-गुरु भजन जानि तिनके उभ ॥
हरि गुरु नाम अहार जु कहियै,व्रत सुभ पाँच साँच करि लहियै।
श्रीगुरु निम्बादित्य प्रनाम, सुमिरन तिनके स्यामा-स्याम ॥
अनन्नि सरन भ्रम जुगल उपास,सुक्ल बरन मल त्रिगुन बिनास ।
नित्य पारसद बास इकंत, परमहंस संहित सु ग्रन्थ ॥
द्वैताद्वैत महा सुभ बाद, श्रीहरिव्यास सुर महाप्रसाद।
पंच काल पुनि पंच उपाय, पंच अर्थ जानौ चित लाय ॥
पंच अस्त्र धार पुनि पांच, संस्कार जिनके ए साँच।
पंचम बर्न प्रगट छिति नित्य, नाम भागवत निम्बादित्य ॥
श्रीगुरु-बानी पाठ जु तिनकें, मंत्रारथ बिचार है जिनकें।
ऐसे चालीसौ पर पाँच, निम्बादित्य हृदय में साँच ॥
सो हम लै चौपाइ बनाइ, जो गुरु मुख ते जानौ भाइ।
धाम क्षेत्र की बात सुहाई, श्रीमुख निम्बादित प्रभु गाई ॥
मेरे दास सही वह जानौ, धामक्षेत्र नित करत बखानौ।
धामक्षेत्र बिन साधू ऐसौ, देही बिना देह है जैसो ॥
धामछेत्र कौ अर्थ है भारी, गुरु ग्रन्थन ते लेहु बिचारी।
धामछेत्र माला सुभ नाम, चौपाई षोड़स अति अभिराम ॥
श्रीनिम्बादित तंतम गाई, श्रीगोबिंदसरन उर बसे सदाई।

# सरन--प्रताप

बंदौं (श्री) गुरु हरि संतजन, बंदौं दासनदास ।
माँगौं इनकी रज--चरन, देहु बृन्दाबन बास ॥

( १ )

हो जी हो बृन्दाबन चन्द प्यारे, सुनियो अरज एक दीन की ।
करियो तो कीजिये पसु पंछी तरु लता रज तो बृन्दाबन की ॥
डारो तो डारियो घोर सघोर जमुना तीर बंसीबट आसपास पुलिनकी।
राखो तो राखियो सरन सुधारन आनँद गुरुहरि संतजनन की ॥

( २ )

देओ तो दीजियो कथा स्रवन भागवत,
भक्ति टहल गुरु संतजन प्रभु ही चरन की ।
मेटो तो मेटियो सुख दुख तिहुँ ताप,
और त्रसना सब जगत की ॥
तोरो तो तोरियो माया मोह,
भ्रम जाल पासी कुटुम्ब की ।
जारो तो जारियो लोभ मोह,
क्रोध काम मद मतसरता मन की ॥

( ३ )

सुनो तो सुनियो भूल रह्यौ,
बिस मांहि नांव नहीं लीयो जाये,
औगुन की खान लगार नहीं गुन की,
धारो तो धारियो नांहि देख याको ;
कियौ बिरद संभार लियो राखियो ;
प्रतिग्या बांह गह्या की ।
उबारो तो उबारियो पसु सम दीन,
जान सरन श्रीगोबिंदसरन की ॥

सरनायौ सबही कहैं, नहीं भूली यह बान।
काम क्रोध मद लोभ है, अजहुं नाहिन परी पिछान ॥१॥
बंदन हरि गुर ही करूं, रहूँ मैं सीस नवाई।
कपटाई हिय की हरौ, ज्यौं मन सुध ह्वै जाइ ॥२॥
(श्री) निंबादित निम्ब भान है,होय रह्यो सुप्रकास।
श्रीभट लाल हरिव्यास है,हिय-तिमिर मिटायो तास ॥३॥
प्रगट भये परसराम जु, दिये मेटि जिय ताप।
हरिबंस नरायन देव जु, येहि भयो सरन प्रताप ॥४॥
वृन्दबेव बानी रसभरी,(निरखे)लीला महल निकुंज।
राधामाधव रंगररी, पाये आनन्द (रूपि ही) पुंज ॥५॥
श्रीगोबिंददेव सुखरास हो, सीत चरन की छांह।
सरन लिये बहु तर गये, जाकी पकरी बांह ॥६॥
गोबिंदसरन उदारता, कही कौन पै जाय।
नाना जीव उधारता, जग रह्यो सुजस ही छाय ॥७॥
श्री सरबेस्वर सरन है, कृपा कटाछि कराय।
मेटि संदेह दुख हरत है श्री भागवत कहत सुनाय ॥८॥
(श्री)गोबिंद गोबिंदसरन ही,हरिभक्त संत अरु दास।
इनमें अैसो चित्त रहे, ज्युं फूलन में बास ॥९॥

गुरु हरि सो लुकतो फिरचौ, जब कारज कैसे होय।
मैं विषयन बिष सों भर्यौ ऐसो जनम दियो है खोय ॥
जनम दियो है खोय नाहिन अरथ लगायो।
निस दिन डूब्यो जंजाल, मन हरि नांव न सुहायो ॥
जाहि लेत न लागै मोल, गाँठ तें प्रंथन सुलायो।
भूल्यो भरि अभिमान मोह सो रह्यो लपटायो ॥
फिर न बनयो ही दाय औसर जाय बितायो ॥
अरथ नांव ही लेत अजामेल तुरत छुड़ायो।
ओरू रह्यौं अचेत चेत्यौ नहीं ऐसी ही साख सुनायो॥

लयो पुत्रक हेत सु नत ही,
अपनो कर अपनायो ।
येही उर मन में आनें,
नेंक हरि ओर लगायो ॥
पर्‌यौ सरन ही जाये,
श्रीगोबिंद चरन गहायो ॥१०॥

ग्रह धंधा स्युं प्रीति करि राखहि कुल की रीत ।
हरि सें मैं नांहि डरी, सबही जान्ने मीत ॥
सब ही जाने मीति, रीत नाहिंन बात बिचारो ।
करी अन्याव अनीत काम,क्रोध निंद्या नहीं टारी॥
ग्रह भरयो है दुख सो ही मैं सुखकर जानी ।
निसदिन सुनी भागवत साख सो मैं नांहिन मानी ॥
भीर पर्‌यां भई जान अब नहीं आव नेरो ।
अब नीक देखि बिचार हिरदे में हिये हेरो ॥
येही समझि चित धार हरि गुर संत ही जानी ।
पारस परस्या होये गये कंचन लोह यहां टानी ॥
द्रढ़ बिस्वास गहाये होय नैंच येही धारी ।
सरन रहे सुख पाये गोबिंद जनम सुधारो ॥११॥

ग्रह को सुख सब दुख है दुख जाने ह्वै सुख ।
जै सुख नै सुख जाने है, धूर परेगी तोही मुख ॥
धुर परैं तोही मुख, जब ही जम आन घिरावै ।
तेरे हैं बहो मीत देखैं कौन छुड़ावै ॥
जाके भर्‌यो गुमान सोवु पकरैं नैंन पाव ।
परतछ दीखत जाये अैसें ही जनम गुमाव ॥
कहा परी गई बांनि कुं नेंक संग लुभाव ।
सब ही गई अब बीत चेत अजहुं नहीं आव ॥
फिरत रह्यो बहो बार जाकी सुध न रहाव ।
पाई मानुष देह क्युं गुर हरि संत बिसराव ॥

भलो बन्यो है दाव मूरख तू मूल गुमावै ।
श्रीगोबिंद चरन हिये वर रज होये रहाव ॥
ऐसैं लेह अपनाये डूबता नाव गहाव ॥१२॥

संसारी स्वारथ भर्यो, नाहिंन छूटत संग ।
याके संग में ही पर्यो,लग्यो नहीं हरि रंग ॥
लग्यो नहीं हरि रंग कुसंग को संग सुहायो ।
मात पिता सुत बंधु सुसरारि ही देखि फुलायो ॥
कियो नहीं सतसंग मृग जल आसहि ध्यायो ।
जाने सब ही से नै कटु बक संग रचायो ॥
देखत भूल्यो पास मोह तें जाये बंधायो ।
भीर पर्यां नहीं देखि स्वारथ बहुत सिरायो ॥
भला कह्यो परिवारै हरष ही जनम गुमायो ।
याही भयो कोई नाहिं तै तेरी आंख दिखायो ॥
कब तो चित कुं तोरि काहे कुं जात बुहायो ।
मूढ़ हुवो ही जाये देख ऐसो तन पायो ॥
सुर तरसत यही बात भरत खंड बहुत सुहायो ।
सूझत अंध ही होये तासुं कहा बसायो ॥
छाड़ो यासुं हेतु जा संग बहो दुख पायो ।
भूल्यो गोबिंदसरन जाको चेरो हो बरजायो ॥१३॥

( सवैया )

श्रीगोबिंदसरन महाराज दीन उधारन बद तिहारो ।
लयो आने अवतार येही जीवनि निसतारो ॥
मोही जनम सुधारन काज बांनि मधुकर की धारो ।
भवसागर तें काढ़ि दुष्टता याकी जारो ॥
असी कटाछि कराई मत्सरता मन की मारो ।
इनके अकरम गुमाये चरन की सरन दै उबारो ॥
तुम ही भानु प्रकास तिमिर भव मेटिनहारो ।

मो तुच्छ ऐसो जान अधम सो तुम ही उधारो ॥
बहो जनम जनम की पांन इहां अब लयो उधारो ।
अबतो सरन परी हूँ आन अबकी ही बेर सुधारो ॥१४॥

गोबिंदसरन दयाल अधम उधारन बिरद तिहारो ।
ऐसे नवका सिंधु मांहि करत हो पार उतारो ॥
बहो लये दीन अपनाये मेरी ही ओर निहारो ।
अधम भरे अनेक उबारन काज लयो अवतारो ॥
यह सठ हो हठदार सुनत ही बन भयो उजियारो ।
ऐसो खग तुव हाथ तिमर हिरदे के टारो ॥
काम क्रोध मद लोभ ऐसे इनके अरि मारो ।
यो मन मद मत जोर होये रह्यो है मद मतवारो ॥
बहो भटक्यो भटकाये अब अंकुस इनके सिर धारो ।
सुनियो अरज रज जानि अबकी मेरी ही सुधारो ॥१५॥

मैं हूँ ऐसो जीव दीन दयाल मेरी दयाली राईयो ।
गृह कूप भव मांहि परिकें गरक रहाईयो ॥
अहि रूपी दुखद नैया सेतु में हि छुड़ाईयो ।
यानें सूझत नांहि ऐसे ही संग बुहाईयो ॥
बुधि रहि भ्रम भूलि हिरदे तिमिर छवाईयो ।
नेत्र न भये सुख वान रस रसना कटु अमृत जनाईयो॥
श्रवन सुनत बिष बात हसत हरि टहल भुलाईयो ।
या इन जरी जंजीर यहि मन बहोत बंधाईयो ॥
ऐसें भई हूँ अपंग छित तो इनकी लुभाईयो ।
काम क्रोध मद लोभ मोह अकरम सुहाईयो ॥
याकी यही परी कुबान कह्या न कछु बनि आईयो ।
पाव सैं ही भरि जान सीस पर बहोत धराईयो ॥
ऐसे मांहि परि जान तुम मेरी सुधि मति बिसराईयो ॥१६॥

मो सो तो अधम या जग मैं कोई नांहि है ॥
पतितन में राजा बड़ो जासें सिरजोरे भयो,

नयो हुवो जान येही छकन छकाई है।
छाड़ि कें अम्रत पान परी है येही कुवान,
लग्यो बहो मीठो आनि बिष रस ही पीवाई है ।
करी है दरस निसदिवस पर्यो है परबसः
यही मंदभागी भवसागर में डुबाई है।
रह्यो चाहे निकट पास जग सें होये उदास,
भयो है अकरमो बहो करमन सें बंधाई है।
तलफत रहे जिये फल येही जान किये
करत है बिचार हिये आस जीवन मरन न छुटाई है।
जनम की उधारी खान परी रही येही बांन,
अब तो सरन गही है आन हाहा करूँ मेरी बांह पकराई है॥१७॥

सरनों तो सुहायो मोहि गोबिंदसरन को।
तासुं मिटे त्रय ताप येही प्रताप जाने,
चन्दन सो सीतल दुखहरन सुखकरन को ॥
कीरा की भंवर ध्याये करत है आप सो,
पलटि कें रंगरूप सुभाव ही जात को।
पर्यो हो कीच में ही संग बसो नीच होवे,
साधु ऐसो कियो संग दै गुलाब को ॥
करकें कटाछि मेरी ओर नीकें हि निहार,
देखि अधम भर्यो हो लेखि जान यामें।
यूंही अधम बह्यो राना भयो पतितन को,
केते ही अपनाइ लिये केत और अपनावोगे ॥
देत हो नाहिन टारी येही मन मांही विचारो,
मैं तो भयो चेरो तेरो जनम जनम को ॥१८॥
प्यारो लागे सरन मोहि गोबिंदसरन को॥
जैसें रंक धन प्यारो कियो चाहे नांहि न्यारो,
निस दिन पचत रहे खबर नही आठु जाम को।

जैसें प्यारी बाल मात जानत नाहिं और बात।
चीत मैं बढ़ी है चाह येक दुगध पान की॥
चकोर ही चन्दा प्यारो चुगत है जरत अंगारो,
घर रह्यो येही टेक एक वाहि के दरस की।
मूरख तो मद प्यारो भयो अभिमान भारो,
बढ़यो है प्रबल जस बही जात देखो सीलता सावन की॥
मेरे मन येही जान सरन परीहै आन,
सचेत है बहोर भारी,जास्यूं होत रही खबारी।
अब तो सरन मोही याहि के चरन की॥१८॥

सरन तो उजागर देखी एक गोबिंदसरन की।
डूब रह्यो भवसागर मांहि निकार लेत पकरि,
बांह छाप देत सिर हरिव्यास की।
बिरद तो उजागर तिहुँलोक में प्रकट जान,
ग्रीषम के दुख मेटि सुख देति असि लहर है समुन्दर की।
यासें मेरी हो सुधरावेंगे दीन जांनि अपनावौगे॥
पसु सम जिय जान चित में दया आनदेत सोभा सतसंगकी।
छमा कर मेरे अवगुन गुन कुबुधि कूं निकार देवेंगे सुबुधि ऐसें हो,
लगाये लेत जैसें भूले गल की॥२०॥

गोबिंदसरन बिन अैसी सहाय कौन करे मेरी॥
जान कें पतित दीन सरना को बिचार कीनें।
ऐसी इन बान लही जाकी कही जाये नहीं॥
भयो है कुबुधि ऐसो सों बिगार जैसो।
परि गई येही पिछान मद सें न सूझ आन॥
याकी तो भई है अैसी कही जाये अब कैसी।
पियो है हलाहल पान होये कें निसंक नांहि संक मान॥
आवत है येही बिचारो होयेगो फजीता चारो।
डर कें लई सरन गहे नवका चरन॥
पकर बांस अपनाव याहि भवसानर में नांहि बहाहो॥२१॥

ं तो महाराज अब सरन परी चरन गह्यां की आप को,
सरम है एसें रह्यो ग्रह मांहि मकरी ही जाल बांधि,
निकसिबेकुं राह नांहि पचके पगाई वामें ही रहाई है।
ऐसो हो सुभाव याको विधि कहिकें सुनत राग रंग,
परि गयो फंद मृग जाये कें मराई है।।

करत है कहत सोई जासें सरम सब खोई,
जगत के संग लग्यो मन मृकट ज्युं नचाई है।
अपनो हूही बुरो करें औरन कूं दोस देत,
गह लीनी यहि टेक याकी ऐसें बनि आई है।।

छूहै नांहि यासों हेत फिर पर आये सेत,
एक अवगुन कह्यो नांहि जाय, कैसी करूं महाराज,
पाव सें लगाय लैकें सीस ते भराई है।
ऐसो जीव येहि जान अरज करत है सोई मानें,
सरन परयां की प्रभु आप ही को सरम है।।२२।।

भारी तो भरोसो मोहि बृन्दाबन चन्द प्यारी लाड़िली गोबिंद को।

अनाथन के नाथ जान गिरधारी सिर धारे,
गैल के बतावन हारे ऐसे संत जनन को।
भखत हूं आल जाल नांव नहीं लियो जावे,
परि गई यहि बानि रसना चुपकारी को।।
सरन तो गही है ऐसी मकरी ही तार जैसी,
वासों छूटे ठौर नांहि जौंजें कलाबत वारेको।
गज गीध गनिका तारे अजामिल सो,
उबारे बिरद ऐसे लये भारे, अब कहा भूलो
देखि मोसे अभिमानी को।।
याहिसें सिरजोर जानें पतितन में सिरमौर,
मानें जासेंही बिसारे आप ऐसे सुन अधमको।
करत हैं बड़ाई जन सुनिकें प्रतित मन, जासें

आर्य लई सरन, करो क्युं न,
निरवारो प्यारे मोसे गुलाम कौ ॥२३॥

होजी हो वृन्दावन चन्द लाड़िली मेरी,
अरज नीके होये चित दे सुनाइयो।
मोसे जीव गिनती नांहि भूले भवसागर में,
बुहाये गरीब निवाज कहाये अब,
आनाकानी दिया न सिराइये,
पर्‌यो हुं ग्रस्यो इहां जैसें गज घेरचो ग्राह,
होय रह्यो परबस या मांही जैसें,
पसु दाम सें बन्धाइयो।
आपसे कहूँ कैसें तलफत रहूँ ऐसें,
पर्‌यो पींजर जैसें नयो पंछी सोचत अकुलाइयो॥
ऐसा मैं श्रीजी लयो अपनाये,
मेरो ओर नीकें ही निहार तुम,
सिर दये पधराये मेरो जनम सुधराइयो।
बात तो कहत ऐसो कही जाय नांहि जैसी,
तोर्‌यो कैसें जाय अब यासों ऐसो कहा,
भयो निकट प्रभु सों तुम सें कछु छांनो,
नांहि ए रे दिलजान मेरे दिलकी जनाइयो॥
पतित तो अनेक तारे तासुं सुजस बढ़यो,
भारे राधिकानाथ गिरधारी ऐसो बिरद,
दै करुना निधान कहैं संतन बिरदाइयो।
मेरी करनी ऐसी नांही बीनती करत ही,
लजाये कहुं अबतो परी हुं सरन,
तुमारो तो प्रीत रीत है येही,
पनि मो मे चूक जनाइयो ॥२४॥

हो जी हो वृन्दावनचन्द प्यारी,चित निठुराई धारी,
ये तो मन गाढ़ो, काहे को कराइयो।

मैं तो मंद भागन बँधि रहि जगत जाल जैसे,
मूरख पसु बाल ऐसी मूढ़ता निहारि कुल,
जुग की प्रीति रीत इकानी तुम मति जाइयो॥
प्रभु होउ उजागर नागर सुख के सागर,
याकी कुटिलता निवार दुख समुद्र सें उबार,
बिरद जान प्रतग्या राखि ऐसें अपनाइयो।
लगिरहि त्रिय ताप होत रह्यो बहो बहो संताप,
घर सें लग्यो है मोह जासें भयो ये तो द्रोह,
छूटत न दोन्यु और मैनें मूढ़ता न गुमाइयो॥
परि रह्यो बिष मांहि, त्रसना बढ़ी है आये,
फूटि गई चारूं, कैसें ही निहारूं,
कहा कहूँ महाराज आवत सचाई नांहि,
जान तो अजान स्थे भुलाइयो।
चूक तो परी है भारी, जासु भई है खवारी,
सारी पै गहे चरन नौका जासें सुख पाइयो॥२५॥

होजी हो गोपाल लाल प्यारी राधे,संतन सुख दैन अमाधे,
जैसो बिरद है ऐसो ही रखाइयो।
बहोत ही उधार दीनें ऊंच नीच नांहिन कीनें,
पहले हो बिरद ऐसे, भूल गये भये कैसे,
अब महराज कलजुगहि जनाइयो॥
इनके करम क्रीट भारी, ताहि देखि के बिसारी,
पराधीन बरचो बेकजि ऐसी तो करिये नहीं महाराज,
अपनायेत करि प्रभु आपही अपनाइयो।
फूल्यो हुं बड़ाई पाये, भूल रह्यो भ्रम मांए,
लगे हैं आन पांच, सहत है याकी आंच,
रज की तो करियो सहाई,भवसागर सें उबराइयो॥
त्रसना की तरंग ऐसें, समुद्र की लहर जैसें,
जाकी गीनति आवें नांहि,दिन दिन बढ़त है सवाहि,

नैक नहीं घटाहि, ऐसा मैं चितवो तनक,
मेरी ओर ज्युं जाइ न बुहाइयो।
भयो हुं तिहारो आये, गोबिंदसरन अपनाये,
पकरलीरावो बांहि, जगत की कहानी,
काहे कुं कहाये, अबतो प्यारे सरन ही रखाइयो ॥२६॥

हो जी हो गोपाल लाल प्यारी लड़ैती राधे,
ऐसो है भरोसो मोहि, जैसो ही करोगे।
बन्यो है दाव ऐसो इहां फिर परूंगो जाय कहो कहा,
ऐसो औसर चूको जाय, बार बार नहीं आये,
काल के जाल से उबार, चित सरन ही धरोगे॥
तुमसे ही कृपाल जान, भयो हूँ कंगाल आन,
मानुष जनम दियो निबाज, राखियो दियाकी लाज,
रज जान गृह की ताप प्रभु आप ही हरोगे।
निरबल लपंग होय अबतो कहायो तेरो,
कहा इन सुं ही टरोगे॥
अब महाराज आप गोबिंदसरन को सरन
परे जान, लगे हैं चरन से सरन आन,
ऐसी ही कटाछि कराये तनक,
चित मेरी ओर ढरोगे ॥२७॥

हो जी हो वृन्दावन चन्द प्यारी संतन सिर धारी,
भवसागर से उबारो, ऐसी गाढ़ी मोहे काहे कूं बंधाइ है।
मैं तो जानूं प्रभु तोर फंद, मेट दुख द्वंद,
यही जिय की न जानी अटपटी आनी नीके जकराइ है॥
गर डारी मोह माल, जासें भयो यही हाल, हाथन की,
ओर लेख, पगल की जंजीर देख, बहो पछिताई है।
नासिका श्रवन नैंन, रसना और अरु संग मैन,
ऐसे ही बुहाये देत,आवो प्यारे,ऐसी तुम कहा सुहाई है॥

बिरतो दयाल कहाये दीन जिये आन गहाये,
निभाइयो यही टेक अब निरदई हु बानें सराई है।
प्रीत तो लगाये लेह जान ते अजान रहे,
चितवत नांहि याकीओर ऐसीही कठोरता काहैतें लीराई है॥
नेह की न पहचान जान यासें नांहि बस आन,
सोचतहुं येही कलुकी बान नहीं देखो कैसो हीपराई है।
बेर बेर कहत हुं जात बही मैं तो मंद भागनि,
यही लायक श्रवन मुदाये तुम याही तें रहाई है ॥२८॥

हो जी हो बृन्दाबन रानी ठकुरानी,मेरी अरज सुनत हो नेक हां।
मोही हरामी जान कें तुम भूल गये हो कहा ॥
दिये रज बार लगी नहीं तुमकूं आन दिये फिर फहा।
काम क्रोध मद लोभहि यांहै भरयौ अथहा ॥
ऐसा में डूबो परी पनि अब तो जात बहा।
नांहि मिट ही या तन मन की त्रसना बहुत बढ़हा॥
देखूं सोच बिचार के फिर कब हुं छुटहा।
करम पसाई दियो या मांही जैसें गज ही गहा ॥
कौन सुनें कासुं कहूं मेरे मनकी बिथहा।
बही सुख दुख लयो है या मे पै आयो नांहि यहा ॥
ऐसें ही मरजी रावरी ज्युं राखो ज्युं ही रहा।
अब करुना करियो व्रजमोहन तुम बिन और नहा॥
अपनायो प्यारी लाड़िली श्रीगुरु बांह गहा।
सुख कारन भटकत मैं डोलु जासें बही दुखहा ॥
कपटाई छूटत नही अजहु निंदा करत रहा।
यासें करो जीती जितनी ही थोरी यही पसुतहा ॥
परयो मूढ़ ऐसें ही यामें जैसे देह में छहा।
तुम्हें बिसराये फ़ल यही पायो भुगत रह्यो अदहा ॥
अब सुध क्युं न लेत हो मेरी तुम यही बिरद लहा ॥२९॥

मद से कछु सूझे नहीं ग्रह जाल बंधना।
गोबिंदसरन ऐसी गही सीतल छांह चरना॥
हरि गुरु लैहैं पिछान के राधे कृष्न (ही) रटना।
भूले जिय कुबानता ऐसी ही प्रीत लगना॥
सास्त्र और पुरान संत मानही गुरु मुख कहना।
नेंच होय सुन कान ही डर मन मरना॥
बुरा कहो कोई लाख ही लजाये में यही धरना।
तू होय रह ज्यों खास ही कहना कछु न बिगारना॥
तू निसंक होय गुन गाय लै कह सुनके बक रहना।
याही बान सु बान है बृन्दाबनचन्द सिर धरना॥
याकी ओर लग्यो रहै ज्यों रस में जल मीहूंना।
सांची लगन लग्यो वह झूठी सब बिसरना॥
दुख सुख होय सो भुगत लै भूल मति हरि रसना।
छांड़ उर अभिमान ही तो तू यासें उबरना॥
नागरबेली पान ज्यों सँभारो छिन पलना।
ऐसें जान रह जब रंग होय बहो रंगना॥
सांस बड़ा उही जान लै कहत नाम नहीं टैरना।
कहै सोई अब तू मान लै घर घर काहे कूं फिरना॥
नांहि नांहि करतो रहे निरधम हू बादना।
निस दिन ऐसे ही रहे यही ताप तन जरना॥
बेर बेर कहत हूं तोकूं क्यों नहिं समुझना।
यही आसरो पकर लै जासे बहु सुख लैना ॥३०॥

गोबिंदसरन मेरी अरज सुन लीजियो चितलाय।
मैं निरबल होय (आन) कैं चरन परी हूँ आय॥
उरझी मायाजाल में झूठो मन अटकाय।
हांसी यही हाल ही चौरासी भटकाय॥
बहो चूक सें भर रही करियो मेरी सहाय।
भवसागर सें उबारो अब सांची सरन लो आय॥

मैं तो आंधो होय रही चहुं दिस लागी लाय।
तुमारी कृपा सें उबरूं मैं जरचा लेहु हो सिराय॥
जनम बीतो जाय है देत हूं मूल गमाय।
याको स्वारथ राखती अजहूं चेत्यौ नांय॥
और खबर न परत है सिर पर सेत धराय।
तोहि सुध नांहि भई जम घेरा देत फिराय॥
झूठो सुख सांचो लग्यो यही मन मान लियाय।
काल न आवत सुझही ऐसो करनी चाल चलाय॥
ऐसी गाफिल मैं रहूं हरिनाम देत बिसराय।
ऐसे ही सब कहत हैं भजन बिना गति नांय॥
भजन करचो सब तिर गये नदी अपार बुहाय।
तिनें तिरिबो कठिन हैं गरक रही ग्रह मांय॥
तू डूबै निरधार ही बहो बकवाद लगाय।
यासें उबरबो कठिन है जम कर डर जमाय॥
राधामाधव नाम कूं निसदिन लै मन मांय।
नाम बिन सब दुखी हैं अब तो लै हेत लगाय॥
नाहिन पल बिसारी ये तो जनम जनम सुख पाय।
सेस से हंस भन रटत हैं तोहि अलसावन आय॥
मूरख ऐसो नाम है भागवत पुरानहि गाय॥३६॥

मैं तो यही जानत हूं गोबिंदसरन लेत बचावें।
भवसागर सें काढ़ि लै रज चरना जान रखावें॥
जब कृपाप्रभु ही करें हरिनाम सुहावें।
यों तो प्रगट निस कहैं जंजाल झखावें॥
मिटै न मन की दुष्टता फिर पीछे पछितावें।
मतसरता मावें नहीं मद भर होय छकावें॥
इहां ऐसो ही साज है याकूं बहुत सरावें।
यह पसु समझै नहीं सब जनम हरावें॥

इहां हलाहल खात है उहां भजन छुटावैं ।
येही मन की मूढ़ता ल्याव ल्युं ही करावैं ॥
खबर परत नहीं आंधरा जनम बिगरौ जावैं ।
करम संसारी नासक हरिनाम लिया की लाज लगावैं ॥
दुरलभ यही संगत मिली औसर बहुरि न पावैं ।
प्यारे कूं बिसर्‌या रहैं घर में अति लाड़ लड़ावैं ॥
जासें हो हित लगा (य)रह्यो हरि चित न आवैं ।
प्रभु से प्यार करावता देखो कह्यो बिगरावैं ॥
सब ही सों मन खेंच लै ज्यों संतोष ही पावैं ।
चरनों से ऐसे लगें मधुकर ज्यों लपटावैं ॥
यही मन में मान लै सीतल सुगंध बसावैं ।
सुत बुंत काकौ करै जनम बीतो जावैं ॥
जमपासी में पर रह्यो जाकी ठीक न ठांवैं ।
कहत कहत ही पच रह्यो तेरे मन क्यु नहीं भावैं॥
निसदिन ऐसे जानियेा अंजली नीर घटावैं ।
जनम जनम दुख त्यौं रहे जो अबके बिसरावैं ॥
यही जनम की सुफलता जब राधे कृष्न रटावैं ॥३२॥

गोविंदसरन से बिनती मेरी करनी ऐसी नांहि ।
देखी नांहि सुधरती मैं सरन परी हुं आहि ॥
तुमको मेरी सरम है गह लीजिये बांहि ।
याकी कियेा न देखियेा दीन जान अपनांहि ॥
मैं भूली ऐसे फिरूं चौरासी मे ांहि ।
भरि रही अभिमान सें हिरदे में ल हि ॥
यहि जनम पाई नांहिन भज्येा वही अप पराहि ।
मन में सांच न आइयेा झूठ जना हि ॥
अब सील देत सो मान लै हरि सों हे हि ।
परारब्ध अपनी जान लै सुख दुख से हि ॥

जो हरि अबकें बिसरैंहै तो नाहिन आन उपाहि।
आनन्द की यही लता जासें नेह लगाहि॥
तो बिगरी सब सुधरैं है जम काख तान खाहि।
बन्यो बानिक यह आनिक अब नर देहि पाहि॥
रंक मिलैं धन आन कैं ऐसें लोभ लुभाहि।
यही जान गाढ़ी कर न्यारो नांहि कराहि॥
नाम लेत ऐसो भयो ज्यौं जल जहाज तीराहि।
परतछ याही दीखहै सबैं बटाउं होय आहि॥
यह ऐसें ही हैं सही जासें प्रीतम क्युं बिसराहि।
ज्यों गज ने कोई नासक जो प्रभु सब मांहि दिखाहि॥
राधेवर गोपाल निश्चय ही जनाहि।
या बिन सबही काल है जासें बहोत डराहि॥
तू निसदिन सोचत रहे घरन घर में बंधाहि।
दीखत आंधी क्युं भई मूरख लेह चरन चित लाहि॥३३॥
गोविन्दसरन चरन नांव है सरन लिया होय पार।
एक रंग चित लग्यो रहे हिरदे धीरज धार॥
श्रीगुरु हरि संतजन तुमारी यही बार।
अपनो उपायो जान कैं करो कैसें संभार॥
यह मंदभागी देख कैं तनक और चित ढार।
रोस रीस दुख ही सह्यो लोभ बड़ाई लिया लार॥
त्रसना अति अघ की रहे जासु फिर २ होत खवार।
ऐसे अकरम लग रह्यो करत है नांहि विचार॥
नाम बिसारयां ही रहे जासो बिच आधार।
जैसें बिरछ पतुवाड़र फिर नहीं लागे डार॥
चित संतोष आवैं नहीं दुख को वार न पार।
अहो रूपी ग्रह में परयो तेरी कैसें होय संवार॥
काहे कूं ऐसेंही पच बिसराम लियो दिन चार।
स्वारथ ऐसें ही लग्यो बोलत झूठ लबार॥

जान बुरो न कीजिये चित राखिये जम मार।
यूं ऐसे कैसें बने मूरख सह्यो सबही सिर भार॥
एक घड़ी मत बिसरे पल-पल लेह चितार।
श्रीभागवत स्रवन सुन रहो चरना चित धार॥
अपना सब ही मानकै रह्यो धंधा में हार।
जनम बीतो जात है झूठे पर्‌यो जंजार॥
जामैं लावन लोच है जिय संदेह (को) टार।
दया धरम उर आन लै निंदा परी निबार॥
नरम होय ऐसो रहे भजे लबारबार।
आनन्द रूपी निधि जान लै यही संसार में सार॥
कबहूं चिंता ना रहे लग्या लगन बढ़वार।
अब मैंने यही मान लिया सें आनन्द अपार॥३४॥

गुरु हरि संतन बिन आस रज में घालत है रोल।
गोबिंद सरन गहि रह गांठि कुमति की खोल॥
अब वह जिय चिंता रल्यो कर आये जब कोल।
जान सरबेस्वर बोले बैसे बोल॥
माया संग में लगी रहे होय गयो अभोल।
कठिन बनी है आय कहोसी अति ही डोल॥
चौरासी भटकत रहे जासी मोल कुमोल।
सब ही बिस जावता तूं कहा रसी होय टोल॥
भई खबारी बहुत ही परैं सिर पर अति धोल।
मूढ़ हुवो मन ही रहे कह्यो सुन्यो पीयो घोल॥
आन आस कर-कर थक्यो राखी याही पोल।
मात पिता परवारहि यह स्वारथ अपन गोल॥
तेरो चित यासें लग्यो कर रह्यो टगठोल।
यह मन नाहिन मानैं ही दियो इम्रत कर ढोल॥
अब स्वारथ अपनो करो, छांड़ो मन की भोल।
ऐसी हिये में लै धरो पायो जनम अमोल॥

यासें राधेकृस्न भज कह्या न लागे मोल ।
निसदिन लौ लागी रहे दुनो बंधसी तोल ॥
जो चरना अट्क्यो रहे मन नांहि परै झकझोल ।
ऐसो चित कब होयगो रंग्यो मजीठ्या चोल ॥
जब प्यारो अपनावही मन बोली राव बोल ॥३५॥
मेरे सब लछिन कहे गुरु हरि संत सुनाये ।
यही औगुन से भर रही तासुं सरन आन पराई॥
अब इनसुं ही बचाय लेओ अपनो बिरद धराये ।
कृपा होय जब आपकी औगुन गुन ह्वै जाई ॥
गोविंदसरन ऐसी भई पसु ते मीनष कराये ।
तू अजहुं समझ्यो नहीं तो तेरे पूरब पाप जनाये ॥
ऐसो सरन तोही मिल्यो ज्युं नवका जल मांय ।
अब मत भटके बाबरे मृग जल आसन ध्याये ॥
कह्यो सोई करन कौ और सुनावन कौं नांय ।
बात बनाया न बने होय सो दीस्यां जाये ॥
मन कुटलाई नाग इन्द्र गज बोही जनाये ॥३६॥
गुरु हरि सें फीटो परै तेरो मोल ही उतर जाय ।
जासुं सरन गह होय सरलता ज्यौं जनम सफल होय जाय ॥
बुरी बने सोभाग की अपनो कृत जनाय ।
कथा स्रवन सतसंगहि यही गुरु कृपा मिलाय ॥
जब ही आनन्द होयगो बिमल-बिमल जस गाय ।
सदा यही सरन रहे मोही जनम-जनम कमाय ॥
यासें बहु आनन्द भयो बिगरी बई सुधराय ।
मैं ऐसी जानी नहीं ये सरन लीरायौ मेरी माय ॥
गुरु लई मोही अपनाय, मात-पिता की नाय ।
मेरो तो मन्द भाग है जाकी कही न जाय ॥
पै गुरु पाय कृपाल ही जिन हरि की ओर लगाय ।
अब यासें बिमुख हुवा कहुं ठौर है नांय ॥३७॥

( इति सरन-प्रताप सम्पूरन )

# प्रशस्ति (२)

( १ )

जहाँ संतन को बिसराम, तहाँ सब मंगल रहत हैं।
होत है पूरन मान, गंगाजल निरमल रहै॥
आसा के बिसराम, गउ-ब्रह्मन प्रतिपाल है।
पुन्य पबित्र जान, जमुना जल (ऐसे) गंभीर है॥

( २ )

चरन ही सुख की सीर।
सरन चित ऐसे रहे जैसे सबछ री नीर॥
ग्यान उजागर सबन ते, अति उजागर बहो जान।
सुख सागर दुख ही हरत, रहो मेरे जीबनि प्रान॥
गुन गंभीर गुन जान है, गुन रहै सब भरि पूरि।
गुन ही की वह खान है मेरी जीवन मूरि॥

( ३ )

परम दयाल कृपाल है, परम भागवत जान।
परम भजन परयन, यह जस सुनत हौं कान॥
तिनके फल कूं सुख सदा, प्रभु रहत निरंतर ध्यान।
तुम बिधना ऐसे रचे, सब बिधि पूरन मान॥

( ४ )

अनेक उपमा लायक, सदा सुभ बायक।
अघ तिमिर नसायक, भक्ति सहायक॥
कुल कमनोय में भानु हो, ऊँचये अचल महा मन मेरे।
निस दिन भजन उर में रहे, तिनते प्रभु हैं नेरे॥

( ५ )

दीनन के दयाल हैं, सरनाई साधार।
असरनिसरन प्रतिपार हैं, जुग में यही आधार॥

सबसे ऊंचो सरन हैं, कथा कीरतन गान।
सब संतन के मुकुट मनि हैं,सब पर तिलक बिराजमान॥

( ६ )

उपमा तिहुँलोक की, सिमट भई इकठौर।
तामैं सरन महाराज की, चित नहीं आवत ओर॥
राजश्री महाराज श्री धीराज, श्रीमहाराज श्रीधीराज श्री !
दंडौत मानियो पतित की, लगी चरनन की ओर।
रज ज्युं जानियो चरन तरी, रहुं यहां नी ही कोर॥

( ७ )

इहां कुसल अरु तुमहु, कुसल धाम सु गाम।
सुनत कुसल मैं में श्रवना, मन बचक आराम॥
घरी घरी ही पल पल मही,छिन छिन निमेष ही मान।
सदा सरबदा आरोग ही, आवत नित रह जिय जान॥

( ८ )

सरीर जल प्रसाद ही कपूर, कसतूरी पान।
बहुत जतन करावहि, यही अरज मेरी मान॥
जतन निसदिन ह्वो करैं, श्रीसरबेस्वर महाराज।
दीन अरज ही चित धरैं, पास ही मंगी सब काज॥

( ९ )

प्रानवल्लभ पिता मात हो, हरि गुरु मोटा हिय जान।
आप घनी बात महाराज हो, आप उप्राइत नहीं कोई आन॥
ऐसें पतित बहोत हैं, जासु निरधन रहाय।
मो जिय दीन ह्वै कैं कहै, तुम बिसरयां जात बुहाय॥

( १० )

मेरे तो निसदिन रहै, यही ध्यान (जै) हिय महाराज।
एक पलक नहीं बिसरै है,तड़पै प्रान माधुरी काज॥
औलु सुरत बहो आवत रहै,अब बस कब है इहां रहाय।
टहल करन मन ही चहै, जिय रहत बहुत अकुलाय॥

( ११ )

इम्रत कथा कब सुनुंगो, इन स्रवनन के मांही ।
तिमिर हिरदे के नसेंगे, चित यही रही चाही ॥
चिरनाम्रत अरु प्रसाद ही, कबहुँ पाऊँ इहां आय ।
प्रनाम करिहौं चरन महो, फिर परदछिना दिराय ॥

( १२ )

स्वस्ति श्रीअति मंगल करन, सुभ बृजराजपुर सुथान ।
जहां तिमर सब ही हरन, प्रगट रहे कुलभान ॥
जगमगाय जग में रही, दीपत दीपन की जोत ।
जहां बिराजें महाराज ही सब मनसा पूरी होत ॥

( १३ )

निसदिन उतसब ही रहे, गावत स्यामा स्याम ।
उहां सब ही आनन्द लहैं, संतजन सारन काम ॥
गंगाजल निरमल करन, गउ ब्रह्म प्रतिपार ।
ऐसी आसा है सरन, लियो आन अवतार ॥

( १४ )

सब ऊँची सें सरन सुहावन, जाके हरि हिरदे रहे भाय ।
कथा रस इम्रत पावन, रसरूपी ज्याझ तिराय ॥
भवसिंधु उतारक, यही जिव निसतारे ।
श्रवन रस इम्रत डारक, औगुन गुन निरवारे ॥

( १५ )

अधम हो उधारन, मूरख लेहो सुधार ।
अपंग हो उबारन, यही रज देहो तार ॥
हिरदे भव तिमर नसावन, पामर गति जिव पाय ।
रसना रस बहो रसायन, प्रेमीजन पाय छकाय ॥

( १६ )

मुख बैन सुनत मुख पावन, सरन गया दुख जाय ।
तन मन बहो ताप नसावन, दरसन करि नैंन सिराय ॥

हिय हरि हेत बढ़ावन, उर की सब बिथा मिटाय।
अघ समुद्र मांहि कढ़ावन,नाना बिधि फंद कटाय॥

( १७ )

यही सरन उपमा सब नित, लायक सुख सारन।
अनेक उपमा अनन्य नित, सरबोपरि रहे हैं बिराज॥
कैसी उपमा दई जाय, सो तिहुँ लोक में नांहि।
यही सरन परचा ही जीजिये,निधि आनन्द रूपी पाहि॥

( साखी )

गरक ग्रह में रही, ऐसी दई यह देह।
कैसें याकी सुध रही, पर्‌यो है गिध सनेह॥१८॥
प्रभु सरन सिर धरी, जैसें जल अरु मीन।
ग्रह जाल में मैं परी, चरन गहे ह्वै दीन॥१९॥
प्रगट दरस कैसें करूँ, बहो बंध रहि ग्रह मांहि।
याके संग निसदिन जरूँ,पै रही हूँ चरन की छांड़ि॥२०॥
दरसन निसदिन ही रहै, हिरदे नैंनन मांझि।
पै जिय ऐसें हो चहै, प्रतक्ष भोर अरु मांझि॥२१॥
भूख प्यास सुध ग्रह की, गई दरसन तें दुरि।
सरन गही मै चरन की, मेरी है जीवनिमूरि॥२२॥
बिछरन अंक बिधि लिख्यो,कैसें सहि रहुं महाराज।
संग जगत के मैं नख्यौ, मेरी परारबध ही काज॥२३॥
मैं चाहूँ दरसन करहो, प्यासे चात्रग त्रषा नीर।
मैं मदभागनि ऐसें रही, मेरी जड़ी है पांव जंजीर॥२४॥
कुनें सुनें कासुं कहुँ, सुमिर सुमिर जिय जाय।
हिरदे नैंनन मांझहुँ, रही (है) माधुरी छाय॥२५॥
नैंन तपत हैं दरस बिन, हिरदो रह्यो अकुलाय।
श्रवन तपत हैं बैंन बिन कहा अति लिखूं बनाय॥२६॥
मो मन चंचल चपल है, बह्यो जात निरधार।
गोबिंदसरन सुध ही लहैं,मैं लगि रही यही अधार॥२७॥

गोविंदसरन सुध ही करो, तनक कटाछि कराय ।
मन मतिमंद जड़ बावरो, गज अंकुस सिर धराय ॥२८॥
पहले लेहु अपनाय ही, अब छांड़त कहा धरो ।
जल हुँक भावै नहीं, बापुरो मीन बिचारो ॥२९॥
जल के जीव अनेक हैं, मीन के यही अधारो ।
जबजल याकूं छोड़ है, प्रान देत निसतारो ॥३०॥
प्राम रहत यही देह में, तो कहुँ रह्यो न जानौं ।
हुवो अनहोनो होन में, याही गति मानौं ॥३१॥

( सोरठ )

परचो वियोग ही आहीं, बिरह बिथा तन मन मांही ।
भरि आवै ढरि जाही, नैंनन अरहट गति लही ॥३२॥
जब बिछरे महाराज, तब सुधि बिसरी देह की ।
प्रान रह्यो किहि काज, बिथा लगी बन ग्रेह की ॥३३॥
ये मन में है मत जोर, जड़ बहरो मंद बाबरो ।
परचो है बिष ग्रह घोर, यामैं ही भरोसो रावरो ॥३४॥
चित दरसन सें लगि रह्यो, कैसें धरे ये धीर ।
कुनैं सुनैं कासौं कहूँ, या तन मन की पीर ॥३५॥
पत्री दे सुधि लिजियो, सुनियो अरज महाराज ।
निठुर न चित्त धराइयो, बाँह गह्या की लांज ॥३६॥

( इति श्री )

# परिशिष्ट

★

आजि दसमी विजै परम मंगल दिवस,
जानि ब्रजपति कुंवर रास महूरत सजे ।
जोति विधि सेस शिव मदन बाढी मनी,
दर्प ताकौ दलन मन कियौ हरि अजे ॥टेक॥
कोटि विधु सन बदन रुचिर अलकावली,
अंग प्रति अंग मनौं मुकर अद्भुत मजे ।
भाल कुमकुम तिलक मौक्ति अछित सुभग,
नवल अंकुरित जव चन्द्रिका डिंग रजे ॥१॥
नील मणि रुचिर तन पीत सोहत बसन,
निरखि अद्भुत छबिहि दामिनी घन लजे ।
रुणित नूपुर चरण कुणित कटि किंकिनी,
सम उच्छाह मनों सरस बाजे बजे ॥२॥
एक रस नित्य आगम निगम रसिक वर,
करत बन केलि पल संग जिनि ना तजे ।
मन मुदित ब्रज बधू गीत गावत हरषि,
श्याम सुखरास इहि आस जिनि जिनि भजे ॥३॥
सरद राका रजनि निकट आई जानि,
मन न मावत हरष रास रस रसिक जे ।
कहत गोविन्दसरन भयो मन भावतो,
भांवते संग सुख साजि सब दुख तजे ॥४॥
आज नीकी जोरी बनी पिय प्यारी, निरखत हरष महारी ।
मन उमहे दोउ रास करन हित निरखि रैन उजियारी ॥
तैसिय शरद प्रफुल्लित मल्ली त्रिविध पवन रुचिकारी ।
गोविन्द शरण चिद्घन वृन्दावन निरखत छवि बलिहारी ॥

बनेरी दोउ रासरसिक वर नीके।
चित चाह हरत सब ही के॥
थेई थेई मुख बोलत रंगभीने वल्लभ हितू जन ही के।
गोविन्दसरन युगचन्द निरखि भये वदन कुमुद सम ती के॥

—

कैसी नीकी सरद जुन्हैया रास रसिक नीके सोहैं।
नितंत मण्डल अंश भुजा गति लटकि लेत मन मोहैं॥
जमुना थकित उडुप नभ मण्डल नहिं जानत हम कोहैं।
गान विवस थिर चर बलि गोविन्द इकटक सुख अवरोहैं॥
नितंत तट तरणि तनइया रूप सींव गुन सदन।
सिखवत प्यारी चूक लेत पिय चहन रिसोंहो बदन॥
पुनि मिलि नृत्य करत प्रीतम छवि बलि कीने रति मदन।
गोविन्दसरन थेई थेई बोलनि मुख फबे रँगीले रदन॥

राग भैरव तथा काफी

श्रीभट जनम लियो भुव मांही।
नवल नवेली हितू सहेली, जग हित आदि गिरा प्रगटांही।
रसिक जनन को रस अँचवायो लीला विविध प्रकाशी।
साधन सिद्धि वस्तु दरसाई तिहि लखि रंग महल ह्वै बासी।
हंस वंश निज सुजस बढ़ायो आप रूप भये हरिव्यास।
दम्पति केलि कुंज सुख गायो गोविन्दसरन की पुजई आस।

राग मारू

गाजि चहूं तें घोष जनन पें आनन्द वरषा छाई हो।
भादौं मास प्रथम पंचमिदिन जनम वधाई आई हो।
श्रीपरशुरामदेव जग प्रगटे मेघ सुखन झर लाये हो।
जहाँ तहाँ दादुर मोर भक्त कवि तन-मन लहि गुन गाये हो।
चारि मास नीझर ज्यों सब दिन भुव जनपर वरषाई हो।
भक्ति-ज्ञान वैराग प्रेमघन पामर लोगनि पाई हो।
बाढ़ी नदी भजन की सुखनिधि निरखि तट ढहे करारे हो।

करुणा लहरि तरङ्ग दया दृग बांछिल भरे ढरारे हो।
हंसमहावंशी दीरघ लघु मीन वसत शरनाई हो।
तिनके गुन औगुन न विचारत राखि लेत अपनाई हो।
श्रीनिम्बादिति किरनि कढी निति वरसत घटा चढ़ाई हो।
ऊपट तट ध्याई वृन्दावन संगति सन्त बढ़ाई हो।
श्री गोविन्ददेव पाई श्री गोविन्द सरन सदाई हो।
धीरज धारि चरण रज सिर परि नाचत कांख पदाई हो।

—×—

मिलि सुजस वधावौं मिलि रंग भीनैं मंगल गावौ।
आज जनम हरिवंश देव दिन गहर निशान बजावौ।
मगसरि वदि सतमी प्रगटे प्रभु दुतिया चन्द समानें।
पलपल बढ़त कांति कोविदता नांहिन जगमें छानें।
खिलत चांदनी भक्ति दिनहि दिन जन चकोर उमगाये।
सन्त कमल फूले मन सरवर हंस वंश हुलसाये।
लीन होत तारामंडल सिष महिमा चिमक चढ़ाई।
तृष्णा लोभ बिछुरि गये चकवी चकवा विरह बढ़ाई।
शुभ्र भये तनमन अकाश घर कीरति उज्ज्वलताई।
अमृत दृष्टि पोषि बन बस जग डहडह रहै महाई।
लहरि लेत सागर पै प्रेमहि अनि जन मछ लुभाये।
तट मराल उलहे भजनी रस भजन सीप सुत पाये।
चौसठि कला सदा परिपूरन चौगुन चन्द बढ़ाई।
षीन कलारु कलंक प्रभावश त्रिगुननि मांझि जमाई।
श्रीगोविन्दसरन शीतलता धारैं धाम रहाहीं।
धीरज धारि प्रकाश हिये मधि असत जनन परिछाई।

## "श्रीसर्वेश्वर" (मासिक-पत्र), श्रीजी का मन्दिर वृन्दावन के विषय में विवरण-

| | |
|---|---|
| १—प्रकाशक स्थान | —वृन्दावन |
| २—प्रकाशन का समय | —अँग्रेजी मास की अन्तिम तिथि (२९-३०) |
| ३—मुद्रक का नाम | —बनवारीलाल शर्मा |
| राष्ट्रीयता | —भारतीय |
| पता | —कृष्णापुरी, मथुरा |
| ४—प्रकाशक का नाम | —श्रीवियोगी विश्वेश्वर |
| राष्ट्रीयता | —भारतीय |
| पता | —श्रीजी का मन्दिर |
| ५—सम्पादक का नाम | —श्रीव्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य पञ्चतीर्थ |
| राष्ट्रीयता | —भारतीय |
| पता | —श्रीजी का मन्दिर, वृन्दावन |
| ६—पत्र के मालिक का नाम | —जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज |

(पत्र का प्रकाशन आदि कार्य सर्वेश्वर-समिति करती है)

मैं वियोगी विश्वेश्वर घोषित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरे ज्ञान और विश्वास के अनुरूप सही है।

१ मार्च १९७०  ह० वियोगी विश्वेश्वर